इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

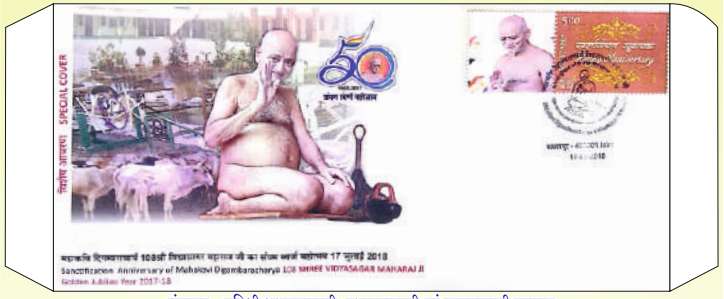

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मई 2022	
16	सोमवार	पूर्णिमा/प्रतिपदा	विशाखा
17	मंगलवार	द्वितीया	अनुराधा
18	बुधवार	तृतीया	ज्येष्ठा-मूल
19	गुरुवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ़
20	शुक्रवार	पंचमी	उत्तराषाढ़
21	शनिवार	षष्ठी	श्रवण
22	रविवार	सप्तमी	धनिष्ठा
23	सोमवार	अष्टमी	शतभिषा
24	मंगलवार	नवमी	पूर्वाभाद्रपद
25	बुधवार	दशमी	उत्तराभाद्रपद
26	गुरुवार	एकादशी	रेवती
27	शुक्रवार	द्वादशी	अश्विनी
28	शनिवार	त्रयोदशी	भरणी
29	रविवार	चतुर्दशी	कृत्तिका दि.रा.
30	सोमवार	अमावस	कृत्तिका
31	मंगलवार	प्रतिपदा	रोहिणी
		जून 2022	
1	बुधवार	द्वितीया	मृगशिरा
2	गुरुवार	तृतीया	आर्द्रा
3	शुक्रवार	चतुर्थी	पुनर्वसु
4	शनिवार	पंचमी	पुष्य
5	रविवार	षष्ठी	आश्लेषा
6	सोमवार	सप्तमी	मघा
7	मंगलवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी
8	बुधवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी
9	गुरुवार	नवमी/दशमी	हस्त
10	शुक्रवार	एकादशी	चित्रा
11	शनिवार	द्वादशी	स्वाती
12	रविवार	त्रयोदशी	विशाखा
13	सोमवार	चतुर्दशी	अनुराधा
14	मंगलवार	पूर्णिमा	ज्येष्ठा
15	बुधवार	प्रतिपदा	मूल

तीर्थंकर कल्याणक

21 मई: भगवान श्रेयांसनाथ जी गर्भ कल्याणक
25 मई: भगवान विमलनाथ जी गर्भ कल्याणक
27 मई: भगवान अनन्तनाथ जी जन्म तप कल्याणक
29 मई: भगवान शांतिनाथ जी जन्म तप मोक्ष कल्याणक
30 मई: भगवान अजितनाथ जी गर्भ कल्याणक
03 जून: भगवान धर्मनाथ जी मोक्ष कल्याणक
11 जून: भगवान सुपार्श्वनाथ जी जन्म तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 मई: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
29 मई: शांतिधारा दिवस
31 मई: रोहिणी व्रत
04 जून: श्रुतपंचमी, जिनवाणी दिवस

सर्वार्थ सिद्धि

16 मई : 13/18 बजे से 29/46 बजे तक ।
20 मई : 25/18 बजे से 29/46 बजे तक ।
21 मई : 05/44 बजे से 23/46 बजे तक ।
24 मई : 22/33 बजे से 29/43 बजे तक ।
26 मई : 05/43 बजे से 27-26/26 बजे तक ।
30 मई : 07/12 बजे से 29/42 बजे तक ।
01 जून : 05/42 बजे से 13/01 बजे तक ।
02 जून : 16/04 बजे से 3-19/05 बजे तक ।
11 जून : 05/41 बजे से 26/05 बजे तक ।
13 जून : 05/41 बजे से 23/24 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: मई: 16,20,25,26,27 जून:1,8,10
मशीनरी प्रारंभ : मई: 26,27 जून: 4,10
वाहन खरीदने: मई: 23,26,27 जून: 1,4,11

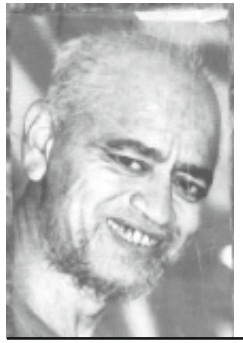

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 278 • मई 2022
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी 08
• जैविक खेती पद्धति में जैनदर्शन का महत्व 13
• दुनिया में शांति लाने का उपाय है आर्जवधर्म 17
• परीषहजयी आचार्य श्री जी तपस्या के आगे सूर्य भी नतमस्तक 20
• भारतीय संस्कृति में जैन नारी की भूमिका एवं योगदान 27
• शरीर और अध्यवसाय आदि भाव जीव के नहीं 40
• **वरिष्ठ नागरिक:** बुजुर्गो की बढ़ती आबादी-घटता सपोर्ट 42
• श्रुत पंचमी यानी ज्ञानामृत पर्व 44
• आचार्य कुंदकुंद की दृष्टि में परमार्थ प्रतिक्रमण 50
• आचार्य श्री एवं संयम स्वर्ण महोत्सव के संदर्भ में 53
• तीर्थंकर महावीर की अहिंसक क्रांति से विश्व में शांति संभव 57
• पैक्रियाज (अग्नाशय) स्वास्थ्य जीवन का राज 57

बाल कहानी

• मंत्र तंत्र का धोखा 62

कविता

• मौन की भाषा में वो न जाने क्या-क्या कह गया 15
• गुरुवर विद्यासागर तुम्हें नमन 18
• जड़ों से जुड़े 21
• सुखाभास 45
• भारत भूमि का भक्त चाहिये 51
• अस्तित्व 60

कहानी

• हीरामणि 46

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 16
चलो देखें यात्रा : 19 • आगम दर्शन :22• माथा पच्ची : 24 • पुराण प्रेरणा : 25 • कैरियर गाइड : 26
दुनिया भर की बातें : 33 • इसे भी जानिये: 38 •दिशा बोध : 39
वरिष्ठ नागरिक : 42 • हमारे गौरव : 52 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✻ आंतरिक सज्जा ✻
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, यूक्रेन और रूस के बीच हो रहे युद्ध में परमाणु हमले के डर से कई देश बचाव की तैयारी में जुट गये हैं तथा रेडिएशन रोधी दवाओं की ब्रिकी बढ़ चुकी है एवं परमाणु रोधी बंकरो का निर्माण माइनस एनर्जी कंपनी रोधी बंकर खरीद लेंगे परन्तु सामान्य लोगों के लिये एक नई समस्या पैदा हो जायेगी तथा वेचारे कमजोर महिला और बच्चे कैसे अपना बचाव कर पायेंगे । रूस के राष्ट्रपति बालिद मीर पुतिन ने परमाणु हमले की धमकी दी है इससे यह लगता है कि बड़े शक्तिशाली देश मानवता को दर किनार करके सिर्फ विस्तार वादी सत्ता सापेक्ष नीतियों को प्राथमिकता दे रहे हैं यह सारे विश्व के लिये गहरी चिंता का विषय बन चुका है यदि संयुक्त राष्ट्र संघ इस युद्ध को नियंत्रित करने में सफल नहीं हो पाया तो विश्व युद्ध का रूप बनने में देर नहीं लगेगी । और यह युद्ध मानवता के लिये मंहगा पड़ेगा।

अंशुल पारासर, लटेरी

• सम्पादक महोदय, विगत माह पांच राज्यों विधान सभा के चुनाव हुये हैं उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर, और गोवा का चुनाव परिणाम जब सामने आये तो एक विश्लेषण सामने आया कि अब कांग्रेस की सारी उम्मीदें समाप्त हो चुकी हैं प्रियंका गांधी वरेड़ा और राहुल गांधी का जादू भी काम नहीं आया दिल्ली जैसे छोटे से प्रदेश से राजनीतिक पारी शुरु करने वाली आम आदमी का पंजाब में प्रदर्शन देखने के बाद राजनैतिक पंडित उसमें कांग्रेस का विकल्प देखने लगे हैं अवसरवाद और परिवारवाद को मतदाता समझ सुका है अब नेताओं के समझने की बारी हैं मुफ्त की बंदर वाट से स्थायी राजनीतिका मनसूबा पूरा नहीं हो सकता है अतः राजनेताओं को यथार्थ के धरातल पर आकर भारत की तासीर समझना चाहिये और जनता के हित में कार्य करना चाहिये।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अप्रेल अंक में दुनिया की सबसे महंगी जमीन शीर्षक से कहानी दृष्टि गोचर हुई कहानी पढ़कर ऐसा लगा कि जैनों का गौरवपूर्ण इतिहास एक बार फिर हमें गर्व से सिर ऊँचा करने का अवसर प्रदान कर रही है बजीर टोडरमल जैन ने विपत्ति के उस काल में सिक्खों का साथ दिया तथा अपनी संपत्ति खर्च किया जिससे हिन्दु समाज संस्कृति के लिये अपमानित होने से बखूबी बचाया गया कहानी इतिहास के उन पलों को याद करा रही है जब भारत के इतिहास को मुगलों ने नेस्त नाबूत करने का प्रयास किया जा रहा था कहानी की कथा वास्तु मर्म स्पर्शी हैं तथा शैली सीधी सपाट होने पाठक को अपनी ओर आकर्षित सहज में कर लेती है।

अंकुर जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, अप्रेल माह के संस्कार सागर के आवरण पृष्ठ को देखकर मन अति प्रसन्न हो गया भगवान महावीर की वाणी में आर्जव धर्म लेख को पढ़ा तो मन यह कह उठा कि राम चरित मानस में तुलसीदास जी ने भी लिखा है-

निरमल जन मन सुई मुई सुहावा
मोही कपट छल छिद्र न भावा

भगवान रामचन्द्र जी कहते हैं मुझे वही मनुष्य पसन्द है जो निर्मल मन का होता है मुझे छल छिद्र और कपट अच्छा नहीं लगता है प्रस्तुत लेख में आर्जव धर्म की अर्थात् मानवीय सरलता की महिमा गाई है मेरी भावना में भी कहा गया है।

बने जहां तक इस जीवन में
सरल सत्य व्यवहार करूँ

इससे ऐसा लगता है भारत की संस्कृति में सरलता का सम्मान किया गया है । भारत के जितने भी भगवान हैं उनको वही पसन्द होता है जो सरल होता है एक कहावत भी प्रसिद्ध है कि भोले का भगवान होता है।

अभिलाषा जैन, भोपाल

भक्ति तरंग
शुद्ध द्रव्य को जानपनों सुखदाता

देखो भाई ! आतमराम विराजे ।। टेक ।।
छहों द्रव्य नव तत्व ज्ञेय हैं, आप सुज्ञायक छाजै ।। देखो ।।
अर्हत सिद्ध सूरि गुरु मुनिवर, पाचों पद जिहिमाही ।
दरसन ज्ञान चरन तप जिहियें पटतर कोऊ नाहीं ।। देखें ।।1।।
ज्ञान चेतना कहिये जाकी, बाकी पुदगल केरी ।
केवलज्ञान विभूति जासुकै, आन विभौ भ्रमचेरी ।। देखो ।।2।।
एकेन्द्री पंचेन्द्री पुदगल जीव अतिन्द्री ज्ञाता ।
द्यानत ताही शुद्ध दरव की जानपनों सुखदाता ।। 3।।

हे साधक ! ज्ञाता-दृष्टा होकर अपने स्वरूप को देखो आत्मा किस प्रकार विराजित है ! यह सबका ज्ञायक है सबको जानने वाला है। छह द्रव्य व नौ तत्व सब इससे ज्ञेय हैं।

अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधु ये पांच पद आत्मा में ही हैं इनमें दर्शन, ज्ञान, आचरण व तप की उत्कृष्ट स्थिति होती है। ये अतुल (तुलनारहित) हैं इनका कोई दूसरा प्रतिरूप नहीं है।

इस आत्मा में तो केवल ज्ञान चेतना ही है, जो इसकी संपदा है। इसके अतिरिक्त में शेष सब तो पुद्गल हैं, पुद्गलजन्य हैं। इन्हीं के चरणों में केवलज्ञान रूपी संपदा लोटती है। यह विधा अन्य दोनों जनों में नही है अर्थात अन्य जनों में तो इसका भ्रामक रूप ही है अर्थात् इसकी समझ ही भ्रमपूर्ण है।

चाहे एकेन्द्री से पचेन्द्री तक हो, चाहे पुद्गल हो इन सबका ज्ञाता तो केवल जीव ही है, जो अतीन्द्रिय ज्ञान का ज्ञाता है। द्यानतराय कहते हैं कि ऐसे ही शुद्ध जीवद्रव्य के स्वरूप को जानो। उसका बोध ही सब सुखों का दाता है, सुख प्रदान करने वाला हैं।

संस्कार प्रवाह

आतंक का पर्याय सुनियोजित हिंसा

रामनवमी और हनुमान जयंती पर आयोजित शोभा यात्राओं पर मात्र हमला नहीं किया अपितु आतंकवाद से गहरे रिश्ते रखने वाले लोगों ने कानून को चुनौती दी है ऐसी स्थिति में एक दोहा प्रासंगिक है-

विनय न मानत जलधि जड़
गये तीन दिन बीत बोले राम सकोप तब
भय बिन होत न प्रीत

इस तरह से शोभा यात्राओं पर हमला म.प्र. के खरगोन में, गुजरात के खंभात में और राजस्थान के करौली में तथा दिल्ली के जहांगीर पुरी में पथराव हुये देखे गये हैं। पथराव के बाद हथियारों का खुलकर प्रयोग तथा पेट्रोल बम का भी प्रयोग किया गया। इस राष्ट्र व्यापी साजिश रखने के पीछे पापूलर फ्रंट ऑफ इंडिया जैसे संगठनों का हाथ होने की बात सामने आई। इस बात पर सैक्यूलर वादी एवं लिबरल वाद से संबंध रखने वाले लोगों के मुँह पर ताला लगा रहा। यदि किसी मुस्लिम जुलूस पर हमला होता तो ये सब लोग एक साथ मुखर हो जाते और पूरे देश में बखेड़ा खड़ा कर देते। सच यह है कि उत्तरप्रदेश में 800 शोभा यात्रायें निकली परन्तु किसी भी शोभायात्रा पर पथराव नहीं हुआ क्योंकि वे जानते थे कि अगर उत्तरप्रदेश में हिंसा करते तो वहां की सख्त सुरक्षा व्यवस्था किसी भी तरह से बकसेगी नहीं। वहां की पुलिस प्रशासन व्यवस्था उनके परिवार रिश्तेदारों सहित किसी भी सीमा तक जा सकती है। म.प्र में भी साजिश रचने वाले लोगों की संपत्ती पर बुल्डोजर चला दिये गये इससे वहां भी भय पैदा हो गया धार्मिक आयोजनों पर हमले और बाद में हिंसा को अंजाम देने वाले आतंकी सोच के लोग ही हो सकते हैं। इनमें भय पैदा करने के लिये केन्द्र सरकार राष्ट्रीय जाँच एजेन्सी से संपूर्ण हिंसा का सच पता लगाये और हिंसा की चुनौती का डटकर मुकाबला करे।

आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी

✻ ब्र. सुनील भैया, जबलपुर ✻

प्रायः कर देखा जाता है कि बालक, बालक से मित्रता करते हैं, वृद्ध वृद्ध की संगती करते हैं और युवा, युवा का साथ पंसद करते हैं। आज लाखों युवा आचार्य श्री जी के दीवानें हैं अथवा यूँ कहें की उनके लिये पागल हैं और क्यों न हों क्योंकि गुरुदेव भले ही 71 वर्ष के हो गये हों किन्तु वे कभी भी इतने बूढ़े नहीं होंगे कि युवा न रह सकें।

गुरु जी के अंदर सौंदर्य देखने की अदभुत क्षमता है। जो विद्रूपताओं में भी खूबसूरती ढूंढ लेता है वो हमेशा खुश रहता है ऐसा शख्स कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता है। गुरु जी के समक्ष प्रातः से संध्या तक सैकड़ों शिकायतें और समस्यायें आती रहती हैं लेकिन वे कभी भी अपने मन को हताश नहीं होने देते हैं। कठिनाईयों और निराशा के घने तम के बीच भी वे अपना दिया जला ही लेते हैं । कहा भी है कि

माना कि घना अंधेरा है
मगर दिया जलाना कहाँ मना है।

नवम्बर अंत 2004, तिलवारा की बात है ठण्ड बहुत तेजी से बढ़ रही थी। गुरु जी जिस कक्ष में विराजमान थे उसमें 7-8 दरवाजे के आकर की खिड़कियां थी, सुबह के समय तो उस हॉल में ठण्ड इतनी अधिक होती थी कि गर्म कपड़े पहनने वाले भी काँपने लग जाते थे। अनेक लोगों ने अपने स्तर के प्रयास किये पर वे असफल रहे। कई मुनिराजों ने गुरु जी से किसी अन्य कक्ष में शिफ्ट होने का निवेदन किया लेकिन सभी की अर्जी नामंजूर हो गई। एक दिन एक ब्रह्मचारी जी ने हंसी करते हुये कहा गुरु जी तिलवारा में एक भव्य विधान का आयोजन होना है, जिसमें बहुत सारे ब्रह्मचारी आने वाले हैं चूँकि यहाँ जगह की कमी है इसलिये ये हॉल आपको खाली करना पड़ेगा, तो गुरुजी कहते हैं मैं भी तो एक ब्रह्मचारी हूँ क्या इस कक्ष के एक कोने में मुझे भी जगह नहीं मिल जायेगी। कोई और होता तो ब्रह्मचारी जी को इस टिपण्णी पर आंख दिखा सकता था, डांट सकता था लेकिन गुरुदेव माहौल को खुशनुमा करना जानते हैं, कर्कश शीत लहर के बीच भी वे **समओ सव्वथ्थ सुंदरो लोए** को चरितार्थ कर लेते हैं ।

सौंदर्य खोज लेने के इस हुनर में निपुण गुरुदेव की मनमोहक मुद्रा ही युवाओं में चुंबकीय आकर्षण पैदा करती है। एक बार आर्यिका श्री अंतरमति माताजी ने बतलाया था कि जब वे कॉलेज में अध्ययन कर रही थी उसी दौर में गुरु जी का मढ़िया आगमन हुआ। उनके मन में आचार्य श्री जी के दर्शन का कौतुहल पैदा हुआ अतः सहेलियों के साथ गुरु जी के दर्शनार्थ वे मढ़िया पहुँची। प्रथम बार ही गुरु जी भव्य आलौकिक मुद्रा के निष्काम अप्रतिम सौंदर्य को देखकर वे सदैव के लिये गुरु चरणों में समर्पित हो गयी। ये कहानी मात्र एक साधक की नहीं है पूज्य समता सागर जी महाराज श्री सहित गुरु जी से जुड़े हर एक साधक का कमोबेश यही अनुभव रहा है।

गुरुजी के इस जादुई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आधुनिक भौतिक विलासवादी परिवेश में कामनाओं से बजबजाती जीवन शैली में भी युवा साधकों का इतना विशाल गुरुकुल बन गया। ये साधक अपना तो उत्थान कर ही रहे हैं साथ ही साथ देश के कोने कोने में पहुंचकर लाखों युवाओ का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

पहले के युवा अपने से बड़ों की, गुरुओं की बात सीधे सीधे स्वीकार कर लेते थे किन्तु आधुनिक माहौल में पले पुसे युवा किसी भी बात को बिना तर्क वितर्क के स्वीकार नहीं करते। आज के युवा वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक बातों का ज्यादा महत्व देते हैं। गुरुजी भी किसी भी बात को कहने के पहले उसकी व्यावहारिकता पर विचार करते हैं। गुरुजी न केवल उसे तार्किक तरीके से हर एंगल से परखते हैं अपितु उसका प्रयोग भी करते हैं। गुरु जी प्रयोगधर्मिता के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं।

गुरु जी समर्पण को सफलता का मूल-मन्त्र मानते हैं। किसी भी कार्य की सफलता के लिये पूर्ण समर्पण की जरूरत होती है। अनेक बुद्धिमान लोग समर्पण के बिना अपने कार्यक्षेत्र में असफल हो जाते हैं जबकि कुछ सामान्य बुद्धि वाले लोग समर्पण के कारण सफलता के क्षितिज को छू लेते हैं। गुरुजी ने पहले स्वयं इस मंत्र को अपने जीवन में अपनाया है।

गुरु जी से नेमावर में एक भाई ने पूछा आचार्य श्री जी आपने मात्र 4 वर्षों में इतना गहन अध्ययन कैसे किया। प्रश्न सुनते ही गुरु जी कहीं खो गये, शायद अपने गुरु जी की स्मृति में । गुरु जी उस भाई ने बार-बार निवेदन किया तो उन्होंने संकोच करते हुये बतलाया की 4 वर्ष में नहीं 2 वर्ष में, एक वर्ष तो भाषा के अध्ययन में लग गया और एक वर्ष गुरु जी संल्लेखना के लिये समर्पित रहा। 2 वर्ष तो बड़ा लम्बा समय है ऐसा एवं इससे भी अच्छा अध्ययन 1 वर्ष में भी किया जा सकता है बशर्ते शिष्य और गुरु के बीच भगवान भी न आये तो।

गुरु जी का यह उत्तर कितना जीवंत और व्यवहारिक है। उन्होंने ऐसे समर्पण का प्रयोग अपने जीवन में किया और अब इस युवा पीढ़ी को यह अमूल्य धरोहर सौंप रहे हैं। यही कारण है कि आई आई टी जैसे संस्थानों से शिक्षित, मल्टी नेशनल कंपनी में काम करने वाले एवं अमेरिका जैसे देश में सेवारत युवा भी आज चरखा चला रहे हैं। इतना ही नहीं अनेक सी ए, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर भी आपके एक इशारे की प्रतीक्षा में खड़े हुये हैं।

आज का युवा सोचता है कि-
जिंदगी की असली उड़न अभी बाकी है
जिंदगी के कई इम्तहान अभी बाकी है
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीं हमने
अभी तो सारा आसमान बाकी है।

उसे लगता है कि यदि एक रिक्शेवाले का बेटा आई.ए.एस बन सकता है, एक चाय बेचने वाला प्रधान मंत्री बन सकता है और एक गरीब धीरू भाई अम्बानी जैसा बन सकता हैं तो मैं

क्यों नहीं ? अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये वह लीक से हटकर सोचता है, वह रिस्क लेता है, चीजों और परिस्थितियों को ऑब्जर्व करने का उसका एक अलग तरीका होता है। युवा पीढ़ी के सोचने के इस ढंग से गुरुजी न केवल परिचित हैं बल्कि उनके जीवन में भी ये सारे गुणधर्म विद्यमान हैं। इसलिये युवाओं के लिये उनका कहना है कि -

जब हौसला बना लिया ऊँची उड़न का
फिर देखना फिजूल है कद आसमान का

आजकल एक इंटरव्यू का वीड़ियों वॉयरल हो रहा है। एक युवा नौकरी के लिये इंटरव्यू देने पहुँचता है, HR कहता है Write Something वह युवक Java लिख देता है। उसका अकादमिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा होता है लेकिन उसे HR रिजेक्ट कर देता है फिर दूसरा युवक आता है कि इसी प्रश्न के उत्तर में वह I love my company लिखता है उसका भी चयन नहीं होता। ऐसे करते करते बहुत सारे युवकों को HR मना करता जाता है तब एक और युवक आता है उससे भी प्रश्न की Write Something वह युवा Something ही लिख देता है। इस युवक ने 4 वर्ष की डिग्री 6 वर्ष में पूरी की थी लेकिन उसके सहज जवाबों से HR खुश होकर उसे जॉब पर रख लेता है।

गुरुजी के शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये भी ऐसे ही बड़ी-बड़ी साधना करने वाले चर्यावान और बुद्धि मान व्यक्ति आते हैं लेकिन निरीक्षण की पद्धति बहुत अलग है। बुद्धिमान रह जाते हैं और भोले भाले लोग उनकी चरण छाँव में स्थान पा जाते हैं। एक दिगम्बर आचार्य द्वारा गौ शालाओं के लिये प्रेरणा और आशीर्वाद देना साधुओं और विद्वानों को अटपटा लगता है किन्तु यह उनकी करूणा की अभियक्ति का लीक से हटकर एक अलग तरीका है। श्रमण-संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने की पवित्र भावना के कारण वे अहिंसा बैंक, अस्पताल और मांस निर्यात विरोध आदि कार्यों के लिये जब युवाओं को प्रेरित करते हैं तो कितनी उँगलियाँ उनकी तरफ उठती हैं लेकिन गुरुजी का बिल पावर बहुत स्ट्रांग है। गुरुजी किसी की टीका टिपण्णी पर ध्यान नहीं देते, वे सोचते हैं कि

उम्र जाया कर दी लोगों ने
औरों के वजूद में नुक्स, निकालते निकलते
इतना खुद को तराशा होता
तो फरिश्ता बन जाते।

गुरुजी को कोई फरिस्ता कहते हैं, कोई कलिकाल तीर्थंकर कहते हैं, तो कोई चलते फिरते सिद्ध कहते हैं। ये भक्तों की गुरुजी के प्रति श्रद्धा है लेकिन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से गुरुजी भगवन नहीं हैं। पर आश्चर्य तो ये है कि हमारे जैसा ही हीन सहनन, वैसा ही प्रतिकूल वातावरण एवं इस कलिकाल की नैतिक पतनाभिमुख भौतिक संस्कृति के होने पर भी जगत को विस्मित कर देने वाली आपकी साधना की ऊंचाई स्तुत्य है, वंदनीय है। जगत पूज्य गुरुदेव अपने इन्हीं अनूठे गुणों के कारण से आज की युवा पीढ़ी के आकर्षण के केंद्र बने हुये हैं।

स्वामी विवेकानंद जी कहना हैं कि जो फूल बिलकुल ताजे हैं , जो मसले नहीं गये हैं और अभी सूंघे भी नहीं गये हैं, वही फूल भगवन के चरणों में अर्पित किये जाते हैं इसलिये तुम्हारे सुनहरे भविष्य का निश्चित करने का यही सही समय है। युवावस्था में नये जोश और उमंग के साथ काम कर अपने भाग्य का निर्माण करो तथा एक महान ध्येय को पाने के लिये अपने यौवन को अपने लिये समर्पित कर दो।

गुरु जी मानते होंगे कि बालको के पास सोच नहीं होती और वृद्धों के पास उम्मीद नहीं होती इसलिये उन्होंने हमेशा युवाओं पर भरोसा जताया है। गुरुजी इस युवा पीढ़ी को प्रशासन के क्षेत्र में आने के लिये प्रेरित करते रहते हैं। गुरु की इस सोच के पीछे एक मजबूत कारण, कि भारत प्राकृतिक सम्पदा एवं नैतिक संस्कारों के दृष्टिकोण से समृद्धशाली देश है किन्तु आज विश्व समुदाय में आधुनिक विकास के मामले में बहुत पिछड़ा है, जिसका एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार है।

गुरु जी ने इस सत्य को पहचानकार प्रशासनिक क्षेत्र में जाने के लिये संस्कारी युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश प्रदान किया जिससे आज हजारों युवक युवतियाँ उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन हो चुके हैं । गुरुदेव ने इन युवाओं के अंदर इतनी ऊर्जा भर दी है कि यदि वे अपने उद्देश्यों से विचलित नहीं होते हैं तो अगले कुछ वर्षों में भारत की तस्वीर कुछ और ही होगी। ये अभिकारी भी अपने लक्ष्य के लिये दृढ़ संकल्पित हैं। चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति आ जाये पर हार नहीं मानना हैं।

इनके लिये श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं कि

क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत में
वरदान नहीं मांगूगा
हो कुछ भी पर हार नहीं मानूँगा।

आज हर मां-बाप अपने बच्चे को अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाना चाहता है कोई उन्हें अच्छा नागरिक बनने के लिये प्रेरित नहीं करता। गुरुजी एक बार बीना बारहा में बड़े गौर से डिक्शनरी देख रहे थे मैंने पूछा आचार्य श्री जी कुछ खास विषय है क्या ? गुरुजी ने कहा ग्रेजुएट का अर्थ देख रहा हूँ। ग्रेजुएट का मतलब क्रमिक। इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि की डिग्रियों में मात्र यांत्रिक ज्ञान होता है किन्तु इसमें युवाओं का व्यक्तित्व निखार के लिये कोई स्थान नहीं है। इसलिये आज इस युवा पीढ़ी के अनेक सदस्य कभी कभी आर्थिक मजबूरियों के कारण से अथवा कभी अपने अव्यवहारिक लक्ष्य में असफल होने के कारण से अनैतिक आचरण की ओर बढ़ जाते हैं।

यह युवा पीढ़ी कभी गुमराह ही न हो इस हेतु गुरुजी ने शिक्षा के स्तर में सुधर की जरूरत पर महत्व दिया है। जिस तरह मैकाले ने शिक्षा पद्धति में परिर्वतन कर भारत को बहुत समय तक गुलाम बनाये रखा था, उसके विपरीत भारतीय समाज एवं आने वाली पीढ़ी के उन्नयन के लिये गुरुजी ने शिक्षा के समीचीनीकरण करते हुये प्रतिभास्थली विद्यालय इस राष्ट्र को समर्पित किया। प्रशिक्षित एवं सुसंस्कृत शिक्षकों के द्वारा स्थानीय भाषा मे आवश्यक विषयों के साथ-साथ

भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों की शिक्षा दी जाये, उन्हें इस देश, समाज, परिवार और अपने जीवन का अर्थशास्त्र सिखाया जाये, भारतीय विधिक एवं न्यायिक व्यवस्था से परिचय कराया जाये तो इस युवा पीढ़ी की सोच में चमत्कारी परिवर्तन देखने मिलेंगे।

यदि प्रतिभास्थली मॉडल को सम्पूर्ण भारतवर्ष के बालक -बालिकाओं के लिये लागू कर दिया जाये तो निःसंदेह 15-20 में न केवल अपराध, अलगावाद, आतंकवाद बेरोजगारी आदि की समस्याएं नियंत्रित हो जायेंगी बल्कि विश्व के मानव विकास मानदंड में भी ऊँची छलांग देखी जा सकेगी।

धर्म के मामले में गुरुजी की सोच बहुत विस्तृत है। आप मात्र जैनियों के बारे में नहीं सोचते अपितु समूचे राष्ट्र के विकास के लिये सोचते हैं । सुना था कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने गुरुजी से मिलने के उपरांत कहा था - मैंने सोचा था कि बाबा भी किसी मंदिर या प्रोजेक्ट के लिये जमीन या कुछ सुविधाओं की मांग करेंगे लेकिन नहीं इन्होंने चर्चा की कि

1. देश के युवाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार कैसे मिले ?
2. गरीबी का उन्मूलन कैसे हो ?
3. किसानों की आत्महत्यायें कैसे रूकें ?
4. जंगलों एवं पर्यावरण की सुरक्षा कैसे हो ?

इतना ही नहीं इन समस्याओं के कुछ बेहतरीन समाधान भी गुरु जी ने सुझाये थे।

1. श्री हुकुमचंद जी सावला के अनुसार गुरु जी ने कहा कि रेलवे कि पटरियों के दोनों तरफ खाली पड़ी लाखों हेक्टेयर जमीन को कृषि कार्यों के उपयोग में लाया जाये तो लाखों कृषकों को आमदनी का अचछा साधन मिल जायेगा।

गुरु जी का दूसरा सुझाव था कि यदि कुटी उद्योगों में हस्तकरघा जैसे उपक्रम को प्रोत्साहन दिया जाये तो इससे करोड़ों युवाओं को जीविका का न्यूनतम साधन प्राप्त हो जायेगा।

इस तरह युवा पीढ़ी और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रति गुरुजी की करूणा के बारे में जितना भी कहा जाये बहुत कम है। गुरुदेव ने इस पीढ़ी को वो सब कुछ दिया जो किसी देश का मुखिया भी नहीं दे सकता है। अब समय है गुरुजी के संकेतों को समझ कर उसे क्रियान्वित करने का। गुरुजी के अवदानों से उपकृत यह सृष्टि सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

इतना सब कुछ देने के उपरांत भी गुरुजी कर्तृव्य भाव से बहुत दूर हैं । वो हम सब के बीच में रहते जरूर हैं पर वे जगत के अजनबी बने हुये हैं।

निदा फाजली का एक शेर गुरुजी पर प्रासंगिक है।

बदला न अपने आप को जो थे वही रहे, मिलते रहे सभी से, मगर अजनबी रहे।

संयम साधना के 50 वर्षों में साधना की पराकाष्ठा को छूने वाले हे गुरुदेव इतनी अनुकम्पा करना कि मेरा हृदय कभी भी आपके चरण कमलों की सन्निधि से दूर न रहे। मेरी आत्मा के एक एक प्रदेश पर आपकी ही छवि अंकित रहे।

जैविक खेती पद्धति में जैन दर्शन का महत्व

✻ संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर ✻

जैविक खेती, खेती की वह पद्धति है जिसमें भूमि, जल एवं वायु को प्रदूषित किये बिना पर्यावरण को स्वस्थ व स्वच्छ रखते हुये दीर्घ-काल तक अधिक पौष्टिक उत्पादन प्राप्त होता है। जैविक खेती जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, जीवों के सहारें की जाने वाली जीवांत खेती। मिट्टी एक सजीव माध्यम है, इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म जीवाणु विभिन्न तरीकों ये पौध पोषण करते हैं। इस पद्धति में मनुष्य, पशु, जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े, भूमि, जल, वायु, आकाश तथा विभिन्न जैविक ओर अजैविक घटकों के बीच संतुलन बना रहता है।

खोज अनुसार एक ग्राम स्वस्थ मिट्टी में करीब 30 हजार प्रोटोजोओ, 50 हजार एल्गी, 4 लाख फन्जाई पाये जाते हैं। जो स्पष्ट करते हैं कि मिट्टी में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीवियों के कारण पौधों के प्राकृतिक विकास में मदद मिलती है। ये असंख्य सूक्ष्म जीवियोंर द्वारा जमीन में उपलब्ध अकार्बनिक पदार्थों को खाद में बदलकर घुलनशील बनाकर पोधों के पोषण योग्य बनाते हैं एवं जीव कृषि उपज का मूलाधार ह्यूमय का निर्माण करते हैं। जिससे मिट्टी नरम, हवादार, नमी वाली भुरभुरी, जल धारण क्षमता योग्य बनाकर पौधों के समुचित विकास पोषण व उपज बढ़ाने में उपयोगी होते हैं।

आजादी के बाद देश में अधिक उपज प्राप्त करने के उद्देश्य से लगातार रासायनिक खादों, संकर बीजों, कीटनाशकों का उपयोग, खरपतवार नियंत्रण औषधियों का उपयोग, खेतों में निरन्तर मशीनीकरण ट्रेक्टर के उपयोग, मिट्टी में गोबर खादों का उपयोग कम या नहीं करने से मिट्टी निर्जीव व कठोर हो गई जिससे उर्वराशक्ति का ह्रास, जल धारण क्षमता में कमी, मिट्टी में भारी अघुलनशील हानिकारक तत्वों का जमना, मिट्टी के भौतिक व जैविक गुणों में बदलाव से लाभकारी जीवाणुओं की संख्या में कमी से आने वाले समय में भूमि बंजर हो सकती है।

जल वायु व खाद्य सामग्री में विषाक्तता बढ़ने से मानव शरीर रोगों से घिर गया है। कैंसर, हृदय रोग, श्वास रोग, यकृत, किडनी, मस्तिष्क रोगों के साथ शुगर, रक्तचाप, चमड़ी के रोग, आँख, कान के रोगों के साथ ही मानव रोग प्रतिरोधक क्षमता खोता जा रहा है। कम उम्र में बच्चे, बच्चियों मेच्योर व नैसेर्गिक सुन्दरता को खोते जा रहे हैं व मनुष्यों की औसत आयु घटती जा रही है।

उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखते हुये जैविक खेती की आवश्यकता बढ़ गई है। जिससे भूमि की खोई हुई उर्वरकता शक्ति को बढ़ाना, जल धारण क्षमता में वृद्धि, भूमि विषाक्त होने से उत्पादित अन्न, सब्जी, फल दूध के माध्यम से मनुष्यों के स्वास्थ्य के खतरों को बचाना, कृषि पद्धति महंगी हो रही है जिससे छोटे, मझले किसान कृषि को छोड़ने, बेचने और शहरों की ओर

पलायन को कम करना। उत्पादित बिना मौसम की सब्जियों, फलों आदि के सवाद के परिवर्तन व इनके उपयोग से जीवन को घातक होने से बचाना है। देश में अच्छी गुणवत्ता के कृषि के उत्पादों के निर्यात में वृद्धि, वायुमंडलीय ओजना परत को नष्ट होने से रोकना आदि।

जैन दर्शन के अनुसार काल परिवर्तन के अवसर्पिणी काल के षष्ठम दुषमा-दुषमा काल के आखरी अवधि में पृथ्वी पर शीतवर्षा, खाराजल, विष, धूल, धुंआ, अग्नि की वर्षा से पृथ्वी की सतह जल जाती है। इसी तरह उत्सर्पिणी काल के दुषमा-दुषमा काल के प्रारंभ में सात-सात दिन तक लगातार जल, दूध, घी, अमृत, दिव्य रसों और सुगंधित पवन युक्त मेघों की वर्षा से पृथ्वी पुनः स्वस्थ्य होकर उपजाऊ हो जाती है। संभवतः इन्हीं आधारों को कृषि मर्मज्ञों ने भी बंजर होती जा रही भूमि को उपजाऊ बनाते हेतु (1) भमूत- बड़ के पेड़ के नीचे की नमी युक्त मिट्टी को बुबाई के पूर्व खेत में बिखेरना जिससे भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की वृद्धि होती है। (2) अमृत पानी- जिससे देशी गाय के गोबर, गाय का घी, शहद, पानी मिलाकर बुबाई के पूर्व भूमि में छिड़काव करने से मिट्टी में विषाक्तता दूर होना, वायु संचार बढ़ना व उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। (3) अग्निहोत्र- तांबे के पिरामिड आकार पात्र में गाय के गोबर का सूखा कण्डा जलाकर, अक्षत, गाय का घी मिलकर हवन करने से वायुमंडल शुद्ध, हानिकारक विकरण के तन्तु स्वयंमेव परिवर्तित होकर लाभप्रद बन जाते हैं। (4) छाछ- को भी बुबाई के पूर्व खेत में छिड़काव करने से मिट्टी में जल शोषण एवं जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है।

जैविक खेती की शुरुआत में मिट्टी की संरचना, भौतिक अवस्था अनुसार ऊपर लिखें उपचार अपनाकर स्वस्थ व उपजाऊ बनाकर भूमि में उपलब्ध पोषक तत्वों की जांच कराकर फसल अनुसार आधार खाद के रूप उपलब्ध खादों में गोबरखाद कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट, बायोगेंस स्करी की मात्राओं की गणना ज्ञात करके वजन निकालकर उपयोग करना चाहिये। फसलों की उत्पादन क्षमता, अवधि अनुसार शीघ खादों में मटका खाद, अमृत पानी, गौमूत्र, बायोगैस स्करी, सूक्ष्म जीवाणु कल्चर का उपयोग करना। पौध संरक्षण उपयों में शोधित छाछ, गौमूत्र नीमपत्ती व विभिन्न पत्तियों का अर्क, हींग, मिर्च, लहसुन आदि तैयार औषधि का फसल की अवस्था, कीट रोग प्रकोप अनुसार औषधि की मात्राओं का उपयोग अनुभवों के आधार पर करना उचित रहता है। अनाज, भंडारण, चूहा, दीमक नियंत्रण जैविक विधि से प्रभावी तरीके से नियंत्रण किया जाता है।

लगातार उसे 4 वर्षों में जैविक विधि से उपज भरपूर प्राप्त होने लगती है एवं भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि, मिट्टी के भौतिक जैविक गुणवत्ता कीट प्रकोप व रोग की तीव्रता में धीरे-धीरे कमी, होना। रासायनिक खाद, औषधि की निर्भरता में कमी से फसल लागत में खर्च कम होना। अधिक समय तक दीर्घ स्थायी उत्पादन प्राप्त होना। भूमि, जल, वायु, खाद्य पदार्थों के माध्यम से होने वाले

प्रदूषण में कमी। खेत और आस पास के क्षेत्रों में प्राकृतिक जैव विविधता की सुरक्षा होना। बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता में खरे उतरना व अधिक मूल्य प्राप्त करना।

भारत की सांस्कृतिक धरोधर अति प्राचीन है, भगवान ऋषभदेव ने लोगों को आजीविका चलाने हेतु षटकर्मों की शिक्षा में कृषि करने का उपदेश दिया कृषि करो या ऋषि बनो। भगवान महावीर ने अहिंसा, जिओ और जीने का उपदेश है आज जैविक खेती ,अहिंसक खेती, ऋषि खेती, आर्गेनिक फार्मिंग पर्यायवाची शब्द हैं। अनेकों ऋषियों, मनिषीयों ने आत्म कल्याण के साथ-साथ कृषि व पशुपालन किया व जो कर्म समाज के हित में करने योग्य थे उन्हें धार्मिक कार्यों से जोड़कर उनका पालन अनिवार्य किया।

मनुष्य का जीवन का मुख्य आधार कृषि है, पूर्व काल में कहावत प्रचलित थी उत्तम खेती, मध्यम व्यापार व निष्कृट नौकरी परन्तु वर्तमान में कहावत पुनः कोरोना काल ने पूर्व काल की ओर ईशारा किया है। हम सभी को समय की आवश्यकतानुसार कृषि, जैविक खेती पर ध्यान देना अतिआवश्यक हो गया है। यह एक क्रांति है- सामाजिकता विकास की, एक आंदोलन है- परिवर्तन का एक संघर्ष है युवा शक्ति संगठित होकर डटे रहने का। एक संकल्प है- प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखने का, एक प्रयास है- रोजगार को बढ़ावा देने का एक सोच है समस्त जीव धारियों को स्वस्थ दीर्घायु जीवन जीने का जैविक खेती मेरे लिये, मेरे परिवार के लिये व देश के लिये। प्रारंभ में कुछ रकवे में शुरुआत करें। जिनके पास कृषि भूमि नहीं , किन्तु कृषि का अनुभव है तो अन्य कृषकों से भूमि किराये से लेकर करना। अपने घर, बगीचे, छत पर सब्जियाँ फल आदि से शुरु करते हुये देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देना।

कविता

मौन की भाषा में वो न जाने क्या-क्या कह गया

मौन की भाषा में वो न जाने क्या- क्या कह गया
तूफां दर्द का जो था वह आँसुओं में बह गया
न जाने क्या कशिश है तेरी सूरत में
बस इक बार देखा तो देखता ही रह गया
यादें छुपी हैं उसकी मेरे दिल के मकां में
वो बस इक लम्हा भर मेरे घर रह गया
दर्द मिलता गया मुझको हर मोड़ पर
मैं ही ये जानता हूँ कि कैसे उसे सह गया
तमाम उम्र गढ़ता रहा कल्पनाओं के महल
असलित खुलते ही रेत सा ढह गया ।

संयम स्वास्थ्य योग

प्राणायाम और स्वास्थ्य

वायु भक्षण- हवा को जान बूझकर कंठ से अन्न नली में निगलता यह वायु तत्काल ककार के रूप में वापस आयेगी। अन्न नलिका को शुद्ध करती है।

लाभ- उदर में रूकी हुई अशुद्ध वायु को निकालती है।

उज्जायी प्रणायाम- कंठ संकुचित कर श्वास इस प्रकार खींचे व छोड़े कि वह श्वास नलिका से घर्षण करते हुये आये और जाये। इससे उसी प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होगी जैसे कबूतर गुटर गूँ की ध्वनि करते हैं। इस प्रक्रिया को करते समय कंठ के अन्दर खुजलाहट एवं खांसी को सकती हैं बलगम निकल सकता है जो चिंता का विषय नहीं। 5 से 10 श्वांस इस प्रकार घर्षण के साथ लें व छोड़े तब इसी प्रकार से श्वास गहरा भरकर जालंधर बंध व मूलबंध के साथ सहजता से जितनी देर रोक सकें रोके। छोड़ने के पूर्व जालंधर बंध शिथिल करें, धीरे-धीरे रेचन करें अंत में मूलबंध शिथिल करें। ध्याम विशुद्धि चक्र (कंठ के पीछे रीढ में) पर रहे।

लाभ- श्वास नलिका, थायरॉइड पैराथायरॉइड स्वर यंत्र आदि को स्वच्छ व संतुलित करती है। कुण्डलिनी जागरण का पंचम सोपान है। यह जल तत्व का केन्द्र है।

मूर्छा प्राणायाम- दीर्घ श्वास भरकर जालंधर एवं मूलबंध के साथ रोकें। सहजता से रोकने के पश्चात् रेचन बिना कोई बंध छोड़ धीरे-धीरे करें। रेचन अधिकाधिक दीर्घ करने का प्रयत्न करें। पूर्ण रेचन हो जाने पर कुछ देर बाहर ही रोककर रखें एवं उड्डियान बंध में लगा लें। ध्यान आज्ञा चक्र पर रहें।

लाभ- मन को मूर्छित करने की अनुपम क्रिया है। मन शांत व स्थिर होने लगता है। कुण्डलिनी जागरण का षष्टम सोपान है। यह आकाश तत्व का केन्द्र।

दुनिया में शांति लाने का उपाय है आर्जव धर्म

✻ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, मनुज, इंदौर ✻

दुनिया में सुख शांति लाना है तो आर्जव धर्म अपनाना चाहिये। सरल और निष्कपट विचारवान होकर वैसा आचरण आर्जव है। आज व्यक्ति, समाज, संगठन से लेकर देश दुनिया में कहते कुछ और हैं तथा करते कुछ और हैं। कथनी करनी में अन्तर, छल-कपट, बंचना, अत्यधिक महत्वाकांक्षाओं के कारण ही विद्वेष, वैमनस्य, अशान्ति जन्म लेती है। कभी देश आपस में टेबुल पर शांतिवार्ता कर रहे होते हैं और सीमओं पर उन्हीं की सेनाएं घुसपैठ या आक्रमण की तैयारी में लगी होती हैं। ये सब मायाचार है। मायावी की एक न एक दिन कलई खुल ही जाती है। आचार्यों ने कहा हे-

मनस्येकं वचस्येकं वपुष्येकं महात्मनाम्।
मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् वपुष्यन्यत् दुरात्मनाम्।।

महान व्यक्ति की पहचान है कि वह जो मन में सोचता है वह कहता है और जो कहता है वही करता है। इसके उलट जो व्यक्ति मन में तो कुछ और वचन से कुछ और, करे कुछ और ऐसे व्यक्ति को दुरात्मा की संक्षा दी गई है।

जैन धर्मावलम्बी पूजा आराधना में पढ़ते हैं-
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।

भगवान श्री राम में बहुत सरलता थी। एक प्रसंग आता है कि- जब राम और लक्ष्मण वनवास में थे, तब राम ने सरोवर के किनारे पर ध्यानस्थ एक बगुले को देखा, तो उन्होंने उस बगुले की सरलता की प्रशंसा लक्ष्मण से करते हुये कहा- पश्य लक्ष्मण, पम्पायां बकोयं परम धार्मिकः। हे हक्ष्मण! देखो सरोवर में यह बगुला कितना धार्मिक है? एक पैरे पर खड़ा होकर ध्यान कर रहा है। इसी बीच उस बगुले ने धीरे से उठा हुआ पैर पानी में रखा, तब लक्ष्मण जी कहते हैं- हां भैया- शनैः शनैः पदं धत्ते, जीवानां वधशंकाया। वह पानी में धीरे धीरे पैर रख रहा है जिससे जीवों का धात न हो जाये। कहते हैं राम-लक्ष्मण की यह वार्ता उसी सरोवर की एक मछली सुन रही थी, उसने बाहर उछल कर कहा- बकः हिं स्तूयते राम! येनाहं निष्कुली कृतः, सहवासी हि जानाति, सहवासी विचेष्टितं। हे रामचन्द्र! इस बगुले की क्या प्रशंसा कर रहे हो जिन्होंने हम मछलियों के कुल को ही भक्षण करके नष्ट कर दिया है। दूर से सबको अच्छाई ही दिखाई देती है, सन्निकट रहने वाला ही पास वाले की दुर्जनता जानता है।

वस्तुतः बंचना में प्रवीण व्यक्ति बहुत नम्र होकर मीठे मीठे वचन बोलते हैं। कहते हैं जब जब चीता, चोर-कमान अधिक नमें तब तब वे किसी का घात कर रहे होते हैं। कपट के विषय में अनेक उक्तियाँ हैं, उनके माध्यम से शिक्षा दी गई है कि खास तौर पर अपनों से तो कपट आदि कभी नहीं करना चाहिये अन्यथा उसके बहुत बुरे परिणाम होते हैं। कहा है- गुरु से कपट मित्र से

चोरी, कै हो निर्धन या हो कोढ़ी। इस युक्ति के साथ कृष्ण सुदामा का वह प्रसंग आता है- जब एक बार कृष्ण-सुदामा दोनों गायें चराने जाते हैं, पानी बरसने लगता है, दोनों एक पेड़ पर चढ़ जाते हैं, अलग अलग डाल पर बैठे हैं, अंधेरा सा छा गया है, दोनों को भूख लगती है, कृष्ण जी के पास कुछ नहीं हैं, वे सुदामा से पूछते हैं-मां ने कुछ चबैना बांध दिया था क्या ? सुदामा के पास थोड़े से चने थे, उन्होंने कहा- नहीं। कुछ देर बाद सुदामा चने खाने लगे। कृष्ण जी ने पूछा तुम्हारे पास से कुछ कट-कट की आवाज आ रही है, सुदामाना ने कहा- कुछ नहीं ठंडी के कारण दांत किट किट कर रहे हैं । कहते हैं इस एक कपटपूर्ण झूठ के कारण आगे चलकर सुदामा बहुत निर्धन हो गये थे। शेष प्रसंग अधिकतर लोग जानते ही हैं। अतः आचार्यों, सन्तों ने कहा है कि कपट को पूर्णतः त्याग कर आर्जव धर्म अपनायें उसी में सबका कल्याण है।

कविता

गुरुवर विद्यासागर तुम्हें नमन

श्रीमति आशा जैन, इंदौर

गुरुवर ज्ञान सागर की गागर के अनुपम रत्न
ज्ञान ज्योति प्रसारक दर्शन ज्ञान चारित्र के धारक
गुरुवर विद्यासागर तुम्हें नमन
आपकी साधना से चकित है सम्पूर्ण विश्व
आपकी ज्ञान ज्योति की प्रभावना से
चारित्र धारण कर
इस सम्पूर्ण धरा को आलोकित कर रहे
आपके शिष्य रत्न
इन शिष्य रत्नों की, ज्ञान ज्योति की चमक से
सम्पूर्ण विश्व जगमगाया है
सद्लगा की पावन धरती को
आपने स्वर्ग बनाया है
जननी और जन्मभूमि की महिमा है न्यारी
यह जग को बतलाया है
महावीर पथ अनुगामी बनकर
चलते फिरते ज्ञान ज्योति फैला ते
रत्नात्रय की निर्मल धारा
तुम कुन्दकुन्द सम ज्ञानी
हे गुरुवर विद्यासागर तुम्हें नमन
गुरुवर विद्यासागर तुम्हें बारम्बार नमन
गुरु के गुरुत्वाकर्षण से, सम्पूर्ण संघ ही ज्ञानी है।
ज्ञानी से ज्ञानी का मिलन ही, उत्कर्ष की कहानी है।

हे गुरुवर विद्यासागर तुम्हें नमन
क्यों नादानी कर रहा, क्यों नादानी कर रहा।
लख चौरासी गोते खाए, फिर भी अकल न आई
अनन्त समय बिताया नरक निगोद मे
फिर तिर्यंच पशु गति में
दुर्लभता से मनुष्य गति पाई
बड़े पुण्य से मिला यह अवसर
तो व्यर्थ यह मानव पर्याय गवाई
नित नित नई नई आशाएं तृष्णाएं लेकर
क्यों भटक रहा मद के मधुवन में
जिसका आदि हैं न अंत
समझ जा रे इस भव वन में
तू भी मोक्ष मार्ग अभिलाषी है
धूम धूम कर गांवों शहरों में
गुरुवर नित्य उपदेश करें
दिन चर्या ही उनकी भाषा
जिसे देख तत्व ज्ञानी, अनुशरण करें
सम्पूर्ण का संघ पुनः पुनः तुम्हें जगाने आया है
मोह नींद से उठरे प्राणी
तू देव शास्त्र गुरु अनुगामी होकर
क्यों कर रहा नादानी
अज्ञानी तू बन जा रे ज्ञानी क्यों कर रहा नादानी।

चलो देखें यात्रा

महान जैन तीर्थ

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या -03

क्षेत्र पर पहाड़ - बाहुबली पहाड़ी है। गाड़ी पहाड़ पर जाती है।

ऐतिहासिकता- धर्मस्थल अर्थात् धर्म या पुण्य प्राप्ति का स्थल है। बड़ी संख्या में हिन्दू, जैन, मुसलमान और ईसाई इस स्थान पर आते हैं। और धर्म लाभ प्राप्त करते हैं। यहाँ पर मंजुनाथ स्वामी (शिव का एक रूप) का मुख्य मंदिर है और जैनों का चंद्रनाथ स्वामी (चन्द्रप्रभु भगवान) का मंदिर है। बाहुबली स्वामी की 37 फुँट ऊँची कारकल में निर्मित भव्य प्रतिमा बाहुबली पहाड़ी पर प्रतिष्ठित की गई है। इस क्षेत्र का यह वैशिष्ट्य है कि यहाँ जैन धर्मावलम्बी हेगड़े परिवार मंजुनाथ स्वामी मंदिर के मुख्य धर्माधिकारी हैं। वर्तमान धर्माधिकारी पद्मभूषण डॉ. डी वीरेन्द्र हेगड़े ने सम्पूर्ण अंचल के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- मूड़बिड़ी-52 किमी. कारकल-68 किमी. वेणूर- 32 किमी. श्रवणबेलगोला-180 किमी।

निकटतम प्रमुख नगर- मेंगलोर 75 किमी.

प्रबंध व्यवस्था- संस्था- मैनेजिंग ट्रस्ट धर्मस्थल

अध्यक्ष- डॉ. डी वीरेन्द्र हेगड़े फोनः 08256-277160

आवागमन के साधन-रेल्वे स्टेशन- मेंगलोर 75 किमी.

बस स्टैण्ड- धर्मस्थल

पहुँचने का मार्ग- वेलूर, हासन, मेंगलोर से बस द्वारा सरलतम मार्ग

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास-कमरे (अटैच बाथरूम) -1000, कमरे (बिना बाथरूम)-100, हॉल-× गेस्ट हाउस - ×, यात्रा ठहराने की क्षमता- 30,000

भोजनशाला - है **विद्यालय-** है

औषधालय-है **प्रवचनहॉल/पुस्तकालय-** है

टेलीफोन- 08256-202121, 277121, 277141, 277144

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन चन्द्रनाथ स्वामी मंदिर, धर्मस्थल ग्राम- धर्मस्थल तह-बेलयांगडी, जिला- दक्षिण कन्नड़ (कर्नाटक) 574216

परीषहजयी आचार्य श्री जी तपस्या के आगे सूर्य भी हुआ नतमस्तक

✻ मुनिश्री 108 पूज्यसागर जी महाराज ✻

मुनियों का जीवन अनेक उपसर्ग और परीषहों के बीच निकलता है। ऐसा मूलाचार आदि ग्रंथों के पढ़ा तो था और गुरुओं के मुख से सुना भी था, लेकिन चला-चलाकर परीषहों को प्रतिकूलताओं तथा विपरीत स्थितियों को अपने जीवन में कैसे लाया जाता है यह आचार्य श्री जी के साथ रहकर साक्षात देखने को मिला-धन्य है आचार्य श्री जी अपने व्रतों को निर्दोष से पालने के लिये कठोर साधना और तपस्या करते हैं कि उस तपस्या के प्रभाव से देवों को भी उनके चरणों में झुककर उनकी व्यवस्था करनी पड़ती है और ऐसा ही हुआ।

आचार्य श्री जी ने 10 जून 2009 को भीषण गर्मी में जबकि कहीं पर मानसून का नामो-निशान नहीं था कुण्डलपुर से शाम 04.00 बजे विहार कर दिया जब आचार्य श्री जी ने विहार किया तो संघ के किसी भी साधु की हिम्मत नहीं थी कि उनके साथ चल सकें। क्योंकि उस समय जमीन आग की तरह जल रही थी। लेकिन श्री समयसागर जी महाराज को मालूम पड़ा कि विहार हो गया तो महाराज जी भी विहार कर गये बड़े बाबा के दर्शन करके पीछे से ही आचार्य भगवन के साथ चलते गये और करीब 12-13 किमी. हिनौती गांव से आगे कुमारी गांव से पहले एक स्कूल के पास रात्रि विश्राम किया लेकिन गर्मी इतनी अधिक थी कि रातभर आचार्य श्री जी को नींद नहीं आयी। रात्रि में आचार्य श्री जी के पास मात्र दो मुनि ही पहुँच पाये थे- श्री समयसागर जी तथा श्री महासागर जी और पूरा संघ पीछे-पीछे ही रूक गया था, क्यों कि हम लोगों ने शाम 5.00 बजे के बाद ही विहार किया और जो जहाँ तक आ पाया वह वहीं आकर रूक गये लगभग हिनौति गाँव के आस-पास आ गये थे, सुबह होते-होते हुये हम लोग सोच रहे थे कि आचार्य श्री कुम्हारी गाँव से 4-5 किलोमीटर दूर पर आहार करेंगे लेकिन गुरु जी महिमा अपरम्पार हैं वह तो परीषह से डरते ही नहीं हैं और पुनः सुबह-सुबह 14-15 किमी विहार करके सागोनी गांव पहुंच गये उनकी इस तपस्या को देखकर देवों को भी झुकना पड़ा और इतनी भीषण गर्मी में भी देवों ने आकर छत्ता लगा लिया अर्थात् बादल कर दिये और जब आचार्य श्री जी अपने स्थान पर नहीं पहुंच गये। तब तक बादल बने रहे। थोड़ी-थोड़ी बूंदे भी बरसती रहीं। लेकिन इतने के बाद भी आचार्य श्री जी के पास आधा संघ ही पहुंच पाया लगभग 28 महाराजर ही गुरु जी के पास पहुंच पाये और करीब 14 महाराज ने योगसार जी महाराज के साथ कुमारी गांव में ही रूककर आहार किये क्योंकि शाम की भीषण गर्मी का विहार और रात में इतनी गर्मी थी कि सुबह ज्यादा चलने की शक्ति नहीं रही।

लेकिन धन्य है आचार्य श्री जी की कठिन तपस्या कि इतनी तेज गर्मी में जब सड़क आग की तरह जल रही थी धूप में ही शाम को विहार और सुबह भी जैसी धारणा बना ली थी कि सागौनी

गांव पहुंचना है तो अच्छे-अच्छे जवान साधु भी पीछे रह गये लेकिन आचार्य श्री जी तेज गर्मी में भी सुबह चलते चले गये और जो लक्ष्य बनाया था उस स्थान पर पहुंच गये। लेकिन देवों ने भी आचार्य श्री जी की इस तपस्या को देखकर खूब वैयावृत्ति की ओर सुबह पूरे समय तक आहार से पहले-पहले तक बादल बने रहे और पुनः जब शाम को तेज गर्मी हो गयी तो लगा कि वास्तव में जो सुबह-सुबह बादल हुये थे देवों के द्वारा किया अतिशय ही था क्योंकि उसके बाद भी कई दिनों तक सुबह न शाम बादल हुये ही नहीं।

धन्य है आचार्य श्री जी का निर्दोष चारित्र कि उनकी सेवा में देव भी तत्पर होकर लगे रहते हैं।

आचार्य श्री जी की इस संस्मरण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमने अपेन जीवन में जो भी नियम, व्रत, संयम का संकल्प लिया है उसको अच्छी तरह निर्दोष और दृढ़ता से पालना चाहिये। नियम व्रत आदि लेने पर परीक्षा तो अवश्यक होती है लेकिन जो परीक्षा में डगमगाते नहीं है और धारणा पक्की रखते हैं तो मनुष्य ही नहीं देव भी आकार उनकी सेवा में लग जाते हैं।

कविता

जड़ों से जुड़े

✻ श्रीमति सुनीता कठरया, बीना ✻

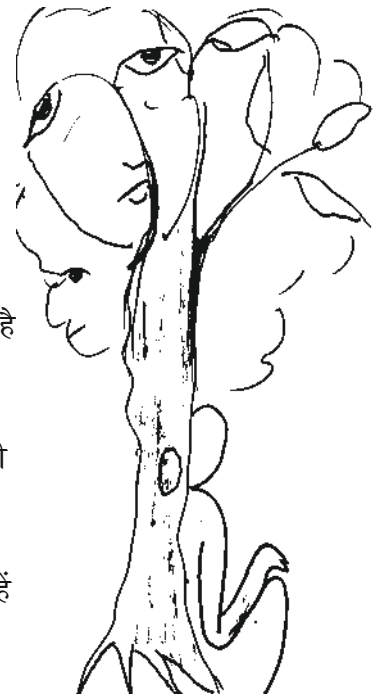

पतझड़ ऋतु में पीले होकर पत्ते सारे झड़ जाते हैं
बसंत ऋतु में पुनः नई कोपले आती हैं
वृक्ष को हरा-भरा बनाती हैं
नये पल्लवों पुष्पों और फलों से
बगिया महक-महक जाती है ऐसा क्यों कर होता है ?
क्यों ऐसा हुआ है कारणा खोजा
तो पाया हमने वृक्ष जड़ों से जुड़ा हुआ है
जड़ों से जुड़े रहने से, जीवन में पुनः पुनः बाहर आती है
जड़ों से हम भी, जुड़े रहें
जड़ परिवार की, धर्म की, समाज की
संस्कृति की....जड़े हमारी खुशहाली की, बहार की
अनिवार्य शर्त है सुखमय जीवन जीने को
हम भी जड़ों से जुड़े रहें चाहे
आधुनिकता का वास्ता देकर कोई हमको पिछड़ा कहें
लेकिन हम जड़ों से जुड़े रहें
हम जड़ों से जुड़े रहे हमेशा।

आगम दर्शन

तत्वार्थ सूत्र की दार्शनिक टीका -श्लोकवार्तिक

तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक- टीका ग्रंथों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक है। यह ग्रंथ आचार्य गृद्धपिच्छ के सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थ सूत्र पर कुमारिल के मीमांसा श्लोक वार्तिक और धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक की तरह पद्यात्मक शैली में लिखा गया है। साथ ही पद्यवार्तिकों पर उन्होंने स्वयं भाष्य अथवा गद्य में व्याख्यान भी लिखा है। यह जैनदर्शन के प्रमाणभूत ग्रंथों में प्रथमकोटि का ग्रंथ है। विद्यानन्द ने इसकी रचना करके कुमारिल, धर्मकीर्ति जैसे प्रसिद्ध तार्किकों के जैनदर्शन पर किये गये आक्षेपों का उत्तर दिया है। इस ग्रंथ की समता करने वाला जैनदर्शन में तो क्या अन्य किसी भी दर्शन में एक भी ग्रंथ नहीं है।

इस ग्रंथ में आगम के मूल आप्त की सिद्धि कर पराभिमत आप्त का खण्डन किया गया है। विषय का वर्गीकर तत्त्वार्थ सूत्र के समान ही दस अध्यायों में है। चार्वाक आत्मा का अस्तित्व न मानकर भूत चतुष्टय का अस्तित्व स्वीकार करता है। अतः विद्यानंद ने चार्वाक का खण्डन कर आत्मतत्त्व की सिद्धी की है। यतः सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की उत्पत्ति का स्थान आत्मा ही है। आत्मा के सद्भाव में ही मोक्ष और मोक्ष के करणीभूत तत्त्वों की सिद्धि सम्भव है।

प्रथम अध्याय में मोक्षमार्ग के निरूपण के साथ-साथ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनः पयर्यज्ञान और केवलज्ञान का विस्तारपूर्वक निरूपण किया गया है।

बताया है-

ज्ञानमेव स्थिरीभूतं समाधिरिति चेन्मतम्।
तस्य प्रधानधर्मत्वे निप्रतिस्तत्क्षयाधदि।।
तदा सोपि कुतो ज्ञानादुक्तदोषानुपंगतः।
समाध्यंतरतश्चेत्र तुल्यपर्यनुयोगतः।।

स्पष्ट है कि आचार्य विद्यानंद ने तत्त्वार्थसूत्र के प्रमेयों का अत्यन्त सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन इस ग्रंथ में किया है। प्रथम सूत्र के वार्तिकों में मोक्षोपाय के सम्बंध में अत्यन्त गवेषणा के साथ विचार किया है। जीव का अन्तिम ध्येय मोक्ष है। बन्धनबद्ध आत्मा को मुक्ति के अतिरिक्त और क्या चाहिये ? अतः मुक्ति के साधनभूत रत्नत्रयमार्ग का सुन्दर और गहन विवेचन किया है। अनन्तर सम्यग्दर्शन का स्वरूप भेद, अधिगमोपाय, तत्वों का स्वरूप और भेद, एवं सत् -संख्या-क्षेत्रादि तत्त्वज्ञान के साधनों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पश्चात् सम्यग्ज्ञान का स्वरूप, सम्यग्ज्ञान के भेद, मतिज्ञान के विषय क्षेत्र, स्वामी आदि का निर्देश किया है इस संदर्भ में सर्वज्ञसिद्धि का भी प्रकरण आया है, जिसमें मीमांसक द्वारा उठाई गयी

शंकाओं का समाधान भी कयिा है।

श्रुतज्ञान ब्राह्म अर्थों को किसी प्रकार विषय करता है, इस आशंका का उत्तर देते हुये आचार्य विद्यानंद ने लिखा है।

श्रतेनार्थ परिच्छिछा वर्तमानो न बाह्यते।
अक्षजैनैव तत्तस्य बाह्यार्यालंबना स्यितिः।।

सामान्यमेव श्रुतं प्रकाशयति विशेषमेव परसपरनिरपेक्षमुम यमेवेति वाशंकामपा करोति ।

अनेकान्तात्मकं वस्तु संप्रकाशयति श्रतं।
सदबोधत्वाद्ययाक्षेत्थबोध इत्युपत्तिमत्।।
नयेन व्यभिचारश्चेत्र तस्य गुणभावतः।
स्वगोचरार्थधर्माण्यधर्मार्यप्रकाशनात्।।
श्रुतस्तयावस्तुवेदित्वे परप्रत्यायनं कुतः।
संवृतेश्चेद् वृभैवेषा परमार्थस्य निश्चितेः।।

ननु स्वत एवं परमार्थव्यवस्थितेः कुतश्चिदविद्याप्रक्षयान्न पुनः श्रुतविकत्पात्। तदुक्तं शास्त्रेषु प्रक्रियाभेदेरविद्यैवोपवर्व्यते। अनागमविकल्पा हि स्वयं विद्योपवर्त्ततं इति तदयुक्त परेष्ठतत्त्वस्याप्रत्यठाविषयत्वात्तद्विपरीस्याने कान्तात्मनो वस्तुनः सर्वदा परस्याप्यवभासनात् लिंगस्य त्वस्याङ्गीकारणीङ्ग यत्वात।।

अर्थात् श्रुतज्ञान द्वारा अर्थ की परिच्छिति कर प्रवृत्ति करने वाला पुरुष अर्थक्रिया करने में उसी प्रकार बाधा नहीं प्राप्त करता है, जिस प्रकार इन्द्रिजन्य मतिज्ञान द्वारा अर्थ को अवग्रह कर प्रवृत्ति करने वाला पुरुष बाधा को प्राप्त नहीं करता है। विशेष का प्रकाशन करता है या निरपेक्ष दोनां का प्रकाशन करता है ? इस शंका का सामान्यविशेषात्मक अनेकान्तरूप वस्तु को श्रुतज्ञान अवगत करता है। जिस प्रकार इन्द्रियों से उत्पन्न हुआ साव्यवहारिक प्रत्यक्षज्ञान अनेकान्तात्मक अर्थ का प्रकाशन करता है, उसी प्रकार श्रुतज्ञान सामान्यविशेषात्मक वस्तु को प्रकाशित करने में समर्थ रहता है। अतः अनेकान्तात्मकं वस्तु श्रुतं प्रकाशयति सरबोधत्वात् यह अनुमान समीचीन है।

इसका नय के साथ भी दोष नहीं है, क्योंकि नयज्ञान मुख्यरूप से एक धर्म को जानता है, पर गौणरूप से वस्तु के अन्य धर्मों का भी वह ज्ञाता है। अतः श्रुतज्ञान का नयज्ञान के साथ दोष नहीं आता।

यति श्रुतज्ञान को वस्तुभूत पदार्थ का ज्ञायक नहीं माना जाये तो प्रतिवादी या शिष्यों को स्वकीय तत्त्वों का ज्ञान किसी प्रकार कराया जा सकेगा। अतएव श्रुतज्ञान द्वारा ज्ञात वस्तु प्रमाणभूत है। इस प्रकार विद्यानंद ने तत्वार्थश्लोकवार्तिक में प्रमेयों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अप्रैल 2022

जल ही मेरा जीवन

प्रथम-

पंखों को मैने फैलाया
पानी में ही खेल रचाया।
पानी से ही यौवन बचपन
देखो जल ही मेरा जीवन

अंकिता जैन, अहमदाबाद

द्वितीय-

जल ही सबकी एक कहानी
नहीं बहाओ व्यर्थ में पानी
कहीं बीत न जाये सूखा सावन
मौत है जल बिन जल ही मेरा जीवन

सपना जैन, सागवाड़ा राजस्थान

तृतीय-

पेड़ न काटो बन न जलाओ
नाहक पानी नहीं बहाओ
सागर नदियाँ मतो पावन
समझो जल ही मेरा जीवन

अभिषेक जैन,मुंबई

वर्ग पहेली क्र. 269
मार्च 2022 के विजेता

प्रथम : राजा जैन, इंदौर
द्वितीय : अनीता जैन, भोपाल
तृतीय : श्रीमति इन्दु बड़जात्या, बाकानेर

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. र व् ष अ् र् अ य् उ ष् ण्
2. व् अ आ क् ई ष् ट् र् आ न् प् र
3. अ प् अ अ श् अ ल् क् ष् अ ण् अ व् र्
4. अ प् अ र आ अ ल् ह् अ क् अ ण् र व्
5. अ अ् त्र् य् अ् व् न् प् व् द् अ

परिणाम :
अप्रैल 2022: (1) मूलाचार प्रदीप (2) मूलाचार (3)स्वयंमू स्त्रोत (4) भरतेय वैभव (5) धर्म रत्नाकर

पुराण प्रेरणा

देह आत्मा की भिन्नता

देह भिन्नं क्रिया भिन्ना भिन्नो देहस्तथा परे।
विषया इन्द्रियाद्यर्था मात्राद्याः स्वकीयाः किमु ।।
अर्हं देहात्मकोऽस्मीति मति चेतसि माकृथाः ।
निचोल सदृशो देहोऽसिसमस्त्वं च मध्यगः ।।
सर्वतो भिन्न एवासि सदृकसंवितिवृत्तिमान।
कर्मातीतः शिवाकारस्त्वमाकार परिच्युतः ।।

देख कर्म भिन्न है, क्रिया भिन्न है, और हेह भी तुझसे भिन्न है, फिर तू ऐसा क्यों मानता है कि ये इन्द्रियों के विषय पदार्थ आदि मेरे हैं-मुझसे अभिन्न हैं, मैं देहरूप हूँ। तू अपने चित्त में ऐसा ख्याल भूलकर भी मत ला। सच तो यह है कि तेरा शरीर सांप की कांचुली के जैसा है। जिस तरह कांचुली सांप के चारों और लिपटी रहती है। उसी तरह ये तेरे चारों और लिपटा हुआ है तू देह से बिल्कुल ही भिन्न है, ज्ञानी है, चारित्रधारी है दर्शन सम्पन्न है या यों कहिए कि रत्नत्रय का पिटारा है, कर्मातीत है, शिवाकार है और आकार रहित है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

प्रोफेशनल फोटोग्राफर

वर्तमान समय में लगभग सभी वर्ग के लोगों में सेल्फी का क्रेज बढ़ता जा रहा है, जिस कारण लोगों को फोटो के प्रति आकर्षण अधिक हुआ है। फोटो क्वालिटी में प्रतिदिन सुधार हो रहा है, इसलिये नये कैमरों में पिक्सल की संख्या बढ़ायी जा रही है, इस समय हाई लेवल पिक्सल कैमरे की जानकारी रखने वाले प्रोफेशनल फोटो की मांग अधिक है, इसलिये फोटोग्राफी को करियर के रूप में अपना कर अच्छी इनकम प्राप्त किया जा सकता है।

शैक्षिक योग्यता: इस क्षेत्र में जाने के लिये आपको इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है, इसको डिग्री के रूप में प्राप्त करने के लिये फाइन आर्ट्स विषय के अंतर्गत एक वैकल्पिक स्नातक उपाधि प्राप्त की जा सकती है। कुछ कॉलेज इसे तीन वर्षीय स्नातक के रूप में करवाते हैं, और कुछ इसे पार्ट टाइम करवाते हैं।

इस क्षेत्र में व्यक्ति को प्रत्येक क्षण होने वाली घटनाओं में क्या विशेष हैं, इसको खोजना आना चाहिये। व्यक्ति में कलात्मक, पारखी नजर व टेक्निकल नॉलेज का होना भी जरूरी है। एक सफल फोटोग्राफर बनने के लिये कड़ी मेहनत और संयम जरूरी है। व्यक्ति में एक ही समय में क्लाइंट, एडवटाईजर, पब्लिशिंग एजेंसी और डिजाईनर के साथ आसानी से डील करना आना चाहिये।

क्षेत्र: फोटो जर्नलिस्ट
फीचर फोटोग्राफर्स
फैशन व एडवटाईजिंग फोटोग्राफी
इवेंट फोटोग्राफी
वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर्स

प्रमुख संस्थान: जामिया मिलिया इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली
फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट (एफटीआई) पुणे
एशियन एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन, नई दिल्ली
जे.जे. स्कूल ऑफ अप्लाइड आर्ट, मुंबई
सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई
फरग्युसन कॉलेज, पुणे

वेतन: फोटोग्राफी के क्षेत्र में आप स्वयं का स्टूडियो खोल सकते हैं या किसी प्रोफेशनल फोटोग्राफर के साथ असिस्टेंट के रूप में कार्य कर सकते हैं। फ्रेशर के रूप में आपकी इनकम 5000 से 8000 रूपये के मध्य हो सकती है, यदि आप स्वयं का स्टूडियो खोल रहें है तो आप 100,000 से 500,000 इनवेस्ट कर के 20000 से 35000 रूपये प्रतिमाह प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में जैन नारी की भूमिका एवं योगदान

✻ सुषमा जैन, भिलाई ✻

हम यदि एक स्वस्थ समाज की बात करते हैं तो समाज की हर इकाई का संस्कारित होना आवश्यक है। समाज में नैतिक मूल्यों को बनाये रखना मानवीय मूल्यों की रक्षा और उनके उत्कर्ष के लिये निरंतर प्रयास करते रहना समाज के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है चाहे वह पुरुष हो या नारी। मानव संस्कृति की रक्षा का पाठ वह अपनी जननी से सीखता है। मानवीय मूल्यों की संरचना में नारी का योगदान पुरुष से अधिक माना गया है। नारी का हृदय दया, करूणा, स्नेह, वासल्य आदि गुणों का भंडार है। नारी सदा काल से समाज के लिये सुख और मंगल की विधायक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। दो हजार पूर्व आचार्य समंतभद्र स्वामी ने तत्व दृष्टि को नारी की उपमा देते हुये अपने ग्रंथ रत्नकरण्डक श्रावकाचार के अंतिम छंद में कहा था।

सुखयतु सुखभूमिः, कामिनं कमिनीव
सुतमिव जननी मां, शुद्धशीला भुनक्तु।
कुलमिव गुणभूषा, कन्यका सम्मुनीता
जिनपति पद पद्म, प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः॥

तीर्थंकर भगवान के चरणकमलों में दृष्टि लगाने वाली सम्यकदृष्टि रूपी लक्ष्मी, पति को सुख देने वाली पत्नी की तरह मुझे सुख प्रदान करे, पुत्र की रक्षा करने वाली शीलवती मां की तरह मेरी रक्षा करे और कुल को पवित्र करने वाली गुणवती कन्या की तरह मेरी आत्मा को पवित्र करे। इस प्रकार उन महान आचार्य ने अपनी सरल भाषा में नारी के लिये यह प्रमाण-पत्र अंकित कर दिया था, कि नारी बाल्यकाल में, युवा अवस्था में और प्रौढ़ावस्था में भी अपनी भिन्न-भिन्न भूमिकाओं के द्वारा सुख और मंगल का विधान करती है। इस भावना में नारी शक्ति को किसी व्यक्ति के लिये, नहीं वरन् पूरी समाज के लिये, पूरे राष्ट्र के लिये और सारी मानवता के लिये कल्याण का स्त्रोत स्वीकार किया गया है।

हमारे वर्तमान का सम्यक् पुरुषार्थ का नियोजन ही समाज के विकास में सहायक होता है। जीवन में यदि स्थायित्व चाहिये तो स्त्री पुरुष दोनों का बुद्धि ज्ञान और व्यवहारिक सम्पत्ति की दृष्टि से समान होना जरूरी है। श्री 108 आचार्य विद्यानंद जी के अनुसार समाज की रचना में पुरुष और स्त्री दो समान अविभाज्य अंग हैं। पुरुष के बिना समाज गति हीन है और स्त्री के बिना स्थिति हीन है। नारी हृदय की स्थिरता और वात्सल्य ही परिवार व समाज की उन्नति में सहायक है। उसके स्वभाव में दया, करूणा और स्नेह के साथ-साथ संगठन की अद्भुत क्षमता विद्यमान है। जहां नारी ने इन्हें अपने व्यक्तित्व निर्माझ में संयोजित किया वहां शिक्षा, व्यवसाय एवं सामाजिक कार्यों में अनेक ऊँचाईयां पाई। बुजर्गों का अनुभव, जवानों का उत्साह, नारी की समझदारी एवं पुरुषों का पराक्रम ये मिलकर चलें तो समाज में चमत्कार हो जाये। परिवार एवं समाज को स्थायित्व देने का दायित्व स्त्री ही निभा सकती है।

विद्वानों के अनुसार पांच वर्ष की आयु में जब बालक पाठशाला जाना प्रारंभ करता है तब तक उसमें वे सभी संस्कार पड़ चुके होते हैं जो आगे चलकर उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं। एक बहुत बड़े चिन्तक ने नारी के संदर्भ में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किये हैं **अगर माता भक्तिवान, श्रद्धावान हो तो उसके द्वारा जो संस्कार बच्चों को मिलते हैं, वह सबसे ज्यादा प्रभावी होते हैं।** जीवन में उत्थान के पहियों को ऐसे ही संस्कार तेजी से खींच पाते है।

एक मनीषी ने तो यहां तक कहा है कि **नारी भोजन के साथ संतान को ममता, पति को आत्मीयता सास ससुर को सेवा, देवर ननद को प्रेम एवं आत्मीयता परोसती है।** ऐसा भोजन गुणकारी और स्वास्थ्यप्रद होता है। जिससे जीवन निरापद एवं निर्भय रहता है।

महात्मा गांधी ने नारी के संदर्भ में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये **यदि नैतिक बल को यथार्थ शक्ति मना जाये तो नारी पुरुष से कहीं अधिक साहिसी एवं कर्मठ है।** क्या नारी से अधिक सहिष्णुता और कहीं है ? उसके बिना तो मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं रह सकता। यदि हमारा कल्याण अहिंसा में है तो हमारा भविष्य नारी के साथ में है।

देवाधिदेव ऋषभदेव ने कर्म भूमि के प्रारंभ में कर्म प्रधान जीवन शैली को अपनाने का उपदेश दिया उन्होंने सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने के लिये असि,मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या लौकिक षट्कर्मों को करने की प्रेरणा दी तथा राज्य व्यवस्था, समाज संगठन और नागरिक सभ्यता के विकास का बीजारोपण किया। कार्य की अपेक्षा से क्षत्रिय, वैश्य, कार्मिक के रूप में श्रम विभाजन का निर्देश दिया। अपने पुत्रों को सभी कलाओं में निपुण किया विशेष रूप में पुत्रियों को भी शिक्षित किया। उन्होंने दोनों पुत्रियों ब्राम्ही एवं सुन्दरी को क्रमशः लिपी एवं अंक विद्या सिखाई। भगवान ऋषभदेव की दी हुई शिक्षा एवं संस्कारों का ही फल था कि उनकी पुत्रियों ने एक संकल्प किया जो नारी शक्ति की वैचारिक दृढ़ता का प्रतीक है। ब्राम्ही और सुंदरी ने अपने जन्म दाता ऋषभदेव के गौरव की रक्षा के लिये ब्रम्हचर्य व्रत लिया। कालान्तर में आदिनाथ भगवान के चतुर्विध संघ में स्त्री पर्याय के उत्कृष्ट पद आर्यिका दीक्षा लेकर आत्म कल्याण के पथ की पथिक बनीं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी की पत्नी सीता जी के जीवन पर दृष्टि डालें तो श्रीराम ने लोकोपवाद के भय से सीता जी को जो वनवास दिया था, सीता जी ने उसे अपने कर्मों का फल मान स्वीकार किया ओर पति श्रीराम को लोकोपवाद के भय से कभी धर्म से विमुख न होने का संदेश कहा यह नारी हृदय की करूणा और धर्म के प्रति आस्था का ही प्रतीक है। मैना सुंदरी के जीवन वृतान्त को जानें तो पता लगता हे कि सती **मैना सुंदरी** अपने पूर्वोपार्जित कर्मों के फल को भोगने की अनिवार्यता जानकर धर्म पर दृढ़ रहकर अपने जीवन साथी (श्रीपाल) की शारीरिक व्याधि कुष्ठ रोग के उपचार में संलग्न रहीं। भगवान महावीर की मौसी राजा चेटक की छोटी पुत्री **चन्दनबाला** का स्मरण करें। युवा अवस्था में ही एक विद्याधर ने उनका अपहरण कर उन्हें निर्जन वन में छोड़ दिया। चन्दना ने धर्म के प्रति दृढ़ता से अपने शील की रक्षा की और संसार से विरक्त होकर आर्यिका दीक्षा लेकर आत्म कल्याण के मार्ग पर लगीं एवं तीर्थंकर महावीर

स्वामी के संघ में प्रधान गणिनी बनी। नारी रत्न अंजना के जीवन में निहारें तो उनके पति राजकुमार पवनंजय की उनके प्रति विमुखता का जिस तरह से उन्होंने सामना किया वह नारी के धैर्य की पराकाष्टा ही तो है। इसी श्रृंखला में आती है **रानी चेलना** मगध के **महाराजा श्रेणिक** की जीवन संगिनी थी। ये वही महाराज श्रेणिक हैं जिन्होंने भगवान महावीर के समवशरण में 60 हजार प्रश्न किये थे। इन्हें सन्मार्ग पर लाने का श्रेय भी चेलना को ही जाता है जिनका हृदय पर कल्याण का भावनाओं से ओत-प्रोत था।

आचार्य कुंदकुंद देव की माता मदालसा जी ने अपने बच्चों को अध्यात्म के वे संस्कार दिये जिनके प्रभाव से उनके पुत्रों ने आठ वर्ष की आयु में दिगम्बरी दीक्षा धारण कर श्रमण संस्कृति को नई उंचाईयाँ प्रदान की।

प्रसिद्ध तीर्थ श्रवणबेलगोला जनमानस के देवता लोक पूज्य **श्री बाहुबली भगवान** की मनोहारी प्रतिमा का निर्माण श्री चामुण्डराय की माता **कालल देवी** के दृढ़ संकल्प एवं अगाध भक्ति का ही परिणाम था। इन्हीं बाहुबली के प्रथम अभिषेक की पूर्णता के लिये जो दैवीय कौतुक हुआ उसे पूर्ण करने के लिये दैदीप्यमान मुख मंडल वाली **गुल्लिका अज्जी** के स्मरण करने से भी नारी शब्द महिमा मंडित है। उसी दक्षिण क्षेत्र में दान **चिंतामणि अत्तिमब्बे** हुई जिन्होंने शास्त्रों की सैकड़ों प्रतियाँ कराकर मंदिरों में स्थापित की और हजारों स्वर्ण जिनबिम्ब नव विवाहित जोड़ों को भेट कर उन्हें प्रेरित किया वे अपने जीवन में एक शास्त्र की पाँच प्रतियाँ करवाकर मंदिरों में अवश्यक रखें। **पट्ट-महादेवी शांतला** का जीवन भारतीय संस्कृति की प्राण धारा के रूप में धार्मिक समन्वय का प्रतीक है। पिता शुद्ध शैव और माता परम जिन भक्त थी वे भी माता की भाँति जिन भक्त निष्ठ थी। महादेवी शांतला के पति महाराजा बिट्टीदेवी जैन धर्म छोड़कर हुये विष्णु भक्त ऐसी परिस्थिति में भी समरसता बनाये रखने वाला संयम और जिनधर्म के प्रति आगाध निष्ठा उनके जीवन में थी।

अब मैं उन महिला रत्नों को नमन करती हूँ जिन्होंने पिच्छी कमण्डलु हाथ में लेकर महाव्रतों की पालना करते हुये हाथ में लेखनी उठाई ओर अपनी रचनाओं से जैन भारती के भण्डार को समृद्ध किया। मैं पूज्य **ज्ञानमती माताजी** को प्रणाम करती हूँ। जिन्होंने समयसार, नियमसार और मूलाचार जैसे महान ग्रंथों के सरल भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किये हैं। उनकी लेखनी से अभी हमे बहुत कुछ मिलने वाला है। पूज्य **सुपार्श्वमति माताजी** को नमन करते हुये मुझे गौरव हो रहा है। माताजी ने मोक्षशास्त्र की विशद व्याख्या करने वाले श्लोक वार्तिलंकार तथा सर्वार्थसिद्धि जैसे महान ग्रंथों को हमारे लिये सरल कर दिया। इष्टोपदेश एवं समाधि शतक की हिन्दी टीका हमें उपलब्ध है। मैं पूज्य परम विदुषी आर्यिका **विशुद्धमती माताजी** के चरणों में नमन करती हूँ जिन्होंने अपनी श्रावक पर्याय में मुझे गोद में बिठाकर शिक्षा और संस्कार दिये थे। विशुद्धमती माताजी ने त्रिलोकसार, क्षपणासार, सिद्धांतसार दीपक और तिलोयपण्णत्ति, जैसे दुरुह तथा गणित प्रधान आगम ग्रंथों का सरल भाषा में अनुवाद करके हम जैसे अल्पज्ञों पर असीम अनुकम्पा की है। विशुद्धमति माताजी ने छत्तीस वर्ष की तपस्या के उपरान्त मरणकण्डिका

ग्रंथ की रचना करके अपनी कीर्ति पर कलशारोहण कर दिया। अंत में परमपूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के अनुशासन में सल्लेखना मरण करके माताजी ने अपनी पर्याय का समापन किया। आज उनकी मानस पुत्री पूज्य आर्यिका प्रशान्तमती माताजी हमारे बीच में अपनी साधना में उनकी कीर्ति कथा कह रही हैं। इन परम विदुषी आर्यिका माताओं के साथ मैं पूज्य आर्यिका विजयमती माताजी, पूज्य आर्यिका स्याद्वादमती माताजी, आर्यिका वर्धितमी माताजी का स्मरा करती हूँ। गोम्मटसार कर्मकाण्ड जी की टीकाकार पूज्य आदिमती माताजी तथा जीवकाण्ड जी की प्रश्नोत्तरी टीकाकार जिनमती माताजी को सविनय नमन करते हुये सभी संयमधारी महिला रत्नों को नमन करती हूँ।

आध्यात्मिक संत पूज्य श्री गणेश प्रसाद वर्णी की धर्म माता सिंघेन चिरौंजा बाई जी जिन्होंने वर्णी जी को पुत्रवत स्नेह एवं संरक्षण दिया उनकी ज्ञान पिपासा की पूर्णता में सहायक बनी। वर्णी जी ने शिक्षा प्राप्त करके बुंदेलखंड में अनेक पाठशालायें एवं विद्यालयों की खोलने की प्रेरणा देकर अज्ञान अंधकार को दूर किया। वर्णी जी ने बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर देते हुये कहा कि यदि कन्या शिक्षित होगी तो दो कुलों में ज्ञान की ज्योति फैलेगी। शिखा के नेत्र में उन नारियों का उल्लेख करना चाहती हूँ। जिन्होंने जैन समाज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

नारी रत्न मगनबाई जी- तीर्थ क्षेत्र कमेटी के संस्थापक सेठ श्री माणिक चंद्र जी जैन (जेटी) की सुपुत्री थी बाहर वर्ष की आयु में मगन बाई जी का विवाह हो गया। उनके पति व्यसनों में लिप्त रहते थे। मगन बाई 19 वर्ष की आयु में विधवा हो गयी। पिता की प्रेरणा से वे धर्म मार्ग पर लगी माँ जिनवाणी के चारों अनुयोगों का गहन अध्ययन किया। अपने घर के एक कमरे में ही बम्बई श्राविकाश्रम एवं विद्यालय की स्थापना की। यह खबर 16 फरवरी 1906 के जैन-गजट में प्रकाशित हुई थी। इनकी प्रेरणा व सहयोग से बम्बई में बारह, बंगाल व बिहार में दो, संयुक्त प्रांत में सात, मध्यप्रदेश में चार, राजपूताना में सात, दिल्ली में दो श्राविकाश्रम और विद्यालय खोले गये। महिला रत्न मगन बाई की सहायिका रही कंकू बाई और ललिता बाई।

नारी रत्न चंदाबाई- उत्तर भारत की प्रथम जागृत महिला बनकर अपने संयम साधना और स्वाध्याय के बल पर अपना विकास कर नारी समाज को सुशिक्षित करने का चंदाबाई ने अपना लक्ष्य रखा। चहुँमुखी व्यक्तित्व की धनी चंदाबाई ने ग्रंथों की रचना कर साहित्य सेवा भी की। जैन बालविश्राम की स्थापना 1921 में हुई थी। जब देश पराधीन, स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा हुआ था महिलायें अशिक्षित थी नारी रत्न चंदाबाई ने नारी जाति को शिक्षित करने का कार्य बड़ी लगन एवं कुशलता से किया। इस संस्था से हजारों बहिनों ने देश के कोने-कोने में तथा मारीशस, कनाडा में भी अपनी सेवायें देकर भारतीय संस्कृति का परचम लहराया।

पद्मश्री पण्डिता सुमतिबाई जी शाह- इन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिये ज्ञान त्योति को घर-घर में जलती रखने के लिये स्वयं को समर्पित किया। श्राविका प्रकाशन विभाग शुरु कर अनेक ग्रंथों का प्रकाशन कराया। महावीर रिर्सच सेंटर की स्थापना करके जैनागम ग्रंथों

के एक समृद्ध ग्रंथालय की स्थापना करके साहित्य सेवा की। क्षुल्लिका राजुलती दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम की स्थापना सोलापुर, महाराष्ट्र 1924 में हुई थी। यह आश्रम अपंग, अनाथ, परित्यक्ता, विधवा महिलाओं तथा बालमंदिर से महाविद्यालय तक में पढ़ने वाली छात्राओं को प्रवेश देता है।

इन्होंने ने अपना जीवन समर्पित करके इस संस्था को अनुपम ऊँचाई तक पहुँचाया। यहाँ संस्कृत भाषा एवं जैनागम के अध्ययन की सुविधा भी है। इस समय चार हजार से अधिक कन्याओं को शिक्षा प्रदान करने वाली यह जैन जगत की अद्वितीय संस्था के रूप में विकसित हो चुकी है। आज तक हजारोंर छात्राओं ने इससे लाभ उठाया है तथा वे आज देश तथा विदेश में भी सम्मानित जीवन बिता रही है। समुतिबाई जी के बाद कर्मठता जी पर्याय बनी ब्रम्हचारिणी बहिन विद्युल्लता शाह ने दीर्घ काल तक सुमतिबाई शाह के सान्निध्य में अध्ययन, अध्यापन, संपादन, पत्रकारिता एवं साहित्य सृजन के माध्यम से मराठी जैन वाङ्मय को समृद्ध किया इन्होंने इस संस्था का जिस कुशलता का साथ संचालन किया है वह अनुपम है और सराहनीय है।

महिला रत्न मनुबाई- कम उम्र में विधवा हो जाने के कारण दुःख में डूबी मानुबाई ने तुकोगंज क्षेत्र के कंचनबाग स्थित श्री दिगंबर जैन श्राविकाश्रम इंदौर में पहुँचकर अपनी कार्य क्षमता से वहाँ की उपसंरक्षिका बन गयी। अपने पुरुषार्थ और आत्मविश्वास से ज्ञान के आलोक से श्राविकाश्रम के हर क्षेत्र को आलोकित किया। केवल आश्रम ही नही जिनमंदिर व समवशरण रचना में इन्होंने तन-मन-धन में सहयोग किया। 16 दिसम्बर सन् 1943 को स्थापित श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविकाश्रम इंदौर अपने गौरव पूर्ण अतीत के लिये देश भर में विख्यात है। यह बाल विधवा और परित्यक्ता महिलाओं का विश्वास आश्रय स्थल है। सभी आचार्यों की शिष्यायें यहाँ रह रही है। श्रद्धा के साथ ज्ञान के विकास के लिये बहनें यहाँ चारित्र की साधना करते हुये आवश्यक व्रतों का पालन भी करती हैं।

श्रीमति मखमली देवी जी- दिगम्बर जैन महिलाश्रम, दरियागंज दिल्ली सन् 1953 में स्थापित हुआ। इस संस्था मुख्य ध्येय महिलाओं को शिक्षण और रक्षण प्रदान करके उन्हें स्वावलंबी बनाने का है। पचास वर्ष से इस संस्थान ने सैकड़ों लोगों को सहारा और सहयोग प्रदान किया है। इस संस्थान की प्रथम जनरल सेक्रेटरी श्रीमती मखमली देवी 36 वर्ष तक सेवा करके इसे प्रगति के पथ पर ले गयी थीं।

विदुषी रत्न ब्रम्हचारणी कमला बाई जी- महिला शिक्षा के लिये समर्पित महाविद्यालय की संस्थापिका संचालिका ब्रम्हचारिणी कमलाबाई जी ने श्री क्षेत्र महावीर में 6 बालिकाओं के साथ नारी शिक्षा का बीजारोपण किया था जो आज बढ़कर स्नातकोत्तर महाविद्यालय का रूप ले चुका है। इस विद्यालय ने क्षेत्र के आस पास की आदिवासी बालिकाओं को जैनधर्म के आदर्शों को आत्मसात कराकर सुसंस्कृत किया है। ब्र. कमलाबाई जी को भारत सरकार द्वारा **स्त्री शौर्य पुरुस्कार** सहित अनेकों पुरूस्कारों से नवाजा जा चुका है।

स्वतंत्रता संग्राम में नारी- अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद कराने में नारियों का

महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्रता संग्राम में जैन महिलाओं का योगदान भी सराहनीय रहा।

श्रीमति कमला जैन- श्रीमति कमला जैन पुत्री श्री किशोरीलाल जैन मलावली ग्राम, तहसील-लक्ष्मणगढ़ (अलवर) ही रहने वाली थीं। उनके पति का छोटी आयु में ही देहान्त हो गया था। उसके बाद अपने देश सेवा का कार्य किया। 1946 में अलवर राज्य प्रजामंडल के आंदोलन **गैर जिम्मेदार मिनिस्टरों कुर्सी छोड़ो** में आपको भी अन्य महिलाओं के साथ पुलिस ने पकड़कर जंगल में छोड़ दिया था। स्वतंत्र भारत में राजस्थान सरकार ने आपको स्वतंत्रता सेनानी घोषित किया है।

श्रीमती कमला देवी-श्रीमती कमला देवी ने राष्ट्रीय आंदोलन में जैन नारियों के गौरव और गरिमा के पद पर सुशोभित कराया। आपका जन्म ललितपुर (उ.प्र.) में 1915 के आसपास हुआ। आपके पति पं. परमेष्ठी दास जी सूरत और साबरमती जेलो में बंद रहे थे तात्कालिक नारी वर्ग को अभिनव दिखा देते हुये राष्ट्रव्यापी 1942 के जन आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और भारत रक्षा कानून की दफा 56 के अंतर्गत जेल में 5 माह रहीं। आपने दफा 144 को भंग करके जूलूसों का नेतृत्व भी किया था। सभाबंदी कानून भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको साबरमती जेल में रहना पड़ा। आप प्रगतिशील विचारों की शिक्षित महिला थी। आपने धर्म न्याय और साहित्य का खूब अध्ययन किया था और कविता लेखन के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त की थी। साहित्यिक प्रतिभा के कारण ही आपको राष्ट्रभाषा कोविद् की उपाधि से अलंकृत किया गया।

श्रीमती अंगूरी देवी जैन- श्रीमती अंगूरी देवी का जन्म 19 जनवरी 1910 को श्री होतीलाल जैन के यहां कासगंज में हुआ। आपने कक्षा 5 तक पढ़ाई की। 22 मई 1922 में आगरा के महान् देशभक्त महेन्द्र जी के साथ आपका विवाह हुआ। उनके पति ने स्वयं उन्हें पढ़ाया और पर्दा छुड़ाकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने साथ सम्मिलित कर लिया। इस समय भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये आग भड़कर उठी थी। अंगूरी देवी को आगरा जिला का चौथा डिक्टेटर नियुक्त किया गया। नमक सत्याग्रह आंदोलन में श्रीमती जैन ने कोतवाली पर धरना दिया, पुलिस के प्रहार के कारण काफी चोटें आयी और छः माह की सजा व जुर्माना हुआ। 1946-48 के मध्य में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे, आपके पति इन दिनों जेल में नजरबंद थे, उनका निर्देश था कि मेरे सभी कार्यकर्ताओं के परिवारों की सहायता व देखभाल करें। इन सब में आप अनवरत लगी रही। घर-घर जाकर उनकी सहायता की साथ ही सक्रिय रूप से आंदोलनों में भाग लिया।

देश की संस्कृति में नारी की हर क्षेत्र में सहभागिता रही है। जैन संस्कृति एवं इतिहास में जीवन के हर पहलू चाहे वह आत्म कल्याण का हो या समाज एवं परिवार के हित का हो अनेक नारी रत्नों ने स्वकल्याणक के साथ-साथ अपने परिवार व समाज के हित के लिये अनेक क्षेत्रों में अपना योगदान दिया।

■ 1 मार्च

-पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर आए टर्म बीजा वाले 19 लोगों को नागरिकता ही।

- जबलपुर रेल मंडल में एक नया स्टेशन कटनी और मेहर की घुनवारा बना।

- हैदराबादः एयरपोर्ट पर कस्टम अधिकारियों ने एक व्यक्ति से 18 लाख का सोना पकड़ा वह सोना बुर्के में छुपाकर रखे था।

■ 2 मार्च

- भारत सरकार ने बताया-यूक्रेन से अब तक 6.200 नागरिकों को वापस लाया गया।

- चीन की राजधानी बीजिंग में होने वाले पैरालंपिक 2022 रूस और बेलारूस के खिलाड़ी भाग नहीं ले सकेंगे।

- ब्रितानी खुफिया एजेंसी ने कहा कीव की ओर जा रहे रूसी काफले की रफ्तार धीमी पड़ गई।

■ 3 मार्च

- रूस ने यूक्रेन के न्यू क्लियर पावर प्लांट पर हवाई हमला किया।

- भागलपुरः एक इमारत में ब्लास्ट हुआ 5 लोगों की मौत और 12 लोग घायल हुये।

- कुलबुर्गी : जिले के अलन्द में दरगाह प्रवेश को लेकर दंगा हुआ 176 लोग गिरफ्तार किये गये।

■ 4 मार्च

- यूरोप के सबवसे बड़े परमाणु संयंत्र पर रूस ने कब्जा किया।

- महान स्पिनर शेनवार्न का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

- पाकिस्तान के पेशावार की एक शियां मस्जिद में जुमे की नमाज के दौरान हुये भीषण आत्मघाती बम विस्फोट में 57 लोग मारे गये और 200 से अधिक लोग घायल हो गये।

■ 5 मार्च

- 5जी तकनीक को उड़ान देने वाला अत्याधुनिक स्वदेशी ड्रोन तैयार हुआ।

- यूक्रेन रूस युद्ध के 10वें दिन दो शहरों के बीच फंसे नागरिकों को बाहर निकालने के लिये रूप से युद्ध विराम घोषित किया।

- भारतीय नौ सेना ने आइ एन एस चेन्नई युद्ध पोत से ब्रह्मास क्रूज मिसाईल का सफल परीक्षण किया।

■ 6 मार्च

- फिलीस्तीन में भारतीय राजदूत मुकुल आर्य की मौत दूतावास में मृत पाये गये।

- श्री नगर के लाल चौक पर ग्रेनेड अटैक आतंकी हमले में 10 लोग घायल हो गये।

- महिला वर्ल्डकपः भारत ने पाकिस्तान को दी मात मिशन वर्ल्डकप का शानदार आगाज।

■ 7 मार्च

- भोपाल रेल्वे नोटिक दिया तो 800 लोगों ने यूनियन कार्बाईट की जमीन पर कब्जा किया।

- रूस और यूक्रेन के युद्ध के बाद क्रू डायल में 44% प्रतिशत की मंहगाई बढ़ी।

- मुरसीदाबाद में बी.एस.एफ के 2 जवानों ने एक दूसरे पार फायरिंग की दोनों की मौत हो गई।

■ 8 मार्च

- देश में 662 दिन के बाद सबसे कम 3993 केस आये।

- समाज सेवी नरेन्द्र जैन टोग्यां को रोटरी इंटरनेशनल के सर्वोच्च सम्मान सर्विस अबब सेल्फ अवार्ड के लिये चुना गया।

- आस्ट्रेलिया के सिडनी में बाढ़ का कहन 66 साल का रिकार्ड टूटा।

■ 9 मार्च

- यूक्रेन ने नाटो की जिद छोडी और रूस ने भी अपना नरम रूख दिखाया।

- सेबी ने एल आई सी के आई पी ओ प्रस्ताव के मंजूरी दे दी।

- वॉरेन वफेट एक बार फिर दुनिया के अमीरों में 5वाँ स्थान बनाया।

■ 10 मार्च

- उत्तरप्रदेश मणिपुर उत्तराखण्ड और गोवा में हुये विधानसभा चुनाव में भाजपा ने जीत हासिल की तथा पंजाब में आप पार्टी ने सबका सूपड़ा साफ कर दिया।

- यूक्रेन और रूस के विदेश मंत्रियों के बीच बातचीत में सहमति नहीं बनी।

- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी एवं पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत चिन्नी एवं पूव्र मुख्यमंत्री केप्टन अमरिन्दर सिंह चुनाव हारे गये।

■ 11 मार्च

- आर एस एस की प्रदर्शनी जिन्ना फोटो लगा लिखा राष्ट्र भक्त थे लेकिन धर्म के नाम पर देश बांटा।

- रूस ने यूक्रेन की राजधानी कीवा चारों ओर से घेरा।

- जबलपुरः एयर इंडिया का विमान फिसला सभी यात्री सुरक्षित निकाले गये।

■ 12 मार्च

- हंदवाड़ा गांदरबाल और पुलवामा में आतंक विरोधी अभियान 24 घंटे चला 4 आतंकी ढेर 9 पकड़ा गये।

- आतंकवाद से जुड़े 8 अपराधियों को सऊदी अरब ने एक ही दिन में फाँसी की सजा दी।

- अहमदाबादः सरदार पटेल स्टेडियम में खेल महाकुम्भ का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

■ 13 मार्च

- भोपालः 4 बांग्लादेशी आतंकी पकड़ाये वे स्लीपर सेल बना रहे थे।

- धौलपुरः सचिन मीणा ने कट्टा रखकर

सेल्फी लेने के चक्कर में मोबाईल का स्वीच दबाने की ट्रिगर दबा दिया सिर के चीथड़े उड़े।

■ 14 मार्च

- विमान सुरक्षा नियामक बीसीएएस ने विमान क्षेत्र के सिख कर्मचारियों को हवाई अड्डा परिसर के भीतर व्यक्तिगत रूप से कृपाण ले जाने की अनुमति दी है।

- उत्तर प्रदेश में भाजपा के केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पर्यवेक्षक बनाया।

- कनाड़ा के ओटारिया प्रांत में एक सड़क दुर्घटना में 5 भारतीय छात्राओं की मौत हुई।

■ 15 मार्च

- उत्तराखंड हाईकोर्ट जितेन्द्र त्यागी उर्फ वसीय रिजवी को भड़काऊ भाषण के मामले में जमानत देने से इंकार किया।

- कर्नाटक हाईकोर्ट ने हिजाब को इस्लाम का अभिन्न हिस्सा मानने से इंकार करते हुये यूनिफार्म कोड़ को बरकरार रखा।

- महाराष्ट्र के केबिनेट मंत्री नबाब मलिक की याचिका हाईकोट मुम्बई ने खारिज कर दी।

■ 16 मार्च

- जापान में भूकंप के जोरदार झटके महसूस किये गये रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 7.3 रही।

- चंडीगढ़ आप के भगवंत मान ने शहीद भगतसिंह के पैतृक गांव खटकड़ कला में पंजाब के 25वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

- जम्मू कश्मीर में श्रीनगर शहर के बाहरी इलाके में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ में तीन आतंकी मारे गये।

■ 17 मार्च

- हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. (एचपीसीएल) ने भी रूस से 20 लाख बैरल सस्ते क्रूड ऑयल की खरीद की।

- मध्यप्रदेश में भाजपा संगठन के सह-संगठन मंत्री का दायित्व संभाल रहे हितानंद शर्मा को नया संगठन महामंत्री बनाया गया।

- अमेरिकी-राष्ट्रपति बाइडेन ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को वॉटर क्रिमिनल कहा।

■ 18 मार्च

- सुखवीर बादल ने अकाली दल के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया।

- यूक्रेन की राजधानी कीव में बम गिरने से भीषण आग लगी।

- नार्वे में नाटो सैन्य का अभ्यास हुआ जिसे रूस युद्ध से जोड़ गया।

■ 19 मार्च

-रूस के राष्ट्रपति प्लादिमीर पुतिन ने अपने पर्सनल स्टाफ के लगभग 1000 सदस्यों हटा दिया।

- बिहार के बेतिया में पुलिस हिरासत में एक व्यक्ति की मोत के बाद गुस्साई भीड़ ने थाना फूंक दिया। पुलिस वाहनों में आग लगा दी और पुलिस कर्मियों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा।

- मान सरकार ने पंजाब में 25 हजार सरकारी नौकरियों को मंजूरी दे दी।

■ 20 मार्च

- पटनाः बिहार राज्य में तीन जिलों में होली के जश्न के दौरान जहरीली शराब पीने से 25 लोगों की मौत हो गई।

- शरद यादव ने अपनी पार्टी (एलजेडी) (लोकतांत्रिक जनता दल) का विलय (आरजेडी) (राष्ट्रीय जनता दल) में दिल्ली में कर दिया।

- बंगाल की खाड़ी में उठा चक्रवर्ती तूफान आसनी आज अंडमान निकोबार के तट से टकराया।

■ 21 मार्च

- उत्तराखंड में पुष्कर सिंह धामी फिर भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री होंगे।

- नई दिल्लीः राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विभिन्न क्षेत्रों की विभूतियों को पद्म अलंकरण से सम्मानित किया।

- चीन में 132 लोगों को ले जा रहा विमान बोइंग 737 क्रेश सभी मरे।

■ 22 मार्च

- कोलकाताः बंगाल में वीरभूमि जिले के रामपुरछाट इलाके में सत्तारूढ़ (टीएमसी) के कब्जे वाली वरशल ग्राम पंचायत के उप प्रधान की हत्या के बाद भड़की हिंसा में दस लोगों की मौत हो गई।

- समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखलेश यादव ने लोकसभा सदस्यता से इस्तीफा दिया।

- इस्लामाबादः पाकिस्मान के सिंध प्रांत एक हिन्दू युवती की सरेआम हत्या कर दी।

■ 23 मार्च

- उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बजरंगबली को दलित बताने के मामले में लखनऊ कोर्ट ने नोटिस भेजा।

- पुष्कर सिंह धामी ने दूसरी बार उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

- नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस रमेशचन्द्र लाहोटी (81) का निधन हो गया।

■ 24 मार्च

- सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक के स्कूल कॉलेजों में हिजाब पहनने पर रोक के खिलाफ दाखिल याचिका पर शीघ्र सुनवाई की मांग ठुकरा दी।

- पुष्कर सिंह धामी सरकार ने उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता (यूनिफार्म सिविलकोड) लागू करने का संकल्प लिया।

- उत्तरप्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद ने प्रदेश के सभी सदस्यों में राष्ट्रगान अनिवार्य कर दिया।

■ 25 मार्च

- उत्तरप्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

- राजस्थान में रीट पेपर लीक मामले में आरोपियों को सजा दिलाए जाने की मांग को लेकर विधायक बलतीज यादव ने 12 घंटे की दौड़ से पक्ष और विपक्ष को हिलाकर रख दिया।

- यूक्रेन ने राजधानी कीव के पास स्थित तीन शहरों को रूसी कब्जे से छुड़ा लिया।

■ 26 मार्च

- भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के समक्ष पाकिस्तान और उत्तर कोरिया के परमाणु मिसाइल गठजोड के खिलाफ अंतराष्ट्रीय करवाई करने की मांग की।

- मारपीट के दस साल पुराने मामले में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह सहित कांग्रेस के छह नेताओं को विशेष न्यायालय ने एक-एक साल कारावास की सजा सुनाई।

- सागरः मध्यप्रदेश के डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में एक मुस्लिम छात्रा ने हिजाब पहनकर नमाज पड़ी।

■ 27 मार्च

- कर्नाटक के शिक्षामंत्री बीसी नागेश ने कहा कि 10वीं बोर्ड परीक्षा के दौरान हिजाब पहनने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

- कोविड महामारी का सामना कर रही अंतराष्ट्रीय उड़ानों को भारत ने बहाल कर दिया।

-2448 किमी. प्रति घंटे रफ्तार वाली मिसाइल का परीक्षण किया गया।

■ 28 मार्च

- वीर भूम हिंसा पर विधान सभा में भाजपा टीएमसी विधायक आपस में भिडे मारपीट में एक टीएमसी विधायक अस्पतला में भर्ती हुये।

- पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने पंजाब के मुख्यमंत्री का इस्तीफा लिया।

- आर आर आर फिल्म ने एक दिन में 500 करोड़ रूपये कमाने रिकार्ड बनाया।

■ 29 मार्च

- म.प्र. माध्यामिक शिक्षा बोर्ड ने 13 जून से सत्र प्रारंभ की घोषणा की।

- असम मेघालय ने 50 साल पुराना विवाद समाप्त हुआ।

- कोरोना पीड़ित होने के बाद इजरायली पी एम बैनेट की भारत यात्रा स्थगित हुई।

■ 30 मार्च

- इस्लामाबादः प्रधानमंत्री इमरान खान को गठबंधन से एम क्यू एम एवं बीएपी ने अपने अलग किया। जिससे उनकी विदाई तय हुई।

- बालासेरः भारत ने दो मध्यम दूरी पर मार करने वाली मिसाइलों का सफल परीक्षण किया।

- अमेरिका में लिंचिग पर 100 साल बाद कड़ा कानून बना जिसमें 30 साल तक की सजा का प्रावधान है।

■ 31 मार्च

- राज्य सभा के 72 सदस्यों को विदाई दी गई बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कहा शराब पीने वाहा हिन्दुस्तानी नहीं महापापी होता है।

- रतन टाटा को भारत रत्न की मांग पर दिल्ली हाईकोर्ट ने फटकार लगाई।

इसे भी जानिये

स्वाधीनता के दस्तावेज

स्वाधीनता संग्राम में सम्बंधित विविध पत्र/पत्रिकाएं एवं पुस्तकें

क्र.	पुस्तके / पत्र	लेखक / सम्पादक
01.	अलहिलाल (पत्र)	मौलाना अबुल कलाम आजाद
02.	अनहेपी इण्डिया	लाला लाजपत राय
03.	अभ्युदय (पत्र)	मदन मोहन मालवीय
04.	अ-नेशन इनकमिंग	सुरेन्द्र नाथ टैगोर
05.	इण्डियन मिरर (पत्र)	केशवचन्द्र सेन
06.	इण्डियन डिवाइडेड	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
07.	इण्डिपेन्डेन्ट (पत्र)	मोती लाल नेहरू
08.	इण्डिया विन्स फ्रीडम	मौलाना अबुल कलाम आजाद
09.	इण्डियन स्ट्रगल	सुभाष चन्द्रबोस
10.	इण्डिया फॉर इण्डियन्स	सी.आर. दास
11.	इण्डियन अनरेस्ट	वेलन्टीन शिरोल
12.	काल (पत्र)	पंराजपे
13.	कांग्रेस का इतिहास	पट्टाभिसीतारमैया
14.	केसरी (पत्र)	बाल गंगाधर तिलक
15.	कॉमरेड (पत्र)	मोहम्मद अली
16.	कर्मयोगी (पत्र)	अरविन्द घोष
17.	गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
18.	तरागे हिन्द	इकबाल
19.	अमृत बाजार पत्रिका	शशिकर कुमार घोष
20.	बागंदरा	मोहम्मद इकबाल
21.	वन्दे मातरम	अरविन्द घोष
22.	भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
23.	भारत भारती	मैथिलीशरण गुप्त
24.	बामबोधिनी	केशवचन्द्र सेन

दिशा बोध

सभ्यता

1. कहते हैं, मिलनसारिता प्रायःउन लोगों में पायी जाती है, जो खुले हृदय से सब लोगों का स्वागत करते हैं।
2. करुणाबुद्धि और शुभ संस्कारों के मेल से ही मनुष्य में प्रसन्न-प्रकृति उत्पन्न होती है।
3. शारीरिक आकृति तथा मुखमुद्रा के मिलान से ही मनुष्यों में सादृश्य नहीं होता, बल्कि सच्ची सादृश्यता तो आचार-विचार की अभिन्नता पर निर्भर है।
4. जो लोग न्यायनिष्ठा और धर्मपालन के द्वारा अपना तथा दूसरों का भला करते हैं, संसार उनके स्वभाव का बड़ा आदर करता है।
5. हास-परिहास में कहे हुए कटुवचन भी मनुष्य के मन में लग जाते हैं, इसलिए सुपात्र पुरुष अपने बैरियों के साथ भी असभ्यता से नहीं बोलते।
6. सुसंस्कृत मनुष्यों के अस्तित्व के कारण ही जगत् के सब कार्य निर्द्वन्द्वरूप से चल रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि ये आर्यपुरुष नहीं होते, तो यह अक्षुण्णसाम्य और स्वारस्य मृतप्रायः होकर धूल में मिल जाता।
7. छुरी तीक्ष्ण भी हो, पर वह युद्ध में लाठी से बढ़कर नहीं हो सकती; ठीक इसी प्रकार आचरणहीन मनुष्य विद्वान भी हो, फिर भी वह सदाचारी से बढ़कर नहीं है।
8. अविनय मनुष्य को शोभा नहीं देती, चाहे अन्यायी और विपक्षी पुरुष के प्रति ही उसका व्यवहार क्यों न हो।
9. जो लोग मन से प्रसन्न नहीं होते, चाहे अन्यायी और विपक्षी पुरुष के प्रति ही उसका व्यवहार क्यों न हो। फिर भी वे प्रशंसा के योग्य नहीं होते।
10. निकृष्ट-प्रकृति पुरुष के हाथ में जो सम्पत्ति होती है; वह उस दूध के समान है, जो अशुद्ध मैले बर्तन में रखने से बिगड़ गया हो।

शरीर और अध्यवसाय आदि भाव जीव के नहीं

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

समयसार ग्रंथ सप्त तत्व व नव पदार्थों का श्रद्धान पैदा करने में अपनी महती भूमिका निभाता है यद्यपि तत्वार्थ सूत्र में इन सात तत्त्वों का वर्णन मिलता है किन्तु समयसार में आध्यात्मिक दृष्टि से आचार्य कुन्दकुन्द देव ने 30 गाथाओं का लेखन करके अजीव तत्व का आध्यात्मिक दृष्टि से विवेचन किया है। इन्हीं गाथाओं को आधार बनाकर आचार्य अमृतचन्द्र जी ने आत्मख्याति एवं आचार्य जिनसेन जी ने तात्पर्यवृत्ति टीका का लेखन किया है दोनों टीकाओं में कई जगह समानता और असमानता देखने को मिलती है इसमें तीन स्थल बनाये गये हैं। शुद्ध निश्चय नय से देह और रागादि पर द्रव्य जीव के स्वरूप नहीं हो सकते हैं पर द्रव्य को आत्म तत्व मानने वाले पूर्व पक्ष का भी उल्लेख किया है और तीसरे स्थल में कर्म भी पुद्गल द्रव्य है ऐसा वर्णादि भाव को पुद्गल द्रव्य माना गया है। ये सब व्यवहार नय से आत्मा के हैं किन्तु निश्चय नय से नहीं हैं।

देह व रागादि पर पूर्व पक्ष- आत्मा को नहीं जानने वाले अज्ञानी पुरुष पर द्रव्य को ही अपना मानते हैं अथवा आत्मा मानते हैं उनमें से कितने ही रागादि (अध्यवसान) को और कर्म को जीव मानते हैं कुछ तीव्र मन्द अनुभाग को जीव मानते हें तो कोई शरीर नौ कर्म को जीव मानते हैं तो कोई कर्म के उदय को जीव मानते हैं तथा कोई कर्म के फल को जो तीव्र और मन्द रूप होता है उसे जीव कहते हैं इस प्रकार परद्रव्य, अध्यवसान, कर्म नौकर्म, कर्म के फल, जीव और कर्म, के परस्पर संयोग, ओर कर्म के उदय को जीव मानते हैं इस प्रकार अज्ञानी जीव अनेक प्रकार की भिन्न-भिन्न कल्पनायें करते हैं वे वस्तु सत्य को जानने वाले नहीं है। ऐसा सर्वज्ञ देव गणधर देव ओर ऋषिगण कहते हैं।

इसी प्रकार अज्ञानी की मान्यता को अपने तर्को से खंडित करते हुये केवली भगवान ने कहा है कि उपरोक्त सभी अवस्थायें पुद्गल का परिणाम हैं तथा इनका संबंध द्रव्य कर्म से होने के कारण ये सब जीव के नहीं हो सकते है अथवा ये सभी अवस्थायें जीव की नहीं कही जा सकती हैं। एवं आठ प्रकार के कर्म ज्ञानावरणी आदि कर्म सभी पुद्गलमय हैं ऐसा जिनेन्द्र देव कहते हैं क्योंकि कर्मों का फल या उनकी उदय रूप अवस्था दुख रूप ही होती है अतः ये सभी कर्म जीव के नहीं हो सकते हैं शुद्ध निश्चय नय से पुद्गल के ही परिणाम हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द देव के इस कथन की व्याख्या करते हुये आचार्य जयसेन जी ने एक प्रश्न खड़ा किया है कि कोइ भी इस कथन पर यह प्रश्न खड़ा कर सकता है कि रागद्वेष आदि अध्यवसाय परिणाम यदि पुदगल के ही हैं तो फिर रागी द्वेषी मोही जीव क्यों होता है क्योंकि अन्य ग्रंथों में जीव को रागी द्वेषी कहा जाता है। इस बात पर आचार्य कुन्दकुन्द देव कहते हैं कि ये सब रागादि अध्यवसान भाव ही हैं ऐसा व्यवहार नय का मत है यह उपदेश जिनेश्वर ने दिया है। इसी विषय को स्पष्ट करते हुये पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा है कि जिस प्रकार अपने सेवकों

और सेना सहित कोई राजा जा रहा है तो उस सारे समुदाय को सामान्य जन यह कह देते हैं कि आज एक किलोमीटर का राजा निकला। जबकि सेना सिपाही आदि राजा नहीं हो सकते हैं परन्तु व्यवहार से इस प्रकार कहा जाता है उसी प्रकार रागद्वेष आदि भाव जीव के नहीं हो सकते हैं परन्तु कंथचित जीव से भिन्न भावों को व्यवहार नय से जीव का कहा जाता है सच में वे जीव के नहीं होते हैं।

इस विषय को आचार्य जयसेन जी ने अपनी टीका के माध्यम से स्पष्ट व्याख्या करने का प्रयास किया है और उन्होंने सभी शब्दों का अनुकरण किया है और उन्होंने एक विशेष बात कही है कि जिस प्रकार स्फटिक में अग्नि का चित्र दिखाई देता है किन्तु वह अग्नि स्फटिक में नहीं होती है इसी तरह से निर्विकार शुद्धात्मा अनुभूति के बल से जीव से रागादि भावों को पृथक किया जा सकता है।

आठ काठ से संयोग से बनी हुई खटिया पर सोने वाला पुरुष उससे भिन्न होता है उसी प्रकार कर्मों के संयोग से पृथक भूत शुद्ध बुद्ध एक स्वभाव वाला जीव होता है व्यवहार नय से बहिर द्रव्य का अवलम्बन लेने के लिये कारण व्यवहार नय अभूतार्थ होता है और रागादि बहिर द्रव्य के अवलम्बन से रहित विशुद्ध ज्ञान दर्शन स्वभाव के अवलम्बन से सहित परमार्थ का प्रति पादक होने से इस व्यवहार नय का कथन करना आवश्यक होता है क्योंकि व्यवहार नय को सर्वथा भुला दिया जाये तो शुद्ध निश्चय नय से त्रस और स्थावर जीव का भेद होता ही नहीं है। अतः फिर लोग निडर होकर त्रस-स्थावर जीव का मर्दन करने लगेंगे ऐसी स्थिति में पुण्य रूप धर्म का अभाव हो जायेगा और एक बड़ा दूषण आयेगा।

शुद्ध निश्चय नय से तो जीव रागद्वेष मोह से रहित पहले से ही है अतः मुक्त ही है ऐसा यदि माना जाये तो फिर कोई मोक्ष के लिये अनुष्ठान क्यों करेगा अतः मोक्ष का भी अभाव हो जायेगा। यह दूसरा बड़ा दूषण आयेगा इसीलिये व्यवहार नय का व्याख्यान करना परम आवश्यक है।

पंडित जयचंद जी छावड़ा का भावार्थ- परमार्थ नय तो जीव को शरीर और रागद्वेष मोह से भिन्न कहता है। यदि इसी का एकान्त किया जाये, तब शरीर तथा राग-द्वेष मोह पुद्गलमय ठहरे और तब पुद्गल के घात से हिंसा नहीं हो सकती और रागद्वेष मोह से बंध नहीं हो सकता। इस प्रकार परमार्थ से संसार और मोक्ष दोनों का अभाव हो जायेगा ऐसा एकान्तरूप वस्तु का स्वरूप नहीं है। अवस्तु का श्रद्धान, ज्ञान और आचरण मिथ्या अवस्तु रूप ही है। इसलिये व्यवहार का उपदेश न्याय प्राप्त है। इस प्रकार स्याद्वाद से दानों नयों विरोध मेंटकर श्रद्धा करना सम्यक्त्व है।

आचार्य अमृतचन्द्र सूरि द्वारा समान व्याख्या- आचार्य अमृतचन्द्र देव ने इसी तरह की व्याख्या नय के संदर्भ में इसी तरह की व्याख्या की है। विशेषता यह है कि आपने म्लेच्छ भाष में म्लेच्छों को समझाने की बात उठाई है तथा व्यवहार नय को धर्म तीर्थ की प्रवृत्ति करने के लिये न्याय संगत बताया है तथा हिंसा के अभाव और मोक्ष के अभाव होने से दोनों दूषण व्यवहार नय नहीं मानने पर लागू होते हैं।

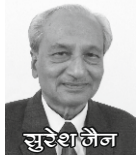

क्रमांक-15 वरिष्ठ नागरिक

बुजुर्गों की बढ़ती आबादी-घटता सपोर्ट

हमारे देश में माता-पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है। अगर यह कहा जाये कि माता-पिता को भगवान से बढ़कर दर्जा दिया गया है तो गलत न होगा, माता-पिता अपने बच्चों का पालन पोषण करने के लिये हर दुःख तकलीफ सहते हैं, खुद भूखे रहकर अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते हैं ताकि बच्चों का भविष्य अच्छा हो, यहां तक अपनी जमां पूंजी भी बच्चों में लगा देते हैं, लेकिन आज के बच्चे अपना भविष्य बनाते ही माता-पिता का भविष्य अंधकार में डाल देते हैं, यदि विदेशों में गये हैं तो पलटकर कभी अपने माता-पिता को देखा नहीं। उनको छोड़ देते हैं दर-दर की ठोकरें खाने के लिये, कुछ बच्चे तो अपने माता-पिता के साथ नौकरों जैसा व्यवहार करते हैं या बुढ़ापे में वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं।

बुजुर्गों की बढ़ती आबादी

- अनुमान है कि ई. सन् 2050 तक कुल भारतीय आबादी का 25 फीसदी हिस्सा 60 साल से ज्यादा उम्र का होगा।
- 10 फीसदी बुजुर्ग असंगठीत सेक्टर से हैं।
- 50 फीसदी बुजुर्ग गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं।
- बाकी एक तिहाई गरीबी रेखा से ठीक ऊपर।
- 73 फीसदी पढ़े लिखे नहीं है।
- 75 फीसदी बुजुर्ग ग्रामीण इलाकों में रहते हैं।
- 60 साल से अधिक उम्र की 50 फीसदी महिलायें विधवा है।

मॉडनीईजेशन, माईग्रेशन और इंड्रस्ट्रिलाइजेशन के कारण बुजुर्गों में फैमली सपोर्ट घटता जा रहा है।

देश की तमाम सरकारी एजेंसिया सीनियर सिटीजन के कल्याण के लिये कई कार्यक्रम चलाती हैं।

यह सीनियर सिटीजन कल्याण के लिये जिम्मेदार नोडल एजें सी हैं, मंत्रालय ने बुजुर्गों के लिये एक नेशनल पॉलिसी का ऐलान करके कहा है कि बुजुर्गों की देखभाल देश की जिम्मेदारी है और उनका जीवन असुरक्षित नहीं है।

सभी मंत्रालय और राज्यों से कहा गया है कि सीनियर सिटीजन के लिये समान 60

साल की उम्र की सीमा अपनाई जाये।

पंचायती राज संस्थाओं, समाजसेवी संगठनों के साथ सहयोग करके ओल्र्ड ऐज होम बनायें जायें।

योग विकास मंत्रालय-

नेशनल ओल्ड ऐज पेंशन स्कीम के तहत 65 साल से ऊपर के जरूरतमंद लोगों 250 रूपये प्रतिमाह की सहायता, जिस पर समय समय पर विचार भी होगा।

जिन्हें पेंशन नही मिल पा रही है। ऐसे जरूरतमंद ग्रामीण बुजुर्गों को हर महीने 10 किलो अनाज दिया जायेगा।

अन्य सुविधायें-

इन्कम टैक्स एकट सेक्शन 88वी, 88डी और डी डी बी के तहत सीनियय सिटीजनों को टैक्स में राहत दी गई।

लाईफ इंश्योरेंस कार्पोरेशन ऑफ इंडिया ने बुजुर्गो के लाभ के लिये कई स्कीमें चलाई हैं।

सरकार की कल्याणकारी नीति के अनुसार सरकारी स्कीम के तहत बनने वाले मकानों का 10 फीसदी अर्बन और रूरल स्थानों पर बुजुर्गों को दिया जाये।

ई. सन् 2007 में केन्द्र सरकार द्वारा माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण नागरिकों को राहत मिली है, लेकिन क्या उस युवा पीढ़ी को इस पर कोई आत्मचिंतन नहीं करना चाहिये जिसने यह स्थित उत्पन्न कर दी कि कानून निर्माताओं को देश के वृद्धों को सुरक्षा एवं भरण पोषण हेतू कानून की ढाल करनी पड़ी।

दिसंबर 2007 में संसद में जो मेटिनेस ऑफ पेरेन्ट एण्ड सीनियर सिटीजन बिल-2007 पास किया है, उसका सारांश इस प्रकार है। सिनियर सिटीजन एक्ट पूरी दुनिया में लागू है। भारत में इसे संशोधित कर सीनियर सिटिजन एक्ट 2007 का नाम दिया गया है। यह एक्ट बुजुर्गों के अधिकारों एवं उनकी सुरक्षा को लेकर है। कुछ लोग अपने बुजुर्ग माँ-बाप को बेसहारा छोड़ देते हैं, जबकि उनकी सुरक्षा और निर्वाह उनका दायित्व है। इस एक्ट के तहत बुजुर्ग अपने बच्चों के नासम की गई प्रॉपर्टी को दोबारा अपने नाम ट्रांसफर कर सकते हैं। इसके लिये डी.एम. को शिकायत देने पर बुजुर्गों द्वारा अपने बच्चों के नासम की गई प्रॉपर्टी दोबारा उनके नाम हो जायेगी। यहीं नहीं बुजुर्गों के निर्वाह और सुरक्षा सुनिश्चित करने के आदेश भी डी.एम द्वारा दिये जाते हैं। उसका उल्लंघन करने पर सश्रम कारावास 3 महिने की जेल एवं जुर्माना या दोनो हो सकते हैं।

श्रुत पंचमी यानी ज्ञानामृत पर्व

✻ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✻

दिगंबर जैन परंपरा के अनुसार प्रति वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी तिथि को श्रुत पंचमी पर्व मनाया जाता है। इस दिन जैन आचार्य धरसेन के शिष्य आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबलि ने षटखंडागम शास्त्र की रचना की थी। उसके बाद से ही भारत में श्रुत पंचमी को पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। इस दिन भगवान महावीर के दर्शन को पहली बार लिखित ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया गया था। पहले भगवान महावीर केवल उपदेश देते थे और उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) उसे सभी को समझाते थे, क्यों कि तब महावीर की वाणी को लिखने की परंपरा नहीं थी। उसे सुनकर ही स्मरण किया जाता था इसीलिये उसका नाम श्रुत था।

जैन मुनियों के अनुसार श्रुत पंचमी पर्व ज्ञान की आराधना का महान पर्व है, जो जैन भाई-बंधुओं को वीतरागी संतों की वाणी सुनने, आराधना करने और प्रभावना बांटने का संदेश देता है। इस दिन मां जिनवाणी की पूजा अर्चना करते हैं। जैन समाज में इस दिन का विशेष महत्व है। इसी दिन पहली बार जैन धर्मग्रंथ लिखा गया था। भगवान महावीर ने जो ज्ञान दिया, उसे श्रुत परंपरा के अंतर्गत अनेक आचार्यों ने जीवित रखा। गुजरात के गिरनार पर्वत की चन्द्र गुफा में धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत एवं भूतबलि मुनियों का सैद्धांतिक देशना दी जिसे सुनने के बाद मुनियों ने एक ग्रंथ रचकर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को प्रस्तुत किया।

एक कथा के अनुसार 2,000 वर्ष पहले धर्म जैन धर्म के वयोवृद्ध आचार्यरत्न परम पूज्य 108 संत श्री धरसेनाचार्य को अचानक यह अनुभव हुआ कि उनके द्वारा अर्जित जैन धर्म का ज्ञान केवल उनकी वाणी तक सीमित है। उन्होंने सोचा कि शिष्यों की स्मरण शक्ति कम होने पर ज्ञान वाणी नहीं बचेगी। ऐसे में मेरे समाधि लेने से जैन धर्म का संपूर्ण ज्ञान खत्म हो जायेगा। तब धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत एवं भूतबलि की सहायता से षटखंडागम शास्त्र की रचना की, इस शास्त्र में जैन धर्म से जुड़ी कई अहम जानकारियां हैं। इसे ज्येष्ठ शुक्ल की पंचमी को प्रस्तुत किया गया। इस शुभ मंगलमयी अवसर पर अनेक देवी-देवताओं ने णमोकार महामंत्र से षटखंडागम की पूजा की थी।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इस दिन से श्रुत परंपरा को लिपिबद्ध परंपरा के रूप में प्रारंभ किया गया। उस ग्रंथ को षटखंडागम के नाम से जाना जाता है। इस दिन से श्रुत परंपरा को लिपिबद्ध परंपरा के रूप में प्रारंभ किया गया था। इसीलिये यह दिवस श्रुत पंचमी के नाम से जाना जाता है। इसका एक अन्य नाम प्राकृत भाषा दिवस भी है।

श्रतु पंचमी के दिन धर्मावलंबी मंदिरों में प्राकृत, संस्कृत, प्राचीन भाषाओं में हस्तलिखित प्राचीन मूल शास्त्रों भंडार से बाहर निकालकर, शास्त्र भंडारों की साफ-सफाई, करके प्राचीनतम शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से उन्हें नये वस्त्रों में लपेटकर सुरक्षित किया जाता है तथा इन ग्रंथों को भगवान की वेदी के समीप विराजमान करके उनकी पूजा-अर्चना करते हैं, क्योंकि इसी दिन जैन शास्त्र लिखकर उनकी पूजा की गई, क्योंकि उससे पहले जैन ज्ञान मौखिक रूप में आचार्य परंपरा से चल रहा था। इस दिन जैन धर्मावलंबी पीले वस्त्र धारण करके जिनवाणी की शोभा यात्रा निकालकर पर्व को मनाते हैं, साथ ही अप्रकाशित दुर्लभ ग्रंथो/शास्त्रों को

प्रकाशित करने के उद्देश्य से समाज के लोग यशाशक्ति दान देकर इस परंपरा का निर्वाहन किया।

श्रुत पंचमी के पवित्र दिन मंदिरों और अपने घरों में रखे हुये पुराने ग्रंथों की साफ-सफाई कर, धर्मशास्त्रों का जीर्णोद्धार करना चाहिये। उनमें जिल्द लगानी चाहिये। शास्त्रों और ग्रंथों के भंडार की साफ-सफाई करके उनकी पूजा करना चाहिये।

ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले इस श्रुत पंचमी के दिन बड़ी संख्या में जैन धर्मावलंबी चांदी की पालकी पर जैन धर्म के प्राचीन ग्रंथ रखकर गाजे-बाजे के साथ मां जिनवाणी तथा धार्मिक शास्त्रों की शोभायात्रा निकालते हैं तथा उन पर फूलों की वर्षा करते हैं। इस यात्रा में जैन धर्म में आस्था रखने वाले लोग सम्मिलित होते हैं और भाग लेते हैं।

इस दिन शक्ति के साथ भक्ति चाहिये और भक्ति के साथ शक्ति। इसी तरह श्रद्धा के साथ प्रेम चाहिये। अगर केवल शक्ति हो तो वह विनाश का कारण हो सकती है। भक्तिविहीन शक्ति और श्रद्धा विहीन भकित व्यर्थ है। रावण के पास शक्ति तो थी मगर भक्ति नहीं। जिसके कारण उसका सब कुछ मिट्टी में मिल गया।

कई जैन मंदिरों में ज्ञान के विकास के लिये आगम अनुसार मंत्रित ब्राम्ही शंखपुष्पी और मुलहठी का वितरण भी किया जाता हे। जैन धर्मावलंबियों द्वारा श्रुत पंचमी को ही ज्ञानामृत पर्व भी कहते हैं।

जैन समाज में इस दिन का विशेष महत्व है। उसी दिन पहली बार जैन धर्मग्रंथ लिखा गया था। भगवान महावीर ने जो ज्ञान दिया, उसे श्रुत परंपरा के अंतर्गत अनेक आचार्यों ने जीवित रखा। गुजरात के गिरनार पर्वत की चन्द्र गुफा में धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत एवं भूतबलि मुनियों को सैद्धांतिक देशना दी जिसे सुनने के बाद मुनियों ने एक ग्रंथ रचकर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को प्रस्तुत किया।

इस पुण्य दिवस पर जैन आगम ग्रंथों की सुरक्षा के साथ इस दिन सभी मंदिरों में नियमित पाठशाला का संचालन हो ताकि आगामी काल में बालक बालिकाएं धरम की बुनयादि शिक्षा प्राप्त कर धर्म के अभाव कारण उनमें पढ़ने की रूचि नहीं रहेगी।

कविता

सुखाभास

✻ डॉ. राजेन्द्र मलैया, नमन ✻

इंद्रिय सुख सुख नहीं है, सुख आभास।
पर्व के व्रत होते सदा आत्मा के पास ॥
भकित में रमे रहो पापों से बचोगे आप ।
समता के परिणाम से होता पापों का नाश॥
मन को फीका ना करो कितना स्वास्थ्य खराब ।
आत्मा होता अमर, जावे आयु कर्म अपने आप॥
पूजन भजन करते चलों देते रहो जाप।
पुन्य तो बढ़ा रहेगा हो ना पाये पाप॥

कहानी

हीरा मणि

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

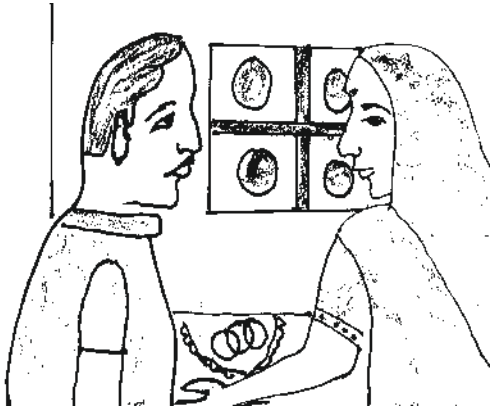

रात के 12 बज रहे थे आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे चन्द्रमा की पूर्णता आसमान के मध्य में अपनी सत्ता स्थापित कर रही थी। चन्द्रमा की शोभा उस तरह से हो रही थी जैसे तीर्थंकर के चारों तरफ मुनि परिषद होती है ठीक उसी प्रकार चन्द्रमा के चारों तरफ तारों की परिषद थी नक्षत्र और तारे अपनी प्रभा का अस्तित्व प्रगट करने के लिये टिमटिमा रहे थे परन्तु वे भूल रहे थे सूरज के सामने दीपक कितना भी तेज जल जाये परन्तु वह अपना अस्तित्व प्रगट नहीं कर पाता है ठीक उसी प्रकार तारे भी अपना अस्तित्व प्रगट करने में असफल हो रहे थे।

रात गहराती जा रही थी चिंतामणी खर्राटके लेकर सो रही थी किन्तु पं. हीरालाल सिद्धांत शास्त्री करवटें बदल रहे थे उनकी आँखों में नींद नहीं आ रही थ्ज्ञी उन्हें षटखण्डागम धवल टीका का सम्पादन करना था। परन्तु यह कठिन कार्य मौलिक और प्रमाणिक रूप से करना चुनौति पूर्ण कठिन कार्य था इस कार्य को पूरा करने के लिये बहुत सारे ग्रंथों को संग्रहीत करना पहली आवश्यकता थी कई रातें उनकी आज की तरह करवटें बदलने में बीत गई। प्राकृत भाषा में ग्रंथ था प्राकृत भाषा में एक सबसे बड़ी समस्या होती कि विभक्तियों के अनेक विकल्प होते थे। किसी शब्द का प्रमाणिक अर्थ प्राप्त करने के लिये जरूरत थी राजेन्द्र अभिधान कोश की उसे प्राप्त करना था सात भागों में निबद्ध राजेन्द्र अभिधान कोश पं. हीरालाल जी की सबसे बड़ी चुनौती थी क्योंकि वे अत्यंत स्वाभिमानी थे किसी से दान लेना पसन्द नहीं करते थे अपनी मेहनत की कमाई पर उन्हें ज्यादा विश्वास था परन्तु कालचक्र का ऐसा फेरा होता है कि मुश्किलें दर मुश्किलें जीवन के द्वार पर दस्तकें देती रहती है तीन शादीयां होने के बाद भी तीन पत्नीयों का वियोग जिन्होंने

झेला हो और चौथी पत्नी चिंतामणी दामपत्य जीवन की सहभागनी बनी हो उस चिंतामणी को सचमुच में वे चिंतामणी ही मानते थे लेखन कला के कुशल शिल्पी पं. हीरालाल सिद्धांत शास्त्री व्यापार और खेती से दूर रहकर कागज और कलम पर विश्वास रखते थे वे माँ जिनवाणी की सेवा करना चाहते थे तथा गृहस्थी की नौका खेना एक विद्वान के लिये कितना कठिन होता हे इसका वे अनुभव कर रहे थे।

जब हीरालाल जी करवटें बदल रहे थे तभी चिंतामणी की नींद खुल गई और चिंतामणी ने उनसे पूछा **क्यों अभी तक सोये नहीं ?** हीरालाल जी ने एक जमाई लेकर कहा **हूँ** और करवट दूसरी तरफ बदलकर आँख बंद करने की कोशिश की और बनावटी खर्राटें लेने लगे चिंतामणी को समझते देर न लगी और वह भी चुपचाप खर्राटे लेकर सो गई पं. हीरालाल जी ने धीरे से पलंग से उठकर लालटेन जला ली और कागज कलम लेकर लिखना प्रारंभ कर दिया श्रीयुत अग्रज जुगल किशोर जी मुख्तार साहब।

आत्मीय अभिवंदन आप कुशल होगें, आपका स्वाध्याय ठीक से चल रहा होगा, आपको उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ, अपरंच में यहाँ पर कुशल हूँ।

आपके द्वारा सौंपा हुआ धवल ग्रंथ के सम्पादन का कार्य अभी रूका हुआ है क्योंकि अभी तक राजेन्द्र अभिधान कोश की व्यवस्था नहीं हो पा रही है मैं बहुत कोशिश कर रहा हूँ कि शीघ्र ही यह ग्रंथ उपलब्ध हो जयेगा और षटखंडागम की धवल टीका कार्य शीघ्र ही गति को प्राप्त होगी ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है ।

मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि कठिन से कठिन श्रम करके तय समय पर सम्पादन कार्य पूर्ण कर दूँगा आपका ही हीरालाल।

जब हीरालाल पत्र लिख चुके थे तब घड़ी में रात के 4 बज चुके थे। चिंतामणि की नींद खुल गई उन्होंने रोज की तरह अपने विस्तर को समेटा तथा बच्चों को जगाना शुरु कर दिया बच्चे सब अपनी अपनी पढ़ाई में लगे और चिंतामणि ने अपने हाथ पैर धोकर चिटाई बिछाई और सामायिक करने बैठ गई।

सामायिक पूर्ण होने के बाद उन्होंने देखा आसमान में चांद पीला सा पड़ गया है तारे धीरे धीरे लुप्त से हो रहे है। छोटे-छोटे काले बादलों के टुकड़े सूरज को रोकने का प्रयास कर रहे हे परन्तु सूरज कहाँ रूकने वाला था वह तो धीरे धीरे ऊपर चढ़ता जा रहा है पक्षियों का मनमोहक कलवर ओर कोयल की कूँक वातावरण को मधुर बना रही थी। बाहर से आती महुआ मिश्रित ठंडी सुगंध जन मन में उत्साह भर रही थी तभी रामकीर्तन की मंगल ध्वनि गाँव की गलियों में धर्म रस को घोल रही थी।

चिंतामणि ने सबसे पहले अपना झाड़ू उठाया और आँगन से लेकर चबूतरा तक अच्छी तरह से साफ सुथरा कर दिया फिर

गोबर से आँगन चबूतरे सभी लीप दिये और उनमें भी सफेद छुइ की कुची को खूब अच्छी तरह से सजा दिया। उस दिन चैत्र की प्रतिपदा थी।

जब चिंतामणि हीरालाल के फैले हुये कागज पत्रा को रोज की तरह व्यवस्थित कर रही थी तभी उसके हाथ जुगलकिशोर मुख्तार साहब को लिख पत्र हाथ लग गया। स्नान कर जब हीरालाल जी बारह निकते तो चिंतामणि को पत्र पढ़ते हुये देख कुछ सफपकाये और जोर जोर से णमोकार पढने लगे। जब उन्हों ने देखा चिंतामणि पूरा पत्र पढ़ लिया है तब फिर कुर्ता धोती पहनकर तथा अपनी टोपी सम्हाल मंदिर जाने वाले ही थे कि चिंतामणि ने पं. हीरालाल जी को रोका और बोली सुनो ये पत्र आपने जो लिखा इसमें आपकी क्या समस्या हल हो जायेगी पंडित जी ने कहा समस्या हल तो नहीं परन्तु उनको धवल टीका के सम्पादन रूकने का कारण तो उन्हें मालूम चल जायेगा और मैं किसी को भी अंधेरे में नहीं रखना चाहता हूँ। नहीं वो सोचेंगे कि धवल टीका का सम्पादन कार्य चल रहा है पता चला कि कोल्हू के बेल जैसा जहाँ का तहाँ रहा।

ये धवल टीका क्या है बड़े भोले पन से चिंतामणि ने हीरालाल जी से पूछा हीरालाल जी कहा चिंतामणि तो इतनी पढ़ी लिखी तो हो नहीं जी तुम धवल टीका क्या है इसे समझ सको और मेरे सहयोग कर सको

देखो जी मैं कम जरूर पढ़ी हूँ और आपकी कृपा से शास्त्र तो पढ़ लेती हूँ पद्म पुराण भी मैंने पूरा पढ़ लिया है आपने ही तो मुझे एक बार कहानी सुनाकर समझाया था कि छोटा भी कभी बड़े काम का निकल जाता है।

वो कहानी आपको याद होगी जब एक जंगल में एक बार एक शेर सो रहा था उस पर एक चूँहा आकर खेलने गया तो शेर की नींद खुल गयी और शेर ने चूँहे को पकड़ लिया बोला बेटा तूने अपनी मौत को बुला लिया है। अब तेरी जान थोड़ी ही देर में जाने वाली है।

तब चूँहे ने शेर से प्रार्थना कि और कहा शेर राजा मुझे छोड़ दे मैं कभी तुम्हारे काम आऊँगा। यह सुनकर शेर खूब जोर से हँसा और बोला तू इतना छोटा सा चूँहा मेरे क्या काम आयेगा चल जा कहकर शेर ने चूँहे को अभयदान देकर छोड़ दिया।

एक दिन किसी शिकारी के जाल में शेर फँस गया तब चूँहे को मालूम चला कि मेरा शेर राजा जाल में फँस गया है।

तब दौड़ा दौड़ा चूँहा आया और अपने नुकीलें दाँतो से जाल को काट दिया और शेर को शिकारी के चंगुल से छुड़ा दिया।

आप अपनी सुनाई हुई कहानी भी भूल गये मैं बुद्धि कम जरूर हूँ पर किसी दिन कैकई की तरह आपके बड़े काम आऊँगी। अब आप बताइये धवल टीका क्या है ?

पं. हीरालाल जी ने कहा लगभग 2000 वर्ष पूर्व हमारे महान दिगम्बर जेनाचार्य धरसेन हुये उनसे शिक्षा आचार्य पुष्पदंत और भूतबलि ने एक महान ग्रंथ षटखंडागम की रचना की थी जिसमें जीव

स्थल खंड, छुद्रकबंध खंड, वेदना खंड, वर्गणा खंड और बंध स्वामित्व विचय और महाबंध जैसे छह खंड थे। इन छह खंड के मिलन से षटखंडागम ग्रंथ की रचना हुई। इसी ग्रंथ की व्याख्या करने के लिये पूज्य आचार्य वीरसेन जी प्राकृत भाषा में धवल टीका लिखी। धवल टीका 1000 वर्ष पहले हुआ था ये सब ग्रंथ वाडयंत्र पर लिखे हुये मूलबिद्री तीर्थ पर सुरक्षित रखें हुये थे। जिनके लोग मात्र दर्शन करके पुण्य कमाते थे। सेठ माणिकचंद जौहरी ने इनकी प्रतिलिपि करायी तो प्रति करने वाले शास्त्री जी ने दो प्रतियाँ कर ली जिसकी एक प्रति सहारनपुर में स्थापित कर दी गई। पूज्य पं. जुगलकिशोर जी ने प्रयास किया कि षटखंडागम ग्रंथ मात्र अब दर्शन तक सीमित नहीं रहना चाहिये इनकी वाचना भी होनी चाहिये अतः इनके सम्पादन करने का कार्य मुझे और डॉ. हीरालाल जी सौंपा गया। अब इनका सम्पादन करने में कई ग्रंथों का सहयोग लगेगा। मैंने बहुत सारे ग्रंथ तो संग्रहीत कर लिये है परन्तु एक बहुत महंगा ग्रंथ सात भाग में जिसकी मुझे काफी आवश्यकता है उसके खरीदने की व्यवस्था नहीं हो या रही है। और मेरी बुद्धि भी काम नहीं कर रही है कि मकान बेचकर ग्रंथ खरीदूँ या फिर मकान को गिरवी रख दूँ।

चिंतामणि ने बीच में ही टोक दिया कि मकान गिरवी रखकर कर्ज लेने की बात मैं उचित नहीं समझती हूँ क्योंकि कर्ज पर ब्याज लगेगा और उसे चुकाने में तो मेरे बच्चे भी बर्बाद हो जायेंगे क्योंकि सूदखोरों को तो कोई दया होती नहीं है।

चिंतामणि तुम सही कह रही हो मेरे मित्र ये धनश्यामदास जी ने एक बार गोष्ठी में पहेली पूँछी थी कि वह कौन है जो रात दिन चलता रहता है कभी रूकता नहीं है सभी मित्रों ने अपने अपने तरीके से उत्तर दिये ओर अंत में उत्तर सही निकला कि वह तो ब्याज है। मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ।

मुझे आज बहुत खुशी हो रही कि पहली बार आपने मेरी बात मान तो ली।

तो फिर हम क्या मकान बेच कर राजेन्द्र अभिधान कोश खरीदें ?

चिंतामणि ने कहा मकान बेच तो दोगे पर ये बताओं कि आप किस छाया में बैठकर ग्रंथ का सम्पादन करोगे।

कोई किराये का मकान ले लेंगे।

परन्तु किराया कहाँ से भरोगे यह भी तो सोचो। आज कल किराया कम थोड़े ही लगेगा तो फिर क्या करे पंडित जी ने बड़ी निराशा के साथ कहा।

चिंतामणि ने अपने हाथ की सोने की चूड़ियाँ उतार दी अंगूठी उतार कर पंडित जी के सामने रख दी और कहा इनको बेच दो और ग्रंथ खरीद लो मुझे गहने पहनने का शोक नहीं है।

पंडित हीरालाल जी ने अपनी पत्नी के गहने बेचकर राजेन्द्र अभिधान कोश खरीदा और धवल टीका का सफल सम्परादन किया। और जिनशासन प्रभावना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में परमार्थ प्रतिक्रमण

✻ एलक सिद्धांतसागर जी महाराज ✻

जैन साधना पद्धति में प्रतिक्रमण का विशेष महत्व है क्योंकि अपने किये हुये दुष्कृव्यों से लौटकर सत्कर्म में लग जाना ही प्रतिक्रमण है प्रति+क्रमण= प्रतिक्रमण। अर्थात् प्रति माने उन्हें अर्थात् वापिस क्रमण अर्थात गति करना तात्पर्य यही हुआ कि अपने आत्म स्वरूप से समझकर विभाव पर्याय से स्वभाव पर्याय की ओर लौटना सच्चा प्रतिक्रमण है।

शुद्ध आत्म स्वरूप में सकल विभावों का अभाव आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार के अंतर्गत जब परमार्थ प्रतिक्रमण की विवेचना को प्रारंभ किया तो प्रथमतः पर्यायों का अभाव सुनिश्चित कर दिया इसी आधार पर भेद विज्ञान का क्रम आगे बढ़ाते हुये निश्चय चारित्र की दिशा सुनिश्चित कर दी वे सत्रह विभाव पर्यायें इस प्रकार हैं-

1. नरकगति 2. तिर्यंचगति 3. मनुष्यगति 4. देवगति 5. क्रोध 6. मान 7. माया 8. लोभ 9 जीवस्थाव 10. गुणस्थान 11 . मार्गणास्थान 12. राग 13. द्वेष 14. मोह 15. बाल 16. युवा 17. वृद्ध। इन सत्रह विभाव परणतियां निश्चय नय से नहीं होती हैं परन्तु व्यवहार नय से होती है प्रतिक्रमण व नाम लौटना।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने प्रतिक्रमण की रूपरेखा निश्चित करते हुये कहा है कि जो वचन रचना को छोड़कर रागादि भावों का निवारण करके जो आत्मा का ध्यान करता है वही प्रतिक्रमण है तथा विराधना को छोड़कर आराधना की ओर लौटना एवं अनाचार से आचार भाव में स्थिर हो जाने का नाम प्रतिक्रमण है उन्मार्ग से जिनमार्ग में लौटना और स्थिर हो जाना शल्य भाव से लौटकर निशल्य भाव में परिणति करना तथा अगुप्ति भाव से लौटकर गुप्ति भाव में आ जाना एवं आर्त रौद्र ध्यान को छोड़कर धर्म अथवा शुक्ल ध्यान में लीन हो जाना।

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र से लौटकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र में लग जाना तथा मिथ्यात्व आदि परिणति से लौटकर सम्यक्त्व आदि परिणति में लीन हो जाना एवं सब दोषों को त्यागकर ध्यान में लीन होने का नाम की प्रतिक्रमण है आत्मार्थ आत्म तत्व ध्यान करने से ही प्रतिक्रमण की प्राप्ति होती है।

प्रतिक्रमण का उपसंहार करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा है कि प्रतिक्रमण पद्धति सूत्र ग्रंथों में जिस प्रकार की गयी है उसी प्रकार भावना पूर्वक जो भाता है उसे प्रतिक्रमण प्राप्त होता है।

क्या प्रतिक्रमण विषकुम्भ ही है- समयसार ग्रंथ में मोक्ष अधिकार के अंतर्गत प्रतिक्रमण प्रतिसरण परिहार धारणा निवृत्ति निन्दा गर्हा शुद्धि इन्हें विषकुम्भ कहा है किन्तु नियमसार की गाथा 92 की टीका करते हुये आचार्य पद्ममलधारी देव ने कहा है- निश्चयोत्तमार्थ प्रतिक्रमण स्वात्माश्रय निश्चय धर्म शुक्ल ध्यान मयत्वाद मृतकुम्भ स्वरूपं भवति।

व्यवहारोत्तमार्थ प्रतिक्रमणं व्यवहार धर्मध्याननमयत्वाद्विषकुम्भ स्वरूपं भवति।

निश्चय उत्तमार्थ प्रतिक्रमण स्वाश्रित है ऐसे निश्चय धर्मध्यान तथा निश्चय शुक्ल ध्यान होने से प्रतिक्रमण अमृत कुम्भ है किन्तु मुनिजनों को व्यवहार उत्तमार्थ प्रतिक्रमण व्यवहार धर्म ध्यान होने से विषकुम्भ स्वरूप है कहा है कि जहां प्रतिक्रमण को ही विषकुम्भ कहा गया है वहाँ अप्रतिक्रमणं अमृतकुण्ड जैसे होगा अर्थात् नहीं होगा।

यत्र प्रतिक्रमणमेव विषं प्रणीतं।
तत्रा प्रतिक्रमणमेव सुद्या कुतः स्यात्।
तत्किं प्रमाद्यति जनः प्रपतत्रद्योडत्रः।
किं नोर्ध्वमूर्ध्वमधिरोहति निष्प्रमादः।।

अतः सिद्ध होता है कि गृहस्थ शुभ उपयोगी मुनि के लिये अशुभ उपयोग से बचने के लिये प्रतिक्रमण अमृत कुम्भ है जो शुद्धोपयोग में लीन है उन मुनियों के लिये प्रतिक्रमण का विकल्प विषकुम्भ है।

कविता

भारत भूमि का भक्त चाहिये

✻ रचयिताः सुभाषचंद्र सरल, अशोकनगर ✻

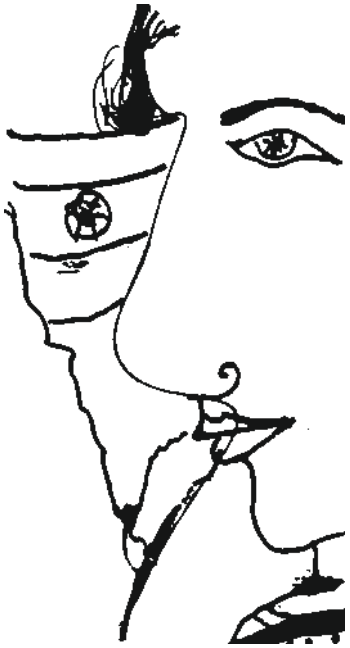

सीना छप्पन इंच है, आज सिद्ध हो गया
370 से भिन्न था हिस्सा आज अभिन्न हो गया
आतंकवाद स्वंमेव ही, अब खत्म हो जायेगा
भारत का कश्मीर प्यारा, अब अभिन्न हो जायेगा

राष्ट्र का हिस्सा होकर भी, नहीं तिरंगा लहराता था
राष्ट्र का कोई नागरिक, मालिक बनकर, नहीं रह पाता था
औद्योगिक इकाइयों के टोटे से, पिछड़ गया कश्मीर हमारा
370 की बाड़ लगाकर, अपनों को पराया कर डाला

ऐसे नेता नहीं चाहिये तो राष्ट्र को हक भी न दे पायें
झूठें नारों के बल, भोली जनता को भरमायें
370 की बाड़ लगाकर, भारत माँ की चूनर काटें
न्यारा संविधान बनाकर, भारत भूमि की मर्यादा बाँटे

ऐसे नेता नहीं चाहिये, जो बन्दन बांट की रोटी खायें
छल फरेब के पासं लेकर, भ्रष्टाचार से मौज मनायें
ढ़ीला पोला नहीं चलेगा, सरदार सरीखा सख्त चाहिये
धीर वीर गम्भीर विवेकी, भारत भूमि का भक्त चाहिये।

हमारे गौरव

अमर शहीद अमरचंद बांठिया

अमरचंद बांठिया के पूर्वज बांठिया गोत्र के आदि पुरुष श्री जगदेव पंवार (परमार) क्षत्रिय ने 9-10 वीं शताब्दी (एक अन्य मतानुसार जगदेव के पुत्र या पौत्र माधवदेव/माधवदास ने बारहवी शताब्दी) में जैनाचार्य भावदेव सूरि से प्रबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार किया था और ओसवाल जाति में शामिल हुये थे। कुछ इतिहासकार विक्रम की 12वीं शताब्दी में रणथम्भौर के राजा लाल सिंह पंवार के पुत्रों द्वारा जैनाचार्य विजय वल्लभ सूरि से प्रतिबोध पाकर जैनधर्म अंगीकार कर लेने से उनके ज्येष्ठ पुत्र बंठ से बांठिया गोत्र की उत्पत्ति मानते हैं । कुछ इतिहासकार माधवदेव द्वारा दानवीरता की अनुकरणीय परम्परा का श्री गणेश करने के कारण (धनादि को बांटने के कारण) बांटिया=बांठिया उपनाम की प्रसिद्धि मानते हैं। स्पष्ट है कि अमरचंद जी को दानवीरता का गुणजन्मजात ही मिला था। अमरचंद बांठिया का परिवार व्यापार/व्यवसाय हेतु सन् 1835 (वि.सं. 1892) में फल वृद्धि (फलौदी) में भूमि से प्रकट हुई चिन्तामणी पार्श्वनाथ की प्रतिमा के चल समारोह में अनेक संघपतियों के परिवार के साथ बीकानेर से ग्वालियर आया और यहीं बस गया प्रतिमा की प्रतिष्ठा ग्वालियर के हृदय स्थल सर्राफा बाजार के शिखर बन्द जिनालय में संवत् 1893 में हुई थी।

अमरचंद के दादा का नाम खुशालचंद एवं पिता का नाम अबीरचंद था। अमरचंद अपने सात भाइयों (श्री जालमसिंह, सालमसिंह, ज्ञानचंद, खूबचंद, सवलसिंह, मानसिंह, अमरचंद) में सबसे छोटे थे।

बांठिया जी की दैनिक चर्या बड़ी नियमित थी। प्रातः उठकर जिनेन्द्र देव की अर्चना और यदि कोई मुनि/साधक विराजमान हों तो उनके उपदेश सुनना समय पर कोषालय जाना, सूर्यास्त के पूर्व भोजन और रात्रि 9 बजे शयन उनके यांत्रिक जीवन के अंग थे।

अमरचंद बांठिया से प्राप्त आर्थिक सहायता से क्रांतिकारियों के हौसले बुलंद हो गये और उन्होंने अंग्रेजी सेनाओं के दांत खट्टे कर दिये और ग्वालियर पर कब्जा कर लिया।

रानी लक्ष्मीबाई के गौरवमय ऐतिहासिक बलिदान के चार दिन बार ही 22 जून 1858 को ग्वालियर में ही राजद्रोह के अपराध में न्याय का ढोंग रचकर लश्कर के भीड़ भरे सर्राफा बाजार में ब्रिगेडियन नैपियर द्वारा नीम के पेड़ से लटकाकर अमरचंद बांठिया को फांसी दे दी गयी।

आचार्य श्री एवं संयम स्वर्ण महोत्सव के संदर्भ में

✻ ब्र. संगीता दीदी, जबलपुर ✻

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तदबहुत्व कथा स्तुतिः।
आनन्त्याते गुणा बक्तु मशक्यास्त्वयि सा कथम्॥

स्वयंभू स्त्रोत में आचार्य संतभद्र स्वामी ने स्तुति की परिभाषा यह बतायी है कि गुणों का उल्लंघन कर अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन करना। किंतु जिनके गुण इतने हों कि उनका वर्णन करने के लिये शब्द भी कम पड़ जायें, वाणी भी असमथ्र हो जाये, ऐसे महापुरुष की स्तुति कैसे की जाये ? युग पुरुष, श्रमणसूर्य, अनगार संस्कृति के उन्नायक चारित्र के शिखर पुरुष, जन जन के आराध्य, अतिशय योत्री, संतों के संत प्रातः रमणीय पूज्यपाद आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज निःसंदेह ऐसे ही अनुत्तर योगी हैं ।

उनके गुणों की स्तुति कहां से शुरु करें एवं कि न शब्दों में की जाये, ये हम अल्पज्ञानियों के लिये दुरुह एवं असंभव सा कार्य है।

बंदुले हर बोलों के मुंह, अब तो यही कहानी है।
कर्नाटक के संत ने कीनी, धन्य हमारी जबानी है।

बंधुओं आज हम सब का परम सौभाग्य है कि हम सब इस पंचम काल के परम आगम निष्ठ, निर्दोष चर्या के धनी, जन नायक, तीर्थोद्धारक, युग प्रणेता, आचार्य गुरुदेव का यशोगान उनके स्वर्णिम संयम वर्ष में करने के लिये एकत्रित हुये हैं ।

इस युग का सौभाग्य रहा है, गुरुवर इस युग में जन्में
हम सब का सौभाग्य रहा है हम गुरुवर के युग में जन्में

सत्य तो है, ये हमारा परम सौभाग्य ही तो है। उस पर हम सब व्रती अत्यंत सौभाग्यशाली है तो गुरुवर ने हम सबको मोक्षमार्ग पर बढ़ने एवं चलने की भावना को स्वीकार कर हम सबको कृतार्थ किया, हम सब गुरुदेव के अनंत ऋणी है।

इस पंचम काल में अनेक योगी आचार्य पद से सुशोभित हैं किन्तु आचार्य पद जिनमें सुशोभित है ऐसे महान साधक आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज हैं। आज हम सब उन महान आचार्य के गुणानुवाद के लिये एकत्रित हुये हैं ।

बुंदेलखंड में तो गुरुदेव ने धर्म का डंका ही बजा दिया है। अपने संयमी जीवन को बहुत बड़ा भाग बुंदेलखंड में व्यतीत कर बुंदलेखंड को तपस्वियों की भूमि बना दिया। जैसे कि मैने पहले ही कहा। बुंदेले हर बोलो के मुंह कलिकाले चले चित्तो, देहे चान्नादि कीटकें।

कहते हे इस पंचम काल में चित्त की स्थिरता होना ही अत्यंत कठिन है उसमें भी हीन संहनन के कारण यह शरीर अन्य का क्रीडा है। उस पर भी जो महान आत्मायें जिनेन्द्र भगवान के इस दिगंगर रूप को धारण करती है वो धन्य है।

हम सबके परम आराध्य गुरुदेव ने सन् 1968 जून में संयम को स्वीकार किया एवं आज अपने इस मनुष्य जन्म की उपलब्ध सर्वोच्च अवस्था में विराजमान है। एवं 50 वर्ष संयमी जीवन

निर्दोष रूप से पावन किये हैं।

बंधुओं वस्तुतः वर्ष तो एक संख्या मात्र है किन्तु निर्दोष निरतिचार रहते हुये, धर्म की पताका एवं यश को दिक् दिगंत तक फहराते हुये पूर्ण करना बहुत बड़ी बात है। हमने उनके जीवन को निकट से देखा है और जो लोग उन्हें निकट से जानते हैं वो सभी इस बात से भली भांति अवगत होंगे कि गुरुदेव अपने व्रतों में सदैव सावधान एवं पूर्ण समर्पित रहते हैं। आज जहां सर्वत्र देखने में आता है कि स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर व्रती लोग भी अपने आवश्यकों में ढील कर देते है लेकिन कितनी भी प्रतिकूलता क्यों नहीं आ जाये गुरुदेव अपने मूलगुणों एवं आवश्यकों के प्रति पूर्ण सजग एवं निरतिचार पालन करने के लिये कटिबद्ध दिखाई देते हैं ।

एक बार गुरुदेव को अत्यधिक बुखार आने पर शिष्यों ने गुरुदेव से पूछा कि गुरुदेव आप कम से कम आज बैठकर सामायिक कर लेते। इस पर गुरुदेव ने कहा कि यदि बैठ जाऊँगा तो तुम लोग लेट जाओगे।

स्वयं को उदाहरण बना देने वाले और अपनी उत्कृष्ट चर्या से अपने शिष्यों का मार्ग प्रशस्त करने वाले महान आचार्य वास्तव में इस युग में विराजमान है यह हम सबका सातिशय पुण्य ही है।

आज भी ठंड के मौसम में किसी कमरे आदि में रूकने के स्थान पर गुरुदेव हाल या दालान में रूकते हैं स्वयं को परीषहों के द्वारा तपाने की जो ललक गुरुदेव में दृष्टि गोचर होती है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

गुरुदेव के शिष्य एक युवा मुनि महाराज न हमें बताया कि वर्ष 2006 में जब ठंड के महिने में आचार्य श्री जी कुण्डलपुर पहुँचे। अत्यधिक ठंड थी।

सभी साधु वहां के संत भवन के कमरों में ठहरे। किंतु जब शाम हुई गुरुदेव बाहर दालान में ही बैठे रहे, तब सब समझ गये गुरुदेव बाहर ही रात्री में रहेंगे-

उन महाराज ने बताया कि हम युवा मुनि कमरे के भीतर थे, गुरुदेव जो कि उस लगभग 60 वर्ष के थे बाहर थे। ये सोच कर ही हमे शर्म आने लगी धीरे-धीरे अन्य साधक भी बाहर सोने की साधना करने लगे। वास्तव में हम युवा साधु भीतर रहकर भी बाहर थे। गुरुदेव बाहर रहकर भी अपने भीतर थे।

बंधुओं कैसा महान तरीका है शिष्यों को मार्ग दिखाने का स्वयं चलते हैं और बिना उपदेश दिये स्वयं आचरण करके अपने शिष्यों को चलाने का उपदेश चर्या से देते हैं।

अदभुत हैं गुरुदेव- आईये उनके अनंत गुणों मे से कुछ गुणों का स्मरण कर हम सब अपने जीवन को उपकृत करें।

आचार्य श्री बालयोगी- पूज्यपाद गुरुदेव स्वयं प्रारंभ से ही साधू प्रकृति के धनी है एवं दीक्षा के उपरांत विशाल बालयति संघ उनके इसका स्वयं परिचायक है।

आचार्य भगवन परमयोगी- ब्र. अवस्था से ही रसों का त्याग एवं सूपर्ण साधू जीवन में नीरस आहार लेने वाले पूज्यवर कठोर साधना से संपन्न है। सदैव परिषहों को सहन करने वाले, श्रमण परंपरा के पर्याय बन चुके गुरुदेव के हम सब साक्षी है।

गुरुदेव अनियत बिहारी- इस विषम पंचम काल में भी अनियत विहार करना अत्यंत

दुर्लभ कार्य हे किंतु हम सभी जानते हैं कि गुरु जी अपने किसी भी कार्य की पूर्व सूचना किसी को नहीं देते।

गुरुदेव कैसे है मन मोहक- गुरुदेव छोटे बाल की भांती निर्धिकार एवं मनमोहक है। यदि आप उन्हें गमन करते देखे तो आपको एक नन्हें बाल का चलता याद आ जायेगा उनकी एक मुस्कान जन समूह में आनंद का संचार कर देती है।

तुममे कैसा सम्मोहन या है कोई जादू टोना।
जो दर्शन आपके कर लेता, नहीं चाहे कभी विलग होना।

काल तीर्थंकर है गुरुदेव- हमने तीर्थंकरों को तो इस जन्म में नही देखा किन्तु गुरुदेव के जीवन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस कालिकाल में तीर्थंकर समान ही है। तीर्थंकरों जैसा प्रमाध, शताधिक शिष्य-शिष्यायें, हर दर्शन करने वालो को आल्हाद प्रदान करने वाले, जंगल में भी मंगल कर देने वाले गुरुदेव की जितनी भी स्तुति की जाये।

गुरु का हाथ सिर पर हो, तसल्ली दिल को मिलती है।
सबकी नाव पानी में अपनी तो रेल पर चलती है।।

कैसे होते हैं सच्चे साधू- ये हम सब का हृदय जानता है कि यदि साधू पहले के कालों में भी होते होगें तो ऐसे ही होते होंगे। महाव्रतों के प्रति पूर्ण सजग, अनुशासन निष्ठ, निस्पृह, निरीह वृत्ति वाले साधू है गुरुदेव।

आचार्य भगवन आल्हाद कारक है- कहते हैं कि चतुर्थ काल में जिनके घर साधू के आहार होते वहाँ पंच रत्न दृष्टि हो जाती थी।

आप सब अपने हृदय से पूछकर बताइये कि जितने भी सौभाग्य शाली श्रावकों में पूज्य गुरुदेव की अंजुलि में एक ग्राम भी दिया हो उन्हें देने के बाद कैसा अनुभव होता है क्या उस दिन आप घर में आनंद नहीं मनाते, ढोल नहीं बजबाते। अवश्य संपूर्ण समाज में अपने आनंद का गान करते हुये, अपनी शक्ति अनुसार दान करने के भाव सहज ही आ जाते है।

ग्रंथों की परिभाषा के मूर्तरूप है गुरुदेव- जैसा की पूज्यपाद स्वामी ने सर्वाथ सिद्धी ग्रंथ में साधु का लक्षण बताते हुये लिखा है अवाक वपुषा मोक्षमार्ग निरूपयति। जो स्वयं मौन होते हुये भी अपने शरीर से, अपनी चर्या से मोक्ष का उपदेश देते हैं।

वास्तव में गुरुदेव ग्रंथों में साधु एवं आचार्य के लिये वर्णित समस्त परिभाषाओं का मूर्ति रूप है।

तमोनमित विद्विषे -वीर भक्ति में वणित यह विशेषण ऐसे लगता है मनो तीर्थंकरों के अलावा आचार्य श्री जी के लिये ही बनाया गया है। इसका अर्थ है कि विरोधियों द्वारा भी नमस्कार को प्राप्त है।

हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि कुछ लोग दूर से ही गुरुदेव के दर्शन किये बिना भ्रांतिवंश विरोध कर लेते है तो विरोध त्याग कर संतुष्ट हो जाते हैं । जो इससे भी संतुष्ट नहीं होते है, तो गुरुदेव यदि उनकी ओर देख ले तो संतुष्ट हो जाते हैं। जो इससे भी संतुष्ट नहीं हो, उन्हें यदि गुरुदेव हाथ उठाकर आशीर्वाद वे तो संतुष्ट हो जाते हैं। जो इससे भी संतुष्ट नहीं होते तो गुरुदेव जब उनकी तरफ देखके एक बार मुस्कुरा दे तो संतुष्ट हो ही जाते हैं ।

ऐसे परम वीतरागी, अध्यात्म सरोवर की राजहंस चारित्र चूड़ामणि संतसम्राट गुरुदेव की कितनी स्तुति करूँ। शब्द कम है गुण अनंत।

कौन माँ नही चाहेगी कि उसका बोध गुरुदेव जैसा न बने।

ऐसे महानतम आचार्य के इस संयम स्वर्ण महोत्सव को मनाकर हम सभी उनके रत्नत्रय की कुशलता की कामना करें उनके संयम की अनुमोदना करें अपने जीवन में उनके आदर्शों का संभव अंशों में पालन करें यही मंगल भावना है।

वक्तव्य के अंतिम शब्द- **फूल फलों से जो लदे, धनी हांव के वृक्ष।**
शरणागत की शरद दें , श्रमणों के अध्यक्ष।

हमारे भगवान लोकेषणा से अतिदूर- लोक में प्रतिष्ठा सम्मान, आत्म प्रभावना से कोसों दूर ऐसे अनुत्तर योगी की प्रभावना में स्वयं देव संलग्न रहते हैं।

आचार्य श्री कैसे - आगम निष्ठ यदि आचार्य को सही रूप में जो जानते हैं वो इस बात को अवश्य ही जानते होंगे कि गुरुदेव प्रत्येक कार्य आगम के आलोक में ही करते है।

उनका देखों, कहना अनियत विहार, चान्द्रीचर्या, बिना घोषणा के दीक्षाएँ देना आदि इस बात के कुछ प्रमाण पत्र है। जैसा कि विद्यानंद जी महाराज

गुरुदेव महाकवि है- भाव प्रधान पुरुष प्रायः कवि ही होते है। भावलिङ्गि गुरुदेव तो महाकवि है। जिन्होंने मूक रहने वाली माटी को भी शब्द देकर महाकाव्य मूकमाटी का सृजन किया। शताधिक ग्रंथों की रचना, पद्यानुवाद आदि उनके साहित्य ज्ञान के उदाहरण मात्र है।

क्या प्रिय है गुरुदेव को- मौन

जो बात गुरुदेव को सर्वाधिक प्रिय है वह है मौन। सदैव मौन रहने का प्रयास करते और जब कुछ निर्देश देना हो तो हित-मित-प्रिय वचनों से ही संपन्न करते है।

हाईकू
मिथ्यात्व

एकता में ही
अनेकांत फले सो
एकान्त देख

दृष्टि पलट दो
तामस समता हो
और कुछ ना

नय-नय है
विनय प्रमुख है
मोक्षमार्ग में

समर्पण पे
कर्त्तव्य की कमी से
संदेह न हो

ज्ञान की प्यास
सो कहीं अज्ञान से
घृणा तो नहीं

तीर्थंकर महावीर की अहिंसक क्रांति से विश्व में शांति संभव

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

जैन परम्परा के वर्तमान शासन नायक 24वें अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का ईसा से 599 पूर्व कुण्डलपुर (बिहार) में राजा सिद्धार्थ एवं माता रानी त्रिशला के यहाँ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को जन्म हुआ था। वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी आपको जाना जाता है। 30 वर्ष तक राजप्रसाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ। भगवान महावीर सहज साधक थे। किसी प्रकार के प्रदर्शन या उपचार का उनकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं था। भगवान महावीर जन साधारण के बीच रहे और साधारण रूप में रहे। भारतीय संविधान की सुलिखित प्रति के 63वें पृष्ठ पर भगवान महावीर की तप में लीन मुद्रा का एक चित्र अंकित है।

भगवान महावीर के दर्शन के तीन सिद्धांत **अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह** बहुत - सी आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। इन्होंने अनेकांत सिद्धांत का आदर्श लेकर मानवतावाद की जड़ मजबूत की। विचारों की टकराहट से ही विभिन्न धर्मों में परस्पर द्वेष किया जाता रहा है। भगवान महावीर ने अनेकांत दृष्टिकोण द्वारा इसका समाधान किया है। इसके अंतर्गत जिसमें सत्याग्रह, व्यापकता, उदारता, सहिष्णुता, अहिंसा, एकता आदि गुण प्रकट होंगे, वह विकास करता हुआ नर से नारायण बन जायेगा। भगवान महावीर ने हमें अनेकांत दृष्टि देकर वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराया है। साथ ही हमारे भीतर वैचारिक-सहिष्णुता और प्राणीमात्र के प्रति सदभाव का बीजारोपण भी किया है। इस तरह का उपदेश सार्वभौमिक और विश्व शांति की ओर ले जाने वाला है। उनके सर्वोदय एवं साम्यवादी सिद्धांत स्वस्थ समाज, राष्ट्र एवं विश्व का नव-निर्माण कर सकते हैं। भगवान महावीर का जीवन मानवीय मूल्यों की स्थापना की एक अनवरत और शाश्वत ज्योति की कहानी है।

शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा: महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है। जैनाचार्य अमृतचंद्र जी ने हिंसा-अहिंसा के विवेक को सूत्ररूप में पहले रखा है, फिर उसकी व्याख्या की है। वे कहते हैं कि रागादि भावों की उत्पत्ति हिंसा है और शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा है -

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेप।।44।।

जैनसिद्धांत में प्रमतयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा अर्थात् प्रमाद के योग से प्राणों का नष्ट करना हिंसा कहा गया है।

प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना: महावीर के अनुसार परम अहिंसक वह होता है, जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जो सब जीवों को अपने समान समझता है। ऐसा आचरण करने वाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। आत्मानः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत् इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिये अपेक्षा करते हैं। उनकी अहिंसा की परिभाषा में सिर्फ जीव हत्या ही हिंसा नहीं है, किसी के प्रति बुरा सोचना भी हिंसा है।

महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित: भगवान महावीर के उपदेशों को आज नये संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। हम जहां-तहां खनिजों की खोज में पृथ्वी को खोद रहे हैं, जल और वायु को प्रदूषित कर रहे हैं, पर्यावरणविद् स्थावरों की इस हिंसा से चिंतित हैं। विकास के नाम पर विलासता बढ़ रही है और साथ ही अमीर और गरीब के बीच की खाई भी बढ़ रही है। अहिंसा के महानायक महावीर स्वामी ने जल, वृक्ष, अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। उन्होंने अहिंसा की विशुद्ध व्याख्या करते हुये जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उद्घोष किया। उनके सिद्धांतों पर चलकर हमें वृक्ष बचाओ संसार बचाओ उक्ति को अमल में लाना होगा। प्रकृति और पर्यावरण के विरूद्ध चलने से भूकंप, सुनामी, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है।

जियो ओर जीने दो: आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। ताजा उदाहरण यूक्रेन और रूस के मध्य चल रहा युद्ध है, दोनों देश लड़ रहे हैं जिसमें अपार जन-धन की हानि भी हो रही है। भगवान महावीर का प्रमुख सूत्र था- जियो और जीने दो। किसी भी रूप में हिंसा अशांति ही फैलायेंगी। शांति के लिये अहिंसक जीवन शैली अत्यंत आवश्यक है।

हम बड़े-बड़े बमों, आणविक शक्ति से देश में शांति की स्थापना का सपना पाल बैठे हैं। मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूँ विश्व को आतंकवाद जैसी भयंकर बुराई पर काबू पाने के लिये तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकांत-स्याद्वाद के सिद्धांत को अपनायें तो सार्थ हल निकल सकता है। आज समाज आधुनिक तो हुआ है, पर इस सफर में मानवता झुलसी है, नहीं तो क्या वजह है कि परिवार हो या समाज या फिर राष्ट्र, हर जगह राग-द्वेष व हिंसा के भाव ने विभन्नि रूपों में विस्तार लिया है, न वाणी पर संयम और न स्वयं पर नियंत्रण ऊहापोह भरे इस वक्त में भगवान महावीर के विचार रोशनी देते हैं। हिंसा की ज्वाला से जूझ रहे विश्व को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के शीतल जल से ही उसे राहत मिल सकती हे। परमाणु खतरों और आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के दर्शन से ही बचाया जा सकता है।

आज जरूरत इस बात की है कि शत्रुता का अंत हो जाये और विश्व में शांति स्थापित हो, क्योंकि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। मैत्री और करूणा से ही मानव के मन में, घर में, नगर और देश तथा विश्व में शांति और सुख, अमनचैन की धारा बहती है। पूरे देश-विदेश में भगवान महावीर जन्म कल्याणक अगाध श्रद्धा-आस्था के साथ मनाया जाता है।

पैंक्रियाज (अग्नाशय) स्वास्थ्य जीवन का राज

✻ संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर ✻

यह एक पाचन व अंत स्त्रावी प्रणाली की ग्रंथि है जो भोजन के पाचन के लिये उपयोगी एन्जाइम का निर्माण कर भोजन को शरीर के लिये ऊर्जा में परिवर्तित करने का काम करती है व शरीर के स्वास्थ्य का नियंत्रण करती है। पैंक्रियाज लगभग 7 इंच लम्बा 2 इंच चौड़ा जो हथोड़ी के आकार का जिसका वजन 120 से 145 ग्राम पीला गुलाबी रंग व किसी ढ़कने के अंदर नहीं रहता। यह ग्रथियों के गुच्छे का बना होता है जो डियोडिनम से निकलकर तिल्ली तक जाता है इसके तीन भाग होते हैं । **1. पैंक्रियाज का सिर-** यह सबसे चौड़ा, **2. धड़-** ग्रंथि का मुख्य भाग जो उदर के पीछे लम्बर बटिब्रा के सामने स्थित रहता है। **3. पूंछ-** यह बाई ओर का संकीर्ण भाग है जो तिल्ली को छूता है। यह मुख्य नली जो पित्त नली के पास डियोडिनम में मिलती है जिसमें पैक्रियाज रस इसी नली से डियोडिनम में मिलता है।

पैक्रियाज यह दो कार्य करता है **1. पाचन कार्य-** पैक्रियाज से निकले रस से आटा, मैंदा, आलू इत्यादि स्टाचों और श्वेत सारमय खाद्य को पचाकर चीनी या सुगर तैयार करता है। इसके अतिरिक्त चर्बी जातीय खाद्य जैसे मक्खन, घी, तेल इत्यादि जो खाते हैं वे सब चीजें इमलसन के रूप में परिवर्तित करके पाचन नली में शोषित होने का कार्य करती है।

2. अंतस्त्रावी कार्य- पैक्रिययाज आइलेट्स आफ लेंगरहेन्स बनाती है जिसने इन्सुलिन बनता है जो डायबिटीज विरोधी हार्मोन है जो शरीर के कोषों द्वारा ग्लूकोज तथा चिकनाई के उपयोग व सोखने की गतिविधियों पर नियंत्रण रखता है तथा इसे बनाये रखते हुये पाचक रसों व इन्सुलिन के प्रबंधन को सफलता पूर्वक चलाता रहता है। इन्सुलिन शरीर में अधिक ग्लूकोज होने को बाहर निकालने में भी मदद करता है।

पैक्रियाज निरापद कार्य करता है किन्तु गौण रूप से निकट अंगों के योगों के कारण होता है, जिसमें मलेरिया, टाइफाइड, बुखार, यकृत, किडनी, पित्ताशय आदि में रोग होने पर प्रभावित होता है। पेशाब में चीनी निकलने, पीठ में दर्द रहने पर पैक्रियाज में कोई न कोई रोग की संभावना बढ़ जाती है जिसमें

1. पैक्रियाज के नवीन रोग- इसमें सारी भोजन प्रणाली में जलन, मुंह से लार टपकना व मल में चिकनाई निकालना व चिकनाई के कण पाये जाते हैं, पतले जलन वाले दस्त जो पैक्रियाज के क्षीण होकर तेल रूप धारण करने से होता है।

2. पेनक्रियाटाइटिस- पैक्रियाज की सूजन होती है यह शीघ्र व तीव्र या दीर्घ स्थाई हो सकती है इसमें दर्द, भोजन के प्रति अरूचि, व्याकुलता उल्टियां होती है व डायविटीज भी हो सकती है।

3. पैक्रियाज का कैंसर- डायविटीज के साथ पाचक प्रबंधन असफल होने पर व सर्जरी ही इसका इलाज है व जिसका उपचार बाहरी इन्सुलिन द्वारा किया जा सकता है।

इत्याधिक शराब, तम्बाखू, चाय, काफी, क्विनाइन व अन्य ऐलोपैथी दवाईयाँ व स्टेराडयुक्त औषधियों का अधिक उपयोग, मलेरिया या किसी बुखार का चिकित्सा में असावधानी, कोरोना के वायरस भी पैक्रियाज को प्रभावित कर सकते हैं , पित्ताशय की पथरी, जंकफूड, ज्यादा वसा व तैलीय भोजन, देर रात्रि में भोजन करना, हार्निया, अनियमित जीवन शैली, तनावयुक्त जीवन, हार्मोनल बदलाव, प्रदूषण, मोटापा, आरामदायक जीवन आदि कारण है।

सावधानियाँ- पैक्रियाज की कोशिकाओं को हर समय नम रहने की आवश्यकता होती है अतः हर दिन 8-10 गिलास पानी हर मौसम के आवश्यक है। 1. खीरा, तरबूज, पालक, मूली, टमाटर, मौसमी फलों का अधिक उपयोगी करना चाहिये। 2. जंकफूड, अधिक वसा युक्त भारी भोजन, देर रात्रि में भोजन पैक्रियाज पर विपरीत प्रभाव डालता है। 3. नियमित जीवन शैली, व्यायाम योग, तनाव युक्त व परहेज से नियंत्रण रखें।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज व परहेज से रोगों पर नियंत्रण हो सकता है। होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में बैलडोना, कार्बोबेज, लाइकोपोडियम, आइरियवर्स, फासफोरस, आयोडम, कोनायम, सल्फर, थूजा, जिंकम मर्क आयोडाइड आदि औषधियों का उपयोग रोग के लक्षणों के आधार पर अनुभवी चिकित्सक की सलाह से करना चाहिये।

पैक्रियाज उदर-गुहा के ऐसे स्थान में रहता है जिसकी आसानी से उसकी परीक्षा नहीं की जा सकती है अतः अनुभवी चिकित्सक से सलाह व चिकित्सा कराना आवश्यक है।

शरीर के इस विशिष्ट अंग की सुरक्षा से ही शरीर को स्वास्थ्य रखने में महत्पूर्ण योगदान है। कहावत है मन चंगा तो कठोती में गंगा यही स्वस्थ्य जीवन का राज है।

कविता

अस्तित्व

✻ प्रेषकः अपूर्वा अमित जैन, झाँसी ✻

क्यों कुंठित है ये नारी, क्यों असुरक्षित है ये नारी
भले ही हम 19वीं सदी से
20वीं सदी की ओर बढ़ गये हो,
लेकिन समस्यायें वहीं हैं, रिश्ता वहीं है
लेकिन सोच नयी है
नारी परिवार की धुरी है, समाज की धुरी है
लेकिन कुंठाओं से लडने में क्यों अधूरी हैं
दिन प्रतिदिन नारी के प्रति समाज में बढ़ते अपराध
नारी उडकर भी सोने के पिंजरे में बंधी-बंधी सी है
कितना भी ऊँचा क्यों न उड ले
उसकी डोर आज भी जमीं में जमी-जमी सी है।

हास्य तरंग

1. पत्नी-पुलिस इंस्पेक्टर से हमें पकड़ने का क्या अधिकार है ? यह हमारा आपसी झगड़ा था। पति पत्नी में झगड़े होते रहते हैं। पुलिस इंस्पेक्टर यह बात ठीक है लेकिन झगड़े को आम चौराहे पर खड़े होकर क्यों निपटा रहे थे ? सारा ट्रेफिक जाम हो गया था। इस आपसी झगड़े को घर पर ही निपटा सकते थे।

अचानक पत्नी उचककर बोली तो क्या घर का सारा सामान व फर्निचर तोड़ डालते।

2. वकील ने अपने मुवाक्किल को निर्दोष साबित करने के लिये फाइल जज की ओर बढ़ाते हुये कहा कि इसमें पर्याप्त सबुत है जिससे साबित होता है कि मेरा मुवाक्किल निर्दोष है। जज ने फाइल के साथ पोटली खोली जिसमें दो हजार की एक गड्डी थी। जज ने कहा ठीक है लेकिन ऐसे कम से कम दस सबुत और पेश करो।

3. मेघा अपने 4 वर्षीय भतीजी के साथ अपनी सहेली की शादी में गई। भोजन के बाद वह अन्य सहेलियों से बात करने लगी, तभी उसे कि देर हो रही है तो भतीजी को पांच सो रूपये देते हुये कहा जाओ ये रूपये वे सामने बैठे अंकल को दे आओ। भतीजी रूपये लेकर अंकल के पास पहुंचकर बोली लीजिये अंकल दो थालियों के हमारे पैसे काट लीजिये।

4. दो ट्रकों की आमने सामने टक्कर हो गई जिसमें एक ट्रक में लिखा था सावन को आने दो व दूसरे ट्रक में लिखा था आया सवन झूमकर।

5. बीमार पत्नी ने वकील पति से पूंछा अगर मैं मर गई तो क्या आप दूसरी शादी करोगे ? पति- टालते हुये नहीं नहीं, पत्नी तुम्हें मेरी कसम बताओ ना। पति इसका जबाव इस समय देना बहुत कठिन है ? क्योंकि अगर हाँ कह दूं तो तुम नाराज हो जाओगी, यदि न कह दूं तो वह नाराज हो जावेगी।

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ मित्र रक्षा

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि-तीन खिलाड़ी हाथ पकड़कर छोटा मंडल बनायेंगे । चौथा खिलाड़ी (क) बीच में पांचवा (ख) बाहर रहेगा। ख को प्रयासपूर्वक क के सिर पर चपत मारनी है तीनो खिलाड़ी अपने मित्र को बचायेंगे। तीन चपत लग जाने के बाद किन्हीं अन्य दो को इसी प्रकार खेलने का अवसर मिलेगा।

✻ दुर्ग विजय

खिलाड़ियों की संख्या- 10-12

खेल वर्ग- मंडल या गोले का खेल

खेल विधि- 1. खिलाड़ी हाथ में हाथ डालकर एक छोटा मंडल गोला बनाये, 2. खिलाड़ी बाहर रहेगा। 3. शिक्षक सीटी बजायेगा। वह बाहार वाला खिलाड़ी जय हो, विजय हो कहता हुआ बलपूर्वक भीतर घुसेगा और फिर बाहर भी निकलेगा।

✻ खुली कबड्डी

खिलाड़ियों की संख्या-15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- इसमें अंकों की गुप्तता नहीं रहेगी। सब स्वयं सेवक एक टाँग पर अपने-अपने क्रम से कबड्डी भर कर जायेंगे। सबने मिलाकर कितनों को मारा या किस दल ने कम खिलाड़ियों के द्वारा ही सबको बाहर कर दिया। इस बात पर हार-जीत का निर्णय होगा।

बाल कहानी

मंत्र तंत्र का धोखा

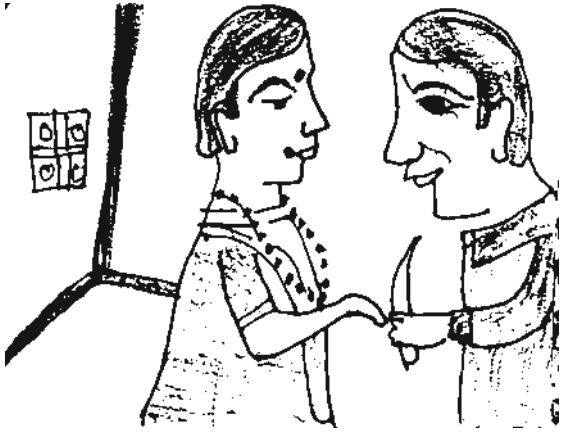

भोपाल के भेल की संगम कॉलोनी में श्यामलाल सरिया नाम के इंजीनियर का आवास था वैसे तो श्यामलाल डीजल सेड इटारसी में कार्यरत थे । श्यामलाल सीनियर इंजीनियर था उसके बेटे हितेशने बी.ई. का कोर्स कर रखा था परन्तु वह तीन साल भटके बाद भी कहीं नौकरी प्राप्त नहीं कर पा रहा था अनिल शिन्दे को किरायेदार के रूप में अपने बंगले में श्यामलाल ने रखा था। वैसे तो अनिल शिन्दे जूनागढ़ गुजरात का निवासी था और पूजा पाठ करने का काम भी करता था। हितेश से वह कहता था कि हम ऐसा पूजा पाठ करेंगे कि तुम्हारी नौकरी बहुत जल्दी लग जायेगी। अनिल की बातें पर हितेश बहुत दिन तक विश्वास करता रहा और हितेश से अनिल समय-समय पर पूजा पाठ के नाम पर पैस ऐंठता रहता था। कभी वह उधार भी हितेश से पैसा लेता था हितेश के पिताजी हमेशा समझाते थे कि परिचित आदमी से लेनदेन नहीं करना चाहिये क्येंकि जब हम उधारी मागेंगे तो वह झगड़े का कारण बनेगा पर हितेश अपने पिताजी को समझा देता था कि अनिल बहुत अच्छा आदमी है वह मेरा बहुत भला सोचता है और वह पूजा पाठ करके मेरी नौकरी लगवा देगा।

तब श्यामलाल कहता था नौकरी मेहनत और योग्यता से मिलती है मंत्र तंत्र से नहीं । हितेश ने अपने पिताजी की बात उस समय नहीं मानी और न सुनी। उसने लाख रूपये का कर्ज अनिल शिन्दे को दे दिया।

1 अप्रैल की रात हितेश ने अनिल से अपना पैसा मांगा तो हितेश और अनिल का झगड़ा हो गया और झगड़ा इतना बड़ा कि चाकूबा जी हो गई। हितनेश ने अनिल पर चाकू के खूब प्रहार कर दिये आखिरकार अनिल अस्पताल पहुँचते -पहुँचते अपना दम तोड़ बैठा पुलिस ने हितेश से जब पूछतांछ की तो पता लगा कि अनिल शिन्दे स्मैक का भी व्यसनी था। और मंत्र तंत्र की धोखाधड़ी करता था हितेश को लगा कि मैं अगर अपने पिताजी की बात मान लेता तो ये हत्या नही होती। और वह जेल में पछताता रहा।

संस्कार गीत

मिथक

तीन सौ सत्तर हट गई मैय्या
भारत अब अखंड हुआ
अनुशासन में वे सब आये
जिनका मन उद्देड हुआ

1.

सत्तर साल पुरानी थाती
हरदम सबको साली थी
आतंकवाद के कारण ही तो
कश्मीर धरा भी खाली थी
अलगाववाद की मादकता से
सबका मन स्वच्छ हुआ

2.

हैरान पड़ौसी हुआ हमारा
दुनिया में रोता फिरता
विश्व युद्ध की बात करे
वह धमकी के स्वर वह रात
परिवार की जिद भी झूठी
मिथ्या छल प्रपंच हुआ।

3.

अब विकास की बहें वयारे
सचमुच स्वर्ग कश्मीर
बन्दर धुड़की निष्फल होगी
नहीं कोई भी युद्ध बने
अब तक मिथक बना था
भारी मिथ्या सब प्रबंध हुआ।

बाल कविता

जैन धर्म की सब जय बोल

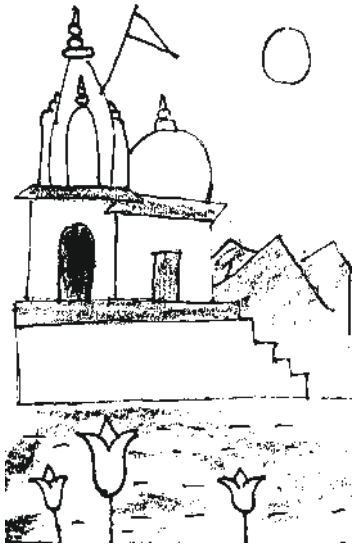

सत्य अहिंसा है जिसका बोल
जैन धर्म अपना अनमोल
इसका है इतिहास अनोखा
इसका दर्शन बिल्कुल चोखा
तर्क पूर्ण सब बात बताता
नहीं कल्पना में भरमाता
ईश्वर में पूरा विश्वास
पर ईश्वर से कुछ न आश
कर्म से बनता मनुज महान
नहीं जन्म से कोई महान
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण
इनसे होता मुक्ति वरण
जैन जिनवाणी है अमृत घोल
जैन धर्म की सब जय बोल

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

बांसा (दमोह)- आचार्य श्री उदारसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मुनिसुव्रतनाथ तीर्थ बांसा तारखेड़ा दमोह (म.प्र.) में 21 अप्रैल 2022 को क्षुल्लक बाहुबलि सागर जी एवं ब्र. कुसुम दीदी दलपतपुर को दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः एलक श्री उत्साहसागर जी, क्षुल्लिका उदितमति माताजी रखा गया।

समाधिमरण

सोनागिर- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर दतिया (म.प्र.) में मुनि श्री विश्वलोचनसागर जी का समाधिमरण 29 मार्च 2022 को रात्रि 10.11 मिनट पर आचार्य श्री विवेकसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में हुई।

अरहंतगिरि (तमिलनाडु)- आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सुभुषण सागर महाराज जी का समाधिमरण 17 अप्रैल 2022 को श्री अरहंतगिरि तीर्थ तमिलनाडु मेंहुआ।

चक्रमिर्जापुर (उ.प्र.)- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सदयसागर महाराज जी का समाधिमरण 21 अप्रैल 2022 को 12.30 मिनट पर चक्रमिर्जापुर (उ.प्र.) में हुआ।

पोन्नूरमलै (तमिलनाडु)- मुनि श्री स्वात्मनंदी महाराज जी का समाधिमरण आर्यिका गुरुनंदिनी माताजी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन तीर्थ पोन्नूरमलै (तमिलनाडु) में 23 अप्रैल 2022 को हुआ।

पंचकल्याणक

जसपुर (छत्तीसगढ़)- मुनि श्री सुयशसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 01 से 06 मई 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर जसपुर छत्तीसगढ़ में होगा।

जबलपुर-श्री दिगम्बर जैन मंदिर हनुमानताल जबलपुर में पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव निर्यापक मुनि श्री सुधासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 03 मई से 08 मई 2022 तक सम्पन्न होगा।

सोलह दिवसीय 1008 श्री शांतिनाथ महामंडल विधान, वेदी प्रतिष्ठा एवं चरण स्थापना

विजयनगर इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट इंदौर में सोलह दिवसीय श्री शांतिनाथ महामंडल विधान, वेदी प्रतिष्ठा एवं चरण स्थापना विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन

01 मई से 17 मई किया जा रहा है। **निर्देशक :** पं. रतनलाल जी, **प्रतिष्ठाचार्य :** ब्र. जिनेश मलैया, **महायज्ञनायकः** नरेन्द्र कमलेश जैन जयपुर, **सौधर्मन्द्रः** हर्ष तृप्ति जैन, **कुबेरइन्द्रः** गौरव शचि जैन, **यज्ञनायकः** विजयश्री मनीष जैन, विमल मीना गंगवाल, **ध्वजारोहणकर्ताः** भरत रितु जैन, आर.के.मैना जैन, **ईशानेन्द्रः** मनोज-सुनीता जैन, **सनतकुमारेन्द्रः** संजय निधि, बासौदा, **माहेन्द्रः** सुरेश अनिता जैन (बैंक वाले), **ब्रह्मेन्द्रः** नीरज गरिमा जैन, ब्रह्म **प्रत्येन्द्रः** विनोद मंजु जैन पथरिया, **लांतवेन्द्रः** अभिषेक पूनम जैन गढ़ाकोटा, **मुख्य कलश स्थापित कर्त्ताः** अरविन्द रश्मि जैन, राजेन्द्र जैन जैसीनगर वाले, सुधीर बांझल, राजेन्द्र कंठाली दिल्ली, अभय सपना जैन, सुरजमल पद्मा जैन, श्रीमति सुमित्रा रांवका, श्रीमति सारिका संजय जैन, श्रीमति आराधना कासलीवाल, शोभा सिंघई, **लान्तव प्रत्येन्द्रः** राजकुमार समता जैन, **शुकेन्द्रः** जितेन्द्र संगीता जैन, **शुक्रप्रत्येन्द्रः** नवनीत सारिका जबलपुर, **शतारेन्द्रः** विवेक आकांक्षा जैन, **शतार प्रत्येन्द्रः** एम.सी. कमलेश चौधरी, **आनतेन्द्रः** नरेन्द्र लक्ष्मी जैन, **प्राणतेन्द्रः** राजेश रिद्धेश जैन, **आरनेन्द्रः** अखलेश किरण मोदी, **अच्युतेन्द्रः** प्रणय आरती पाटोदी, **मुख्य कलश स्थापित कर्ताः** वीरेन्द्र सुनीता जैन, डी.के.माला जैन (डी.एस.पी), के.सी सरोज जैन छतरपुर, **अखंड दीप स्थापित कर्ताः** अनिल मीना पांडया, प्रियदर्शी कल्पना जैन, आशीष निधि जैन, **कलश स्थापित एंव विधानकर्ता :** मनोज कल्पना बाकलीवाल, धर्मेन्द्र नेहा जैन, राजीव कविता जैन, आजाद मणि मोदी, धर्मेन्द्र शिखा जैन (सी.ए), मनोज ममता जैन (बबीना), भरत रितु जैन, हर्ष तृप्ति जैन (कॉटन), गौरव शचि जैन, अमित आशी खुरई वाले, **मुख्य विधानकर्ता एवं पात्रः** एम. सी प्रभा जैन पेराडाइज, डॉ. प्रेमचंद कमला कुमारी जैन परिवार,अक्षय लीना कासलीवाल,मनोज सुनीता जैन, प्रदीप प्रगति जैन टड़ा, पीयूष दीपिका जैन, अशोक जैन (सी.ए. जयपुर), अजित पाटनी, स्वदेशीलाल जैन, अवधेश अनिता जैन, प्रवीण अभिलाषा जैन, अनिल प्रीति जैन, इंजी अजित मीना जैन, अनुराग रूचि जैन सागर वाले, निलेश नीलु जैन, कमलेश सीमा जैन, प्रफुल्ल जैन, डॉ. संदीप अनिता जैन, प्रतीक खुशबु जैन, देवेन्द्र सुमन जैन, सुरेन्द्र प्रभा जैन, सतीश सुलोचना जैन, सुभाष ज्योति गोधा, दीपक जैन, शैलेन्द्र अशिता (एम.पी.ई.बी पोलोग्राउंड) आदि ने सौभाग्य प्राप्त किया।

वर्ग पहेली 271

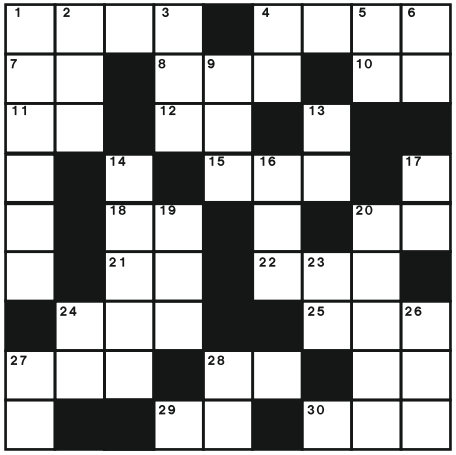

बाये से दाये

1. श्रुतज्ञान का पहला अंग जिसका आचरण से संबंध है। -4
4. श्रुतज्ञान का वह भेद जिसके चौदह प्रकार होते हों -4
7. लादने का भाव, ढ़ोने का भाव -2
8. काम का पर्यायवाची, श्रीकृष्ण का नाम -3
10. यज्ञ, पूजन का भाव -2
11. परंतु या पंख -2
12. आद्र, गीला -2
15. आंख नेत्र -3
18. दो इन्द्रिय से पचेन्द्रिय जीव -2
20. बुद्धि ज्ञान -2
21. सृजन, रचना -2
22. सोना, स्वर्ण -3
24. ठण्डे का अंश, ठंडक -3
25. हृदय, मन -3
27. पूष्पधूलि, पुष्परज -3
28. डायमंड, वज्र -2
29. वाहन, परिवहन साधन -2
30. संयोजक जोड़ने वाला -3

ऊपर से नीचे

1. देवसेन आचार्य द्वारा रचित नय प्रधान एक ग्रंथ-6
2. उत्तरी, या क्षुल्लक का ओढ़ने वाला वस्त्र -2
3. जाना या जाने का भाव -3
4. पुण्य का पर्यायवाची शब्द -2
5. गत, बीते हुये का पर्यायवाची -2
6. त्याग, छोड़ने का भाव -2
9. दबाने का भाव, कुचलना, रौंदना -3
13. मनुष्य, आदमी -2
14. द्वादशांगश्रुत का दूसरा अंग -5
15. जोड़ा, एक शब्द अलंकार -1
17. जीव की अवस्था विशेष, गमन का भाव -2
19. सतियों का स्वामी -3
20. कामदेव -5
23. आद्र, गीला -2
24 चासनी, शक्कर का तरल -2
26. मनोविनोद, हास परिहास -3
27. ओहदा, पग, चरण -2
28. कम, न्यून -2

वर्ग पहेली 270 का हल

1 स	वा	र्थ		2 र	3 त		4 गं	5 तं
न्म			6 पं	च	क	ल	या	ण
7 ति	8 मा	9 ही		10 ना	ली		11 ध	ना
	12 ध	न				13 ह	र	
14 कुं			15 ह	16 र	17 म	द		17ए म
18 ड	19 म	20 रू		ग		21 रा	धि	का
22 ल	ख	न	23 ऊ		24 स	ही		न
25 पु	म		26 ख	27 जा	ना		28 वी	
29 र	ल	ना		30 ना	थ		31 र	ति

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

चलो चलो... ॥श्री पार्श्वनाथाय नमः॥ चलो चलो...

श्री दि. जैन पंचबालयति मन्दिर, ए.बी. रोड, विजयनगर, इन्दौर

स्थापना चरण भूमि शिलान्यास 15 मई 22, रविवार प्रातः

कुम्भोत्सव शिखर प्रतिष्ठा महोत्सव 17 मई 22, मंगलवार प्रातः

सोलह दिवसीय 1008 श्री शान्तिनाथ महामंडल विधान

वेदी प्रतिष्ठा एवं चरण स्थापना

विश्वशांति महायज्ञ

दिनांक 01 मई से 17 मई 2022

मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान

शुभाशीषः संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

अखण्ड दीप स्थापनाकर्ता

अमित आजाद जैन
सोती वाले (बंगला)
मुकेश पाटोदी
(इन्दौर)
अभिषेक महावीर

निर्देशक-प्रतिष्ठाचार्य

पं. शकलतजी इं. जितेश पलेजा

साधर्मी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र ! इन्दौर नगर के प्रशस्त ईशान कोण में स्थित 108 फुट उत्तुंग शिखर वाले श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में **वेदी प्रतिष्ठा, चरण स्थापना, सोलह दिवसीय श्री 1008 शांतिनाथ महामंडल विधान एवं (सवा लाख मंत्र का जाप अनुष्ठान) विश्वशांति महायज्ञ** का आयोजन 01 मई से 17 मई किया जा रहा है। (विधान में प्रतिदिन श्री फल चढ़ाये जायेंगे) अतः आप भी इस अनुष्ठान में अपनी क्षमता से कम एक आहुती देने अवश्य पधारें

कलश स्थापित एवं विधानकर्ता

मुख्य विधानकर्ता एवं पात्र

कार्यक्रम

01 मई 2022 रविवार
प्रातः 6 बजे से नित्यनैमित्तिक पूजन, मध्याह्नोत्तर, इन्द्र अभिषेक, मण्डप प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण आदि
प्रतिदिन प्रातः 6 बजे नित्य अभिषेक पूजन एवं विधान
शाम : 7.30 बजे आरती,
15 मई 2022, रविवार
वेदी प्रतिष्ठा एवं चरण स्थापना
17 मई 2022, मंगलवार
नित्य अभिषेक पूजन, विश्वशांति महायज्ञ
सभी विधानकर्ता को ध्यान में देकर आमंत्रण है

विधानकर्ता परिवार - नमता-भागचन्दजी, पंकज-अशोककुमारजी, डॉ. के. भागचन्द जैन (डी.एल.पी.), पंकज-राजीव जी सेठ, विनय-आर.डी. जैन, नरेशचन्द-अनिलकुमार जैन (देवगढ़वाले), अरुण-विजयजी जैन, अनिल-नैना सांखला मुकेश सुनिता नागोरी, सचिन-कुन्दनजी सुगन्धी बाले, संतोषी-आशाबाई बाबूलाल बाले, शशिकांत-संतोषजी बाबूलाल, शैलेन्द्र-शोभाजी बाबूलाल, शैलेन्द्र-शोभाजी बाबूलाल, शैलेन्द्र-शोभाजी बाबूलाल, अमित-आजाद जैन, अमित-सुनीताजी सोनाट, अमित-सुनीताजी सोनाट, अमित-सुनीताजी सोनाट, दिनेश-सुनीताजी सोनाट, दिनेश-सुनीताजी सोनाट, दिनेश